

# गाउँ शिक्षा योजना

२०८३/२०८४-२०९३/२०९४



प्रकाशक

पञ्चालझरना गाउँपालिका

गाउँ कार्यपालिकाको कार्यालय

पडेक्षा, कालीकोट

## हाम्रो भनाइ

शिक्षा मानव विकासको मूल आधार हो। समावेशी, गुणस्तरीय र जीवनोपयोगी शिक्षा बिना दिगो सामाजिक तथा आर्थिक विकासको परिकल्पना गर्न सकिँदैन। नेपालको संविधानले शिक्षालाई नागरिकको मौलिक हकका रूपमा सुनिश्चित गर्दै आधारभूत तथा माध्यमिक शिक्षाको व्यवस्थापन र विकासको जिम्मेवारी स्थानीय तहलाई प्रदान गरेको छ। यही संवैधानिक व्यवस्था तथा स्थानीय आवश्यकतालाई ध्यानमा राखी हाम्रो गाउँपालिकाले यो गाउँ शिक्षा योजना तर्जुमा गरेको हो।

गाउँ क्षेत्रमा शैक्षिक पहुँच विस्तार हुँदै गएको भए तापनि सिकाइ उपलब्धि सुधार, शैक्षिक समानता सुनिश्चितता, शिक्षण—सिकाइको गुणस्तर अभिवृद्धि, सूचना प्रविधिको प्रभावकारी प्रयोग, शिक्षकको पेशागत विकास तथा विद्यालय व्यवस्थापनका क्षेत्रमा अझै सुधार आवश्यक देखिन्छ। भौगोलिक अवस्था, सामाजिक—आर्थिक असमानता, लैङ्गिक विभेद तथा अपाङ्गतासँग सम्बन्धित चुनौतीका कारण सबै बालबालिकाले समान स्तरको गुणस्तरीय शिक्षा प्राप्त गर्ने अवसर अझै पूर्ण रूपमा सुनिश्चित हुन सकेको छैन।

यस गाउँ शिक्षा योजनाले स्थानीय आवश्यकता, स्रोत—साधन तथा सम्भावनालाई आधार मानी शिक्षा क्षेत्रको समग्र सुधारका लागि स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान गरेको छ। योजना तयार गर्दा विद्यालय शिक्षा क्षेत्र योजना, दिगो विकासका लक्ष्यहरूसँग समन्वय कायम गरिएको छ, जसले हाम्रो शिक्षा प्रणालीलाई अझ व्यवस्थित, समावेशी र परिणाममुखी बनाउन सहयोग गर्ने अपेक्षा गरिएको छ।

हाम्रो विश्वास छ शिक्षा केवल विद्यालयको सीमाभित्र सीमित रहने प्रक्रिया होइन, यो जीवनभरि चलिरहने सिकाइको आधार हो। बालमैत्री, समावेशी, सुरक्षित तथा प्रविधिमैत्री सिकाइ वातावरण निर्माण, शिक्षकको क्षमता अभिवृद्धि, अभिभावक तथा समुदायको सक्रिय सहभागिता र उत्तरदायी शासकीय अभ्यासमार्फत शिक्षा क्षेत्रमा दिगो सुधार सम्भव छ।

यस योजनाको सफल कार्यान्वयनका लागि निर्वाचित जनप्रतिनिधि, शिक्षक, अभिभावक, समुदाय, निजी क्षेत्र तथा विकास साझेदार सबै पक्षको सक्रिय सहकार्य र साझा प्रतिबद्धता आवश्यक छ। सामूहिक प्रयास र प्रभावकारी कार्यान्वयनमार्फत हाम्रो गाउँपालिकालाई सिकाइमैत्री, समावेशी तथा गुणस्तरीय शिक्षाको नमुना स्थानीय तहका रूपमा विकास गर्ने हाम्रो दृढ संकल्प व्यक्त गर्दछु।

गाउँपालिका अध्यक्ष



# विषय सूची

## Contents

|  |    |
|--|----|
| योजनाको सारांश.....                                  | ड  |
| (ख) शिक्षा योजना निर्माणको आवश्यकता र औचित्य.....    | च  |
| (ग) योजना निर्माण प्रक्रिया.....                     | छ  |
| (घ) योजनाको दस्तावेजको स्वरूप.....                   | ज  |
| परिच्छेद १.....                                      | १  |
| १.१ भौगोलिक अवस्थिति.....                            | १  |
| १.२ जनसाङ्ख्यिक संरचना.....                          | १  |
| जनसाङ्ख्यिक तथा भौगोलिक संरचना (जनगणना २०७८).....    | १  |
| १.३ सामाजिक तथा सांस्कृतिक अवस्था.....               | २  |
| १.३.१ जातीय तथा धार्मिक संरचना.....                  | २  |
| १.३.२ प्रमुख चाडपर्व तथा सांस्कृतिक मेलाहरू.....     | ३  |
| १.३.३ धार्मिक तथा पर्यटकीय स्थलहरू.....              | ३  |
| १.३.४ सामाजिक जीवन र चुनौतीहरू.....                  | ३  |
| १.४ आर्थिक अवस्था.....                               | ३  |
| १.५ शैक्षिक अवस्था.....                              | ४  |
| २. सबल पक्षहरू.....                                  | ५  |
| ३. शिक्षा क्षेत्रका समस्याहरू.....                   | ६  |
| ४. अवसरहरू.....                                      | ८  |
| ५. चुनौतीहरू.....                                    | ९  |
| परिच्छेद २.....                                      | १० |
| दूरदृष्टि, उद्देश्य, रणनीति तथा लक्ष्य निर्धारण..... | १० |
| २.१ दूरदृष्टि.....                                   | १० |
| २.२ लक्ष्य.....                                      | १० |
| २.३ उद्देश्य.....                                    | १० |
| २.४ रणनीतिहरू.....                                   | १० |
| २.६ अपेक्षित उपलब्धि.....                            | १३ |
| २.७ मुख्य कार्यसम्पादन सूचक र लक्ष्य निर्धारण.....   | १३ |
| परिच्छेद ३.....                                      | १७ |
| विद्यालय शिक्षा क्षेत्रका मुख्य उपक्षेत्र.....       | १७ |
| ३.१ प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षा.....                | १७ |
| ३.१.१ परिचय.....                                     | १७ |
| ३.२.१ वर्तमान अवस्था.....                            | १७ |
| तालिका १.....  | १८ |
| प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षासँग सम्बन्धित विवरण..... | १८ |

|   |    |
|---|----|
| ३.१.३ उद्देश्यः.....  | १९ |
| ३.१.४ रणनीतिहरू.....  | १९ |
| ३.१.५ उपलब्धि, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य निर्धारण.....       | २० |
| (ख) प्रमुख क्रियाकलापहरू तथा लक्ष्य निर्धारण.....             | २२ |
| ३.२ आधारभूत शिक्षा.....                                       | २३ |
| ३.२.१ परिचय.....  | २३ |
| ३.२.२ वर्तमान अवस्था.....                                     | २३ |
| आधारभूत शिक्षासँग सम्बन्धित विवरण.....                        | २३ |
| ३.२.३ उद्देश्य.....   | २४ |
| ३.२.४ रणनीतिहरू.....  | २४ |
| ३.२.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य.....         | २५ |
| (ख) प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य.....                           | २६ |
| ३.३ माध्यमिक शिक्षा.....                                      | २७ |
| ३.३.१ परिचय.....  | २७ |
| ३.३.२ वर्तमान अवस्था.....                                     | २७ |
| ३.३.३ उद्देश्य.....   | २८ |
| ३.३.४ रणनीतिहरू.....  | २८ |
| ३.३.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य.....         | २९ |
| (ख) प्रमुख क्रियाकलापहरू तथा लक्ष्य निर्धारण.....             | ३० |
| ३.४ अनौपचारिक शिक्षा तथा आजिवन सिकाई.....                     | ३१ |
| ३.४.१ परिचय.....  | ३१ |
| ३.४.२ वर्तमान अवस्था.....                                     | ३१ |
| ३.४.३ उद्देश्य.....   | ३२ |
| ३.४.४ रणनीतिहरू.....  | ३२ |
| ३.४.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप तथा लक्ष्य.....       | ३२ |
| परिच्छेद ४.....   | ३४ |
| अन्तरसम्बन्धित विषय क्षेत्रहरू.....                           | ३४ |
| ४.१ पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, सिकाइ सामग्री तथा मूल्याङ्कन..... | ३४ |
| ४.१.१ परिचय.....  | ३४ |
| ४.१.२ वर्तमान अवस्था.....                                     | ३४ |
| ४.१.३ उद्देश्य.....   | ३५ |
| ४.१.४ रणनीतिहरू.....  | ३५ |
| ४.१.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य.....         | ३६ |
| ४.२ शिक्षक व्यवस्थापन र विकास.....                            | ३८ |
| ४.२.१ परिचय.....  | ३८ |
| ४.२.२ वर्तमान अवस्था.....                                     | ३८ |
| ४.२.३ उद्देश्य.....   | ३८ |
| ४.२.४ रणनीतिहरू.....  | ३९ |
| ४.२.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य.....         | ३९ |
| ४.३ शैक्षिक समानता र समावेशीकरण.....                          | ४१ |

|  |    |
|--|----|
| ४.३.१ परिचय.....   | ४१ |
| ४.३.२ वर्तमान अवस्था.....                                      | ४१ |
| ४.३.३ उद्देश्य.....  | ४२ |
| ४.३.४ रणनीतिहरू.....   | ४२ |
| ४.३.५ उपलब्धी, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य.....          | ४२ |
| ४.४ विद्यालय दिवाखाजा, स्वास्थ्य, पोषण र सरसफाई कार्यक्रम..... | ४४ |
| ४.४.१ परिचय.....   | ४४ |
| ४.४.२ वर्तमान अवस्था.....                                      | ४४ |
| ४.४.३ उद्देश्यहरू.....   | ४४ |
| ४.४.४ रणनीतिहरू.....   | ४५ |
| ४.४.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप तथा लक्ष्य.....        | ४५ |
| ४.५ विद्यालय सुरक्षा, विपत् तथा उत्थानशीलता.....               | ४७ |
| ४.५.१ परिचय.....   | ४७ |
| ४.५.२ वर्तमान अवस्था.....                                      | ४७ |
| ४.५.३ उद्देश्य.....  | ४७ |
| ४.५.४ रणनीति.....  | ४७ |
| ४.५.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य.....          | ४८ |
| ४.६ विद्यालय भौतिक पूर्वाधार विकास.....                        | ४९ |
| ४.६.१ परिचय.....   | ४९ |
| ४.६.२ वर्तमान अवस्था.....                                      | ४९ |
| ४.६.३ उद्देश्य.....  | ४९ |
| ४.६.४ रणनीतिहरू.....   | ५० |
| ४.६.५ उपलब्धि, नतिजा तथा प्रमुख क्रियाकलापहरू र लक्ष्य.....    | ५० |
| ४.७ विद्यालय शिक्षामा सूचना तथा सञ्चार प्रविधि.....            | ५२ |
| ४.७.१ परिचय.....   | ५२ |
| ४.७.२ वर्तमान अवस्था.....                                      | ५२ |
| ४.७.३ उद्देश्य.....  | ५३ |
| ४.७.४ रणनीतिहरू.....   | ५३ |
| ४.७.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य.....          | ५४ |
| ख) प्रमुख क्रियाकलापहरू तथा लक्ष्य.....                        | ५४ |
| परिच्छेद ५ : अन्य उपक्षेत्र.....                               | ५५ |
| ५.१ सार्वजनिक पुस्तकालयको प्रबन्ध र व्यवस्थापन.....            | ५५ |
| ५.१.१ वर्तमान अवस्था.....                                      | ५६ |
| ५.१.२ उद्देश्य.....  | ५७ |
| ५.१.३ रणनीति.....  | ५७ |
| ५.१.४ प्रमुख उपलब्धि र नतिजा.....                              | ५७ |
| ५.१.५ प्रमुख क्रियाकलाप र परिमाणात्मक लक्ष्य.....              | ५८ |
| परिच्छेद ६.....  | ५९ |
| ६.१ सुशासन तथा व्यवस्थापन.....                                 | ५९ |

|  |    |
|--|----|
| ६.१.१ परिचय.....   | ५१ |
| ६.१.२ शिक्षाको व्यवस्थापन तथा सस्थागत क्षमता विकास.....                                    | ६० |
| चुनौती र अवसरहरू.....  | ६४ |
| ६.१.३ लक्ष्य.....  | ६५ |
| ६.१.४ उद्देश्य.....  | ६५ |
| ६.१.५ रणनीतिहरू.....   | ६५ |
| ६.१.६ उपलब्धि तथा प्रमुख नतिजा.....  | ६६ |
| उपलब्धि:.....  | ६६ |
| ६.२.१ वर्तमान अवस्था.....  | ६८ |
| ६.२.२ उद्देश्य.....  | ७१ |
| ६.२.३ रणनीतिहरू.....   | ७१ |
| उपलब्धि.....   | ७२ |
| नतिजा तथा परिमाणात्मक लक्ष्य.....  | ७२ |
| ६.२.५ प्रमुख क्रियाकलाप र परिमाणत्मक लक्ष्य.....   | ७५ |
| ७.३ उद्देश्य.....  | ८२ |
| ७.४ रणनीतिहरू.....   | ८२ |
| ७.६ योजनाको वार्षिक बजेट तर्जमा प्रक्रिया.....   | ८५ |
| ७.७ योजना कार्यान्वयनको लागि वार्षिक रणनीति कार्यान्वयन योजना निर्माण तथा कार्यान्वयन..... | ८५ |
| <b>परिच्छेद ८ :</b> .....  | ८६ |
| ८.१ अनुगमन तथा मूल्याङ्कन.....   | ८६ |
| ८.१.१ परिचय.....   | ८६ |
| ८.१.२ वर्तमान अवस्था.....  | ८७ |
| ८.२ उद्देश्य.....  | ८९ |
| ८.३ रणनीतिहरू.....   | ९० |
| ८.४ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य.....  | ९१ |
| उपलब्धि तथा नतिजा.....   | ९१ |
| ८.५ प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य:.....   | ९२ |
| सन्दर्भ सामग्रीहरू.....  | ९५ |
| अनुसूचीहरू.....  | ९४ |

## योजनाको सारांश

गाउँ शिक्षा योजना स्थानीय तहभित्रको शिक्षा प्रणालीलाई समावेशी, गुणस्तरीय र दिगो बनाउने उद्देश्यले तयार गरिएको समग्र रणनीतिक दस्तावेज हो। यस योजनाले प्रारम्भिक बालविकासदेखि माध्यमिक तथा वैकल्पिक/आजीवन शिक्षासम्मका कार्यक्रमलाई एकीकृत ढङ्गले समेटेको छ। योजनाको प्रमुख उद्देश्यहरूमा शिक्षामा पहुँच र समता विस्तार, सिकाइ उपलब्धि सुधार, शिक्षक तथा शैक्षिक जनशक्तिको क्षमता अभिवृद्धि, विद्यालय शासन र व्यवस्थापन सुदृढीकरण, प्रविधिको प्रभावकारी उपयोग, तथा सुरक्षित र बालमैत्री वातावरण निर्माण समावेश छन्।

योजना तयार गर्दा तथ्याङ्क विश्लेषण, विद्यालय अवस्था अध्ययन, सरोकारवालासँग परामर्श तथा स्थानीय आवश्यकता पहिचानलाई आधार बनाइएको छ। यसले विद्यालय भर्ना र निरन्तरता, ड्रपआउट न्यूनीकरण, लक्षित समूह (बालिका, दलित, अपाङ्गता भएका बालबालिका, सीमान्तकृत समुदाय) का लागि विशेष कार्यक्रम, तथा औपचारिक/वैकल्पिक शिक्षालाई प्राथमिकता दिएको छ।

कार्यान्वयन रणनीतिमा स्पष्ट लक्ष्य, परिणाम सूचक, वार्षिक कार्ययोजना, जिम्मेवारी बाँडफाँड र अनुगमन-मूल्याङ्कन व्यवस्था समावेश गरिएको छ। स्थानीय स्रोत परिचालन, अन्तर-तह समन्वय, समुदाय सहभागिता र सार्वजनिक निजी साझेदारीलाई जोड दिइएको छ।

समग्रमा, यो शिक्षा योजना स्थानीय तहको शैक्षिक रूपान्तरणका लागि मार्गदर्शक दस्तावेज हो। योजनाको प्रभावकारी कार्यान्वयनले सबै बालबालिकालाई समान अवसर, गुणस्तरीय सिकाइ र जीवनोपयोगी सीप प्रदान गर्दै सामाजिक न्याय र दिगो विकासमा योगदान पुऱ्याउने अपेक्षा गरिएको छ।

## (क) विषय प्रवेश

संविधानतः संघीय शासन प्रणाली कार्यान्वयनसँगै शिक्षा क्षेत्रको योजना, व्यवस्थापन तथा कार्यान्वयनको प्रमुख जिम्मेवारी स्थानीय तहमा निहित भएको छ। नेपालको संविधान २०७२, स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन २०७४ तथा विद्यालय शिक्षा सम्बन्धी विद्यमान कानुनी तथा नीतिगत व्यवस्थाले स्थानीय तहलाई आफ्ना भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक सन्दर्भअनुसार शिक्षा नीति तथा योजना निर्माण गर्ने स्पष्ट अधिकार र दायित्व प्रदान गरेको छ। यस सन्दर्भमा स्थानीय शिक्षा योजना स्थानीय तहको शिक्षा विकासको मार्गदर्शक दस्तावेजका रूपमा अत्यन्तै महत्वपूर्ण मानिन्छ।

स्थानीय शिक्षा योजना भनेको स्थानीय तहभित्रका बालबालिका, युवा तथा वयस्कहरूको समावेशी, गुणस्तरीय, जीवनोपयोगी र समान पहुँच सुनिश्चित गर्ने उद्देश्यले तयार गरिने दीर्घकालीन तथा मध्यकालीन योजना हो। यस योजनाले प्रारम्भिक बाल विकासदेखि माध्यमिक तह, प्राविधिक तथा व्यवसायिक शिक्षा, अनौपचारिक तथा आजीवन सिकाइसम्मका सबै आयामलाई समेट्दै स्थानीय आवश्यकतामा आधारित लक्ष्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा बजेटको स्पष्ट खाका प्रस्तुत गर्दछ। साथै, यसले संघीय तथा प्रदेशस्तरीय शिक्षा नीति, विद्यालय शिक्षा क्षेत्र योजना (SESP) तथा दिगो विकास लक्ष्य (SDG-४) सँग स्थानीय शिक्षा विकासलाई समन्वयात्मक रूपमा अघि बढाउन सहयोग पुऱ्याउँछ।

स्थानीय शिक्षा योजना निर्माण प्रक्रिया तथ्यमा आधारित, सहभागीमूलक र समावेशी हुनुपर्दछ। यस क्रममा विद्यालय, शिक्षक, अभिभावक, विद्यार्थी, समुदाय, सरोकारवाला निकाय तथा विषयगत विज्ञहरूको सार्थक सहभागिता सुनिश्चित गर्नु आवश्यक हुन्छ। यसले शिक्षा क्षेत्रमा विद्यमान असमानता, पहुँचको समस्या, गुणस्तरका चुनौती, लैङ्गिक तथा सामाजिक समावेशीकरणका सवाल, अपाङ्गता मैत्री पूर्वाधार, डिजिटल शिक्षा, जलवायु परिवर्तन तथा विपद् प्रतिरोधी शिक्षा प्रणाली जस्ता समसामयिक विषयहरूलाई सम्बोधन गर्न सहयोग गर्दछ।

यसरी तयार गरिने स्थानीय शिक्षा योजनाले स्थानीय तहको शिक्षा क्षेत्रमा लगानीको प्राथमिकता निर्धारण गर्ने, स्रोत साधनको प्रभावकारी परिचालन गर्ने तथा नतिजामूलक कार्यान्वयनलाई सुनिश्चित गर्ने आधार प्रदान गर्दछ। दीर्घकालीन दृष्टि, स्पष्ट लक्ष्य र मापनयोग्य सूचकहरूसहितको स्थानीय शिक्षा योजना मार्फत स्थानीय तहले आफ्ना नागरिकका लागि समावेशी, गुणस्तरीय र दिगो शिक्षा प्रणाली निर्माणतर्फ ठोस कदम चाल्न सक्नेछ।

## (ख) शिक्षा योजना निर्माणको आवश्यकता र औचित्य

शिक्षा सामाजिक, आर्थिक तथा मानवीय विकासको आधारस्तम्भ हो। गुणस्तरीय, समावेशी र जीवनोपयोगी शिक्षा बिना दिगो विकास सम्भव हुँदैन। संघीय शासन प्रणाली कार्यान्वयनसँगै शिक्षा क्षेत्रको योजना, व्यवस्थापन तथा सेवा प्रवाहको महत्वपूर्ण जिम्मेवारी स्थानीय तहमा हस्तान्तरण भएको सन्दर्भमा शिक्षा योजना निर्माणको आवश्यकता र औचित्य झनै बढेको छ। स्पष्ट दृष्टि, लक्ष्य र रणनीतिबिना सञ्चालन गरिने शैक्षिक कार्यक्रमहरू अपेक्षित नतिजा दिन नसक्ने हुँदा व्यवस्थित शिक्षा योजना अपरिहार्य भएको छ।

शिक्षा योजना निर्माणको प्रमुख आवश्यकता स्थानीय सन्दर्भ, आवश्यकता र प्राथमिकताका आधारमा शिक्षा विकासलाई अगाडि बढाउनु हो । देशभर शिक्षा क्षेत्रमा भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विविधता विद्यमान छ । एकै किसिमको नीति र कार्यक्रमले सबै स्थानका समस्या समाधान गर्न नसक्ने भएकाले स्थानीय तथ्याङ्क, विद्यालयको अवस्था, सिकाइ उपलब्धि, पहुँच र निरन्तरताको अवस्था, शिक्षक व्यवस्थापन, पूर्वाधार तथा स्रोत साधनको यथार्थ मूल्याङ्कनका आधारमा शिक्षा योजना तयार गर्नु आवश्यक हुन्छ । यसले स्थानीय समस्यालाई पहिचान गरी समाधानमुखी हस्तक्षेप सुनिश्चित गर्दछ ।

शिक्षा योजना निर्माणको अर्को महत्वपूर्ण औचित्य सीमित स्रोत साधनको प्रभावकारी र पारदर्शी उपयोग हो । शिक्षा क्षेत्रमा लगानी बढ्दै गए तापनि स्रोतको सही प्राथमिकता निर्धारण हुन नसक्दा अपेक्षित उपलब्धि हासिल हुन सकेको छैन । शिक्षा योजनाले स्पष्ट प्राथमिकता, कार्यक्रम र बजेटबीचको अन्तरसम्बन्ध स्थापित गरी स्रोतको दोहोरोपन घटाउने र नतिजामूलक लगानी सुनिश्चित गर्ने आधार प्रदान गर्दछ । साथै, यसले विकास साझेदार तथा अन्य सरोकारवालासँग समन्वय र सहकार्य गर्न सहज बनाउँछ ।

समावेशीता, समानता र सामाजिक न्याय प्रवर्द्धन गर्नु पनि शिक्षा योजना निर्माणको प्रमुख औचित्य हो । बालबालिकाको पहुँचबाहिर रहने अवस्था, लैङ्गिक विभेद, जातीय तथा सामाजिक बहिष्करण, अपाङ्गता, गरिबी र भौगोलिक कठिनाइका कारण सिर्जित असमानतालाई सम्बोधन गर्न लक्षित रणनीति आवश्यक हुन्छ । शिक्षा योजनाले लैङ्गिक समानता, अपाङ्गता र समाजिक समावेशीकरण (GEDSI) उत्तरदायी कार्यक्रमहरू समावेश गरी पछाडि परेका तथा जोखिममा रहेका समूहको शिक्षामा पहुँच, सहभागिता र सिकाइ उपलब्धि सुधार गर्न सहयोग पुऱ्याउँछ । त्यसैगरी, शिक्षा योजनाले शिक्षा प्रणालीको गुणस्तर सुधार र दिगोपन सुनिश्चित गर्दछ । शिक्षकको पेशागत विकास, पाठ्यक्रम कार्यान्वयन, शिक्षण-सिकाइ प्रक्रिया, परीक्षा तथा मूल्याङ्कन प्रणाली, डिजिटल शिक्षा र नवप्रवर्तनलाई योजनाबद्ध रूपमा अघि बढाउन शिक्षा योजना आवश्यक हुन्छ । साथै जलवायु परिवर्तन, विपद् जोखिम न्यूनीकरण र आपत्कालीन अवस्थामै पनि सिकाइ निरन्तरता कायम राख्ने शिक्षा प्रणाली निर्माणका लागि दीर्घकालीन सोच र तयारी शिक्षा योजनामार्फत मात्र सम्भव हुन्छ ।

यसरी, शिक्षा योजना निर्माण स्थानीयदेखि राष्ट्रिय लक्ष्यसम्मको सेतुका रूपमा कार्य गर्दछ । यसले विद्यालय शिक्षा क्षेत्र योजना (SESP), दिगो विकास लक्ष्य (SDG-४) तथा राष्ट्रिय शिक्षा नीतिसँग स्थानीय शिक्षा विकासलाई समन्वय गर्दै उत्तरदायी, प्रभावकारी र परिणाममुखी शिक्षा प्रणाली निर्माण गर्न स्पष्ट दिशा प्रदान गर्दछ । त्यसैले, गुणस्तरीय, समावेशी र दिगो शिक्षा सुनिश्चित गर्न शिक्षा योजना निर्माण आवश्यक मात्र नभई अत्यन्त औचित्यपूर्ण कार्य हो ।

### (ग) योजना निर्माण प्रक्रिया

शिक्षा योजना निर्माण गर्दाका देहाय बमोजिमका सामग्रीहरूलाई आधार लिएर योजना निर्माण गरिएको थियो ।

क) नेपालको संविधान

ख) सोह्रौँ आवधिक योजना

- ग) स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन २०७४
- घ) सङ्घ, प्रदेश र स्थानीय तह (समन्वय तथा अन्तरसम्बन्ध) ऐन २०७७
- ङ) राष्ट्रिय/प्रादेशिक/स्थानीय तहको दीर्घकालीन सोच
- च) अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षासम्बन्धी ऐन, २०७५ लगायत विद्यमान विद्यालय शिक्षासम्बन्धी ऐन, नियमावली
- छ) विद्यालय शिक्षा क्षेत्र योजना
- ज) राष्ट्रिय शिक्षा नीति २०७६,
- झ) दिगो विकास लक्ष्य
- ञ) स्थानीय तहको योजना तर्जुमा दिग्दर्शन २०७८
- ट) स्थानीय तहको मध्यकालिन खर्च संरचना
- ठ) राष्ट्रिय जनगणनाको प्रतिवेदन २०७८
- ड) राजनीतिक दलको घोषणापत्र
- ढ) विद्यालय सुधार योजना र अन्य सरकारी र गैरसरकारी सङ्घसंस्थाका शिक्षासम्बन्धी कार्यक्रम आदि
- त्यसै गरी योजना निर्माणको क्रममा देहाय बमोजिमका प्रक्रियाहरू अवलम्बन गरिएको थियो ।
- क) कार्यपालिकाको बैठकको निर्णय
- ख) योजना निर्माण समितिको गठन
- ग) योजना निर्माण कार्यदल गठन
- घ) सरोकारवालाहरूको भेलाको उपस्थिति र निर्णय
- ङ) प्रथम मस्यौदा तयारी
- च) योजनाको अन्तिम रूप
- छ) योजनाको मूल्यांकन
- ज) योजनाको स्वीकृति र कार्यान्वयनको अवस्था

#### (घ) योजनाको दस्तावेजको स्वरूप

यस योजनाको पहिलो परिच्छेदमा स्थानीय तहको पृष्ठभूमि, शिक्षा क्षेत्रका समस्याहरू चुनौतीहरू र अवसरहरू उल्लेख गरिएको छ । दोस्रो परिच्छेदमा यस योजनाका दूरदृष्टि, ध्येय, उद्देश्य तथा रणनीतिहरू र प्रमुख अपेक्षित उपलब्धिहरू प्रस्तुत गरिएको छ ।

परिच्छेद तीनमा विद्यालय क्षेत्रका विभिन्न उपक्षेत्रगत योजनाका खाका समावेश गरिएको छ । यसमा समावेश गरिएका उपक्षेत्रहरूमा प्रारम्भिक बालविकास तथा शिक्षा, आधारभूत शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा तथा आजीवन सिकाइ रहेका छन् । परिच्छेद चारमा विद्यालय शिक्षाका विभिन्न अन्तरसम्बन्धित विषय क्षेत्रहरू समावेश गरिएको छ । यसमा समावेश गरिएका अन्तरसम्बन्धित विषयहरूमा पाठ्यक्रम तथा मूल्याङ्कन, शिक्षक

व्यवस्थापन र विकास, समता तथा समावेशीकरण, स्वास्थ्य, पोषण तथा दिवा खाजा, आपतकालीन तथा संकटपूर्ण अवस्थामा शिक्षा, विद्यालय भौतिक विकास र शिक्षामा सूचना तथा सञ्चार प्रविधि रहेका छन् ।

परिच्छेद पाँचमा विद्यालय सुशासन तथा व्यवस्थापन अन्तर्गत आवश्यक संस्थागत संरचना तथा क्षमता विकास, योजना कार्यान्वयनको समग्र व्यवस्था र अनुगमन, मूल्याङ्कन तथा प्रतिवेदन प्रणालीका समावेश गरिएको छ ।

परिच्छेद ६ मा योजनाका लागि लगानी र स्रोत व्यवस्थापन के कसरी गर्ने भन्ने विषय प्रस्तुत गरिएको छ ।

परिच्छेद सातमा योजनाको कार्यान्वयनबाट अपेक्षा गरिएका समग्र नतिजाहरू र मुख्य मुख्य सूचकहरू उल्लेख गरिएको छ ।



## परिच्छेद १

### परिचय

#### १.१ भौगोलिक अवस्थिति

नेपाली खस भाषाको उदगमस्थल कर्णालीको सिजा क्षेत्र सित जोडीएको पलाता र विगतको पलाता क्षेत्र हालको कालिकोट जिल्लाको पलाता र पचालझरना गाउँपालिका रहेका छन् । यहाँ आफ्नै मौलीक सांस्कृतिक पहिचान जैविक विविधता , प्राकृतीक सुन्दरता र स्रोत साधनले भरीपुर्ण छ । पचालझरना गाउँपालिका सावीकको रामनाकोट , नानीकोट र आधा भन्दा बढी बदालकोटको सिकु मिलाएर बनेको छ र जिल्लाकै पहिचान र गौरव ३८१ मिटर अग्लो पचालझरनाको नामबाट नामाकरण भएको गाउँपालिका पर्यटकीय एवं धार्मीक साँस्कृतिक रूपले एक केन्द्रकै रूपमा परिचीत छ । १६६.९२ वर्ग किलोमिटर भु-भागमा फैलिएको यो गाउँपालिका पूर्वमा पलाता गाउँपालिका , पश्चिममा रास्कोट नगरपालिका उत्तरमा बाजुरा र दक्षिणमा खाँडाचक्र नगरपालिकाले घेरिएको छ । समुन्द्री सतहदेखी ९७० मिटर उचाइमा रहेको हाम्रो गाउँपालिकासगँ कालीकोटकै अग्ला हिमाल पुग र चुली पनी यसै मा जोडिएका छन् । भारतको रुपडीयावाट हुम्लाको हिल्सा जोड्ने कर्णाली करीडोरले यस गाउँपालिकाको एकसाइड छिचोलेर गएको छ । यसले केही सम्भावनाका ढोका समेत खोली दिएको छ गाउँपालिकाको विच भागमा च्यातेर देशकै अग्लो लामो कर्णाली नदी आफ्नै गतिमा बगिरहेको छ । खासगरी — झरना, हिमाल, कडाचट्टानी पहाड लेकाली मैदान फाँट , प्राचीन स्थल मठ मन्दिर पुरातात्वीक महत्वका धार्मीक तथा पर्यटकीय स्थल , लेकभरी हिमाली जडीबुडी बन्यजन्तु यहाका मुख्य पहिचान रहेका छन् ।

#### १.२ जनसाङ्ख्यिक संरचना

पचालझरना गाउँपालिका, कालिकोटको राष्ट्रिय जनगणना २०७८ अनुसार कालिकोट जिल्लाको पचालझरना गाउँपालिकाको कुल जनसंख्या १३,६८७ रहेको छ. यो गाउँपालिका कर्णाली प्रदेशमा अवस्थित छ र यसको प्रशासनिक कार्यालय पडेक्षामा रहेको छ ।

#### जनसाङ्ख्यिक तथा भौगोलिक संरचना (जनगणना २०७८)

- कुल जनसंख्या: १३,६८७ जना
- जम्मा घरधुरी: २,३९८
- कुल क्षेत्रफल: १६६.९२ वर्ग किलोमिटर
- जनघनत्व: ८२ जना प्रति वर्ग किलोमिटर

- जिल्ला/प्रदेश: कालिकोट, कर्णाली प्रदेश
- कार्यालय केन्द्र: पडेक्षा (साविक राम्नाकोट गाविस)

#### वडागत जनसंख्या विवरण

यो गाउँपालिका जम्मा ९ वटा वडाहरूमा विभाजित छ, जसको साविक गाविस संयोजन र जनगणना २०७८ अनुसारको विस्तृत विवरण यस प्रकार छ:

वडा नं. समावेश भएका साविक गाविसहरू जनसंख्या (२०७८) क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)

|   |                 |       |       |
|---|-----------------|-------|-------|
| १ | बदालकोट (४-७)   | १,३६४ | २७.६६ |
| २ | बदालकोट (८-९)   | १,१३३ | ८.९३  |
| ३ | राम्नाकोट (७-९) | १,६७३ | ५७.५२ |
| ४ | राम्नाकोट (५-६) | ९९८   | १०.१२ |
| ५ | राम्नाकोट (१-४) | १,७१७ | ११.३५ |
| ६ | नानिकोट (१-२)   | १,७२० | १०.९७ |
| ७ | नानिकोट (३-५)   | - *   | -     |
| ८ | नानिकोट (६-७)   | - *   | -     |
| ९ | नानिकोट (८-९)   |       |       |

### १.३ सामाजिक तथा सांस्कृतिक अवस्था

ऐतिहासिक खस सभ्यता र कर्णालीको मौलिक परम्परासँग जोडिएको छ। राष्ट्रिय जनगणना र स्थानीय वस्तुगत विवरणका आधारमा यहाँको सामाजिक तथा सांस्कृतिक अवस्थालाई निम्नानुसार प्रस्तुत गर्न सकिन्छ:

#### १.३.१ जातीय तथा धार्मिक संरचना

- **बहुसंख्यक खस-आर्य:** यहाँ मुख्य रूपमा क्षेत्री, ब्राह्मण, ठकुरी र दलित (कामी, दमाई, सार्की) समुदायको बसोबास रहेको छ।
- **धार्मिक आस्था:** यहाँका शतप्रतिशत जसो नागरिकहरू हिन्दू धर्म मान्दछन्। प्रकृति पूजा र मष्टो संस्कृति यहाँको सामाजिक जीवनको अभिन्न अंग हो।
- **मुख्य भाषा:** यहाँको मुख्य भाषा नेपाली हो। यो क्षेत्र नेपाली खस भाषाको उद्गमस्थल सिँजा क्षेत्रसँग जोडिएकोकाले यहाँ स्थानीय कर्णाली/खस लवज (डोटेली/अछामीसँग मिल्दोजुल्दो) बोलिन्छ।

### १.३.२. प्रमुख चाडपर्व तथा सांस्कृतिक मेलाहरू

- परम्परागत चाडपर्व: दशैं, तिहार, माघे संक्रान्ति, शिवरात्रि, साउने संक्रान्ति र कृष्ण जन्माष्टमी यहाँ धूमधामका साथ मनाइन्छ।
- स्थानीय जात्रा र मेला: यहाँको मौलिक सांस्कृतिक रूपमा नुवाघरको जात्रा र सिकु चिउटे गडा कात्तिक पूर्णिमाको मेला विशेष रूपमा प्रसिद्ध छन्।
- मौलिक नाचहरू: विवाह, व्रतबन्ध र मेलाहरूमा देउडा, हुड्केली, रत्यौली र मागल गाउने तथा नाच्ने परम्परा जीवन्त छ।

### १.३.३ . धार्मिक तथा पर्यटकीय स्थलहरू

- पचालझरना: गाउँपालिकाको नामकरण नै देशकै प्रमुख पर्यटकीय आकर्षण ३८१ मिटर अग्लो पचालझरनाको नामबाट गरिएको हो, जसको धार्मिक र प्राकृतिक महत्व छ।
- चुलिमालिका: झरनाको शिरमा रहेको चुलिमालिका क्षेत्रलाई यस क्षेत्रको पवित्र धार्मिक स्थल मानिन्छ, जहाँ मुख्य तिथिहरूमा पूजाआजा गरिन्छ।

### १.३.४. सामाजिक जीवन र चुनौतीहरू

- परम्परागत पेशा: यहाँको मुख्य पेशा कृषि र पशुपालन (भेडा, बाख्रा, गाईगोरु पालन) हो।
- होमस्टे र पर्यटन: पछिल्लो समय पर्यटन प्रवर्द्धनका लागि खाँदु गाउँमा स्थानीय होमस्टे (सामुदायिक आवास) सञ्चालनमा आएका छन्, जसले पाहुना सत्कारको स्थानीय संस्कृतिलाई झल्काउँछ।
- सामाजिक चुनौतीहरू: भौगोलिक विकटताका कारण यहाँको साक्षरता दर राष्ट्रिय औसतभन्दा केही कम छ। समाजमा अझै पनि बालविवाह, छाउपडी जस्ता कुप्रथाहरू पूर्ण रूपमा उन्मूलन हुन नसकेकाले स्थानीय सरकारले चेतनामूलक कार्यक्रमहरू चलाइरहेको छ।

## १.४ आर्थिक अवस्था

कालिकोट जिल्लाको पचालझरना गाउँपालिकाको आर्थिक विवरणले कृषि, पशुपालन, र पर्यटन (मुख्यतः पचालझरना) लाई मुख्य आम्दानीको स्रोत मान्दछ। पालिकाले संघीय र प्रदेश सरकारको अनुदानमा बढी भर पढेँ, आन्तरिक आय वृद्धि र पूर्वाधार विकासमा योजनाबद्ध बजेट विनियोजन गरिरहेको छ, जसमा कृषि आधुनिकीकरण र ग्रामीण पर्यटन पूर्वाधार प्राथमिकतामा छन्।

पचालझरना गाउँपालिकाको आर्थिक विवरणका प्रमुख पक्षहरू:

- आर्थिक आधार: स्थानीय बासिन्दाको मुख्य पेसा कृषि र पशुपालन हो। यस क्षेत्रमा रहेको उच्च पचालझरना र अन्य प्राकृतिक सम्पदाहरूले पर्यटनको सम्भावना बोकेका छन्।

- बजेट र अनुदानयस गाउँपालिकाको आर्थिक स्रोतको रूपमा गाउँपालिकाको आन्तरिक राजस्व संघीय सरकारबाट प्राप्त समानीकरण, सशर्त, विशेष र सम्पूरक अनुदान का साथै प्रदेश सरकारबाट प्राप्तहुने अनुदानहरु मुख्य रहेका छन् ।
- आन्तरिक आय: नगण्य मात्रामा भए पनि घरबहाल कर, व्यवसाय कर, र सिफारिस दस्तुरबाट आन्तरिक आय संकलन हुने गर्दछ, जसलाई बढाउने योजना पालिकाको छ ।
- विकास प्राथमिकता: बजेटको ठूलो हिस्सा सडक, खानेपानी, सिँचाइ, र वडा कार्यालय भवन निर्माणजस्ता पूर्वाधार विकासमा खर्च हुने गर्दछ ।
- आर्थिक गतिविधि: स्थानीय उत्पादनको बजारीकरणका लागि लघु उद्यमशीलता र कृषिमा आधारित उद्योगहरु सञ्चालन गर्ने प्रयास भइरहेको छ ।

## १.५. शैक्षिक अवस्था

भौगोलिक विकटताका बीच पनि तीव्र रूपान्तरण र नीतिगत सुधारको दिशामा अघि बढिरहेको छ । गाउँपालिकाले शिक्षाको गुणस्तर अभिवृद्धि गर्न र स्थानीय युवाहरूलाई रोजगारीका अवसरसँग जोड्न विशेष कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्दै आएको छ । पचालझरना गाउँपालिकाले विद्यालय शिक्षाको अधिकार स्थानीय तहमा निहित भएबमोजिम शिक्षा नियमावली २०७५ र पचालझरना शैक्षिक रूपान्तरण अभियान कार्यविधि २०८० जारी गरी शैक्षिक व्यवस्थापन गरिरहेको छ । गाउँपालिकाले परम्परागत शिक्षण सिकाइलाई प्रविधिमैत्री र व्यावहारिक बनाउन लगानी केन्द्रित गरेको छ । पचालझरना गाउँपालिकाले विद्यालय तहको जग बलियो बनाउन हरित विद्यालय अवधारणा र स्थानीय पहिचान सहितको शिक्षालाई जोड दिनुका साथै युवाहरूको वृत्तिविकासका लागि लोकसेवा कक्षा जस्ता नवीन कार्यक्रम मार्फत समग्र मानव पुँजी निर्माणमा टेवा पुऱ्याइरहेको छ ।

क) विद्यालयीय संरचना र पहुँच

- माध्यमिक विद्यालयहरू: गाउँपालिकाभरि १० वटा माध्यमिक विद्यालयहरू सञ्चालनमा रहेका छन्, जसले कक्षा १२ सम्मको शिक्षा प्रदान गर्छन् । (जस्तै: श्री कालिका माध्यमिक विद्यालय खयरकोट र श्री पंगेती माध्यमिक विद्यालय नुवाघर) ।
- आधारभूत तथा प्रारम्भिक बाल विकास: गाउँपालिकाले सबै वडाहरूमा आधारभूत विद्यालय तथा प्रारम्भिक बाल विकास केन्द्र (ECD) को सञ्चालन विस्तार गरेको छ । सहजकर्ताहरूको क्षमता अभिवृद्धिका लागि द्विपक्षीय सम्झौता गरी शिक्षणलाई बालमैत्री बनाइएको छ ।

ख) नवीन शैक्षिक अभ्यास तथा स्थानीय पाठ्यक्रम

- स्थानीय पाठ्यक्रम कार्यान्वयन: राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप २०७६ को मार्गनिर्देशन अनुसार गाउँपालिकाले शैक्षिक सत्र २०७८ देखि नै स्थानीय विषयको पाठ्यक्रम निर्माण गरी कार्यान्वयनमा ल्याएको छ ।

यसअन्तर्गत स्थानीय जडीबुटी, सांस्कृतिक सम्पदा र विपद् व्यवस्थापन जस्ता व्यवहारिक विषयहरू समावेश गरिएका छन्।

- SEE लक्षित सहयोग:

विद्यार्थीहरूको नतिजा सुधार गर्न गाउँपालिकाले माध्यमिक विद्यालयहरूलाई विशेष लक्षित गरी शैक्षिक तयारी कक्षा तथा आवश्यक परीक्षा सामग्री सहयोग उपलब्ध गराउने नीति लिएको छ।

ग) युवा लक्षित तथा वृत्तिविकास कार्यक्रम (लोकसेवा तयारी)

- लोकसेवा तथा प्रतिस्पर्धात्मक कक्षा: शैक्षिक बेरोजगारी कम गर्न गाउँपालिकाले स्थानीय युवाहरूलाई लक्षित गरी निःशुल्क लोकसेवा तथा शिक्षक सेवा आयोग तयारी कक्षा सञ्चालन गर्दै आएको छ। यसले दुर्गम क्षेत्रका विपन्न तथा जेहेन्दार युवाहरूलाई राज्यको प्रशासनिक मूलधारमा पहुँच पुऱ्याउन मद्दत गरेको छ।
- विपन्न लक्षित छात्रवृत्ति: जेहेन्दार तथा आर्थिक रूपमा विपन्न विद्यार्थीहरूका लागि गाउँपालिकाले वार्षिक रूपमा विशेष छात्रवृत्ति कार्यक्रम सञ्चालन गरी उच्च शिक्षाको पहुँच सुनिश्चित गर्ने प्रयास गरेको छ।

घ) विद्यमान चुनौतीहरू

- भौगोलिक विकटता र जनशक्ति: दुर्गम भूगोलका कारण कतिपय विद्यालयमा भौतिक पूर्वाधार र विषयगत शिक्षकहरूको व्यवस्थापनमा अझै चुनौती रहेको छ।
- ड्रपआउट (विद्यालय छाड्ने दर): माध्यमिक तहमा पुगेपछि घरायसी आर्थिक अवस्था र सानै उमेरमा रोजगारीका लागि पलायन हुने प्रवृत्तिका कारण विद्यार्थी टिकाउदर बढाउन थप प्रयास आवश्यक देखिएको छ।

## २. सबल पक्षहरू

पचालझरना गाउँपालिकाले शिक्षा क्षेत्रमा उल्लेखनीय सकारात्मक तथा असल अभ्यासहरू कार्यान्वयनमा ल्याएको देखिन्छ। स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐनले प्रदान गरेको अधिकारको प्रभावकारी उपयोग गर्दै आधारभूत तथा माध्यमिक शिक्षालाई निःशुल्क र अनिवार्य बनाउने दिशामा विद्यार्थी भर्ना अभियान, विशेष छात्रवृत्ति कार्यक्रम, दिवा खाजा तथा विद्यालय पोसाक वितरण जस्ता लक्षित कार्यक्रम सञ्चालन गरिएका छन्। यी कार्यक्रमहरूले गरिब, विपन्न तथा सीमान्तकृत परिवारका बालबालिकालाई विद्यालयमा टिकाइ राख्न महत्वपूर्ण योगदान पुऱ्याएका छन्।

विद्यालय वातावरण सुधारका लागि बालमैत्री, अपाङ्गमैत्री तथा वातावरणमैत्री पूर्वाधार निर्माणमा जोड दिइएको छ। “शैक्षिक रूपान्तरण अभियान”, “हरेक दिन कुरा तीन”, र “विद्यार्थी र अभीभावक सँग जनप्रतिनिधी” जस्ता अवधारणाहरूले सिकाइलाई व्यवहारिक, वातावरणसँग जोडिएको र जीवनोपयोगी बनाउने प्रयास गरेका छन्। सुरक्षित

खानेपानी, समावेशी शौचालय र हरित परिसर निर्माणले विद्यालयलाई सिकाइ अनुकूल बनाउने दिशामा सकारात्मक परिणाम देखाउन थालेको छ।

शैक्षिक गुणस्तर अभिवृद्धिका लागि प्रविधि एकीकरणमा विशेष ध्यान दिइएको छ। स्मार्ट बोर्ड, कम्प्युटर ल्याब, विज्ञान प्रयोगशाला विस्तार, इन्टरनेट जडान तथा डिजिटल सामग्रीको प्रयोगले आधुनिक शिक्षण सिकाइ प्रक्रिया प्रवर्द्धन गरेको छ। “हरेक विद्यालयमा वर्षमा एकपटक स्वास्थ्यकर्मी सहितको स्वास्थ्य परीक्षण कार्यक्रम” जस्ता अभ्यासहरूले विद्यार्थीको शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्यलाई पनि शिक्षा प्रणालीको अभिन्न अंगका रूपमा स्वीकार गरेको देखिन्छ, जसले समग्र सिकाइ उपलब्धिमा सकारात्मक प्रभाव पार्ने अपेक्षा गरिएको छ।

समावेशी शिक्षाको क्षेत्रमा किशोरी, अपाङ्गता भएका व्यक्ति, दलित तथा अन्य सीमान्तकृत समूहलाई विशेष प्राथमिकता दिइएको छ। अपाङ्गताका प्रकृतिअनुसार सहायक सामग्री, छात्रवृत्ति तथा आवश्यक सहयोग उपलब्ध गराउने व्यवस्था गरिएको छ। महिला शिक्षकहरूको नेतृत्व विकास तालिमले विद्यालय व्यवस्थापन र शैक्षिक नेतृत्वमा लैङ्गिक सन्तुलन कायम गर्न सहयोग पुऱ्याएको छ।

यसका अतिरिक्त, सामुदायिक सिकाइ केन्द्रहरूको सक्रियता बढाई वयस्क साक्षरता, निरन्तर शिक्षा र जीवनोपयोगी सीप विकास कार्यक्रम सञ्चालन गरिएको छ। विद्यालयस्तरमा नियमित शैक्षिक अनुगमन, उपलब्धि परीक्षण, अभिभावक शिक्षक अन्तरक्रिया, अतिरिक्त क्रियाकलाप, विज्ञान प्रदर्शनी तथा प्रतिभा पहिचान कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरी सिकाइ उपलब्धि सुधारमा ध्यान दिइएको छ। प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा विस्तार गरी युवाहरूलाई स्वरोजगार र उद्यमशीलतातर्फ उन्मुख गराउने पहल पनि अघि बढाइएको छ।

समग्रमा, पञ्चालझरना गाउँपालिकाले शिक्षामा पहुँच, गुणस्तर, समावेशीकरण र दिगोपनालाई एकसाथ सम्बोधन गर्ने प्रयास गरेको देखिन्छ। यदि यी कार्यक्रमहरूको प्रभावकारी कार्यान्वयन, निरन्तर अनुगमन र स्रोत व्यवस्थापन सुनिश्चित गर्न सकियो भने स्थानीय स्तरमै गुणस्तरीय र समावेशी शिक्षा प्रणाली विकासको नमुना स्थापित हुनसक्ने सम्भावना प्रबल रहेको छ।

### ३. शिक्षा क्षेत्रका समस्याहरू

पञ्चालझरना गाउँपालिकाको शिक्षा क्षेत्रका विद्यमान समस्याहरूलाई देहाय बमोजिम विश्लेषण गरिएको छ।

#### क) समतामूलक पहुँच र सहभागिता

विद्यालय भर्ना दर सन्तोषजनक भए पनि गरिबी, पारिवारिक अवस्था, बसाइँसराइ र घरायशी तथा आर्थिक अभावका कारण केही बालबालिकाहरू बीचैमा विद्यालय छोड्ने समस्या कायम छ। अपाङ्गता भएका, दलित, सीमान्तकृत तथा कठिन परिवेशमा रहेका बालबालिकालाई शिक्षाको मूल प्रवाहमा अर्थपूर्ण सहभागिता गराउनु अझै चुनौतीपूर्ण छ। अभिभावक शिक्षाको अभावले घर—विद्यालय समन्वय कमजोर भएको देखिन्छ। समतामूलक पहुँच सुनिश्चित गर्न लक्षित सहयोग, सामाजिक परिचालन र अभिभावक सशक्तीकरण कार्यक्रमलाई सुदृढ बनाउनु आवश्यक छ।

## ख) गुणस्तर र सान्दर्भिकता

शिक्षण सिकाइ प्रक्रियामा परम्परागत घोकन्ते पद्धतिको प्रभाव अझै देखिन्छ। विद्यार्थी केन्द्रित, खोजमूलक र प्रयोगात्मक शिक्षण अभ्यास सीमित छन्। विज्ञान तथा प्रविधि विषयमा प्रयोगात्मक अभ्यास र अनुसन्धान संस्कृति विकास हुन नसक्दा सिकाइ सैद्धान्तिक रूपमा सीमित भएको छ। स्थानीय सन्दर्भ समेट्ने पाठ्यक्रम विकासमा ढिलाइ हुँदा शिक्षा र स्थानीय आवश्यकता बीचको सम्बन्ध कमजोर भएको देखिन्छ। यसले जीवनोपयोगी सीप विकासमा चुनौती सिर्जना गरेको छ।

## ग) शिक्षक व्यवस्थापन

यस गाउँपालिकामा जम्मा ६०८८ जना विद्यार्थी रहेका र सबै तहका शिक्षक जम्मा १७१ जना रहेका छन्। समग्रमा सबै तहका शिक्षक विद्यार्थी अनुपात १:३५.६० रहेको छ। समग्रमा मा शिक्षक विद्यार्थी अनुपात संतोषजनक भए पनि विषयगत शिक्षकको कमि रहेको छ भने तहगतरूपमा हेर्दा सहि शिक्षक व्यवस्थापन नहुदा कुनै विद्यालयमा शिक्षक संख्या कम र कुनैमा बढी देखिन्छ। विशेषगरी विज्ञान, गणित र अंग्रेजी विषयमा दक्ष शिक्षक अभावले सिकाइ उपलब्धिमा प्रत्यक्ष असर पारेको छ। शिक्षकहरूको निरन्तर पेशागत विकास, प्रविधि—मैत्री तालिम र समावेशी शिक्षण रणनीतिसम्बन्धी कार्यक्रम अपर्याप्त छन्। शिक्षा क्षेत्रमा राजनीतिक हस्तक्षेप र नियुक्ति प्रक्रियामा हुने विवादले स्थायित्व र पेशागत मनोबलमा नकारात्मक प्रभाव पार्ने सम्भावना देखिन्छ।

## घ) भौतिक पूर्वाधार

धेरै विद्यालयहरूमा स्वच्छ खानेपानी, समावेशी शौचालय, सुरक्षित भवन, पुस्तकालय र पर्याप्त फर्निचर जस्ता आधारभूत सुविधा अझै अपर्याप्त छन्। कतिपय भवनहरू जीर्ण अवस्थामा रहेकाले विद्यार्थीको सुरक्षामा जोखिम देखिन्छ। आधुनिक शिक्षणका लागि आवश्यक कम्प्युटर ल्याब, विज्ञान प्रयोगशाला, स्मार्ट बोर्ड र विद्यार्थी मैत्री उच्च गतिको इन्टरनेट सुविधा अधिकांश सामुदायिक विद्यालयमा सीमित छन्। यसले डिजिटल शिक्षण—सिकाइ प्रक्रियामा असमानता सिर्जना गरेको छ।

## ड) पाठ्यक्रम र मूल्याङ्कन प्रणाली

स्थानीय पाठ्यक्रम निर्माण र प्रभावकारी कार्यान्वयनमा ढिलाइ भएको छ। सिकाइ उपलब्धिको वैज्ञानिक, तथ्यमा आधारित मूल्याङ्कन प्रणाली कमजोर देखिन्छ। विद्यालयहरूको शैक्षिक तथा प्रशासनिक गतिविधिको नियमित अनुगमन र पृष्ठपोषण प्रणाली पर्याप्त सुदृढ छैन। परीक्षा केन्द्रित अभ्यास हावी हुँदा सिर्जनात्मकता र आलोचनात्मक सोच विकासमा अपेक्षित प्रगति हुन सकेको छैन।

## च) समता र समावेशीकरण

दलित तथा सीमान्तकृत र अपाङ्गता भएका, बालबालिकाको पूर्ण र अर्थपूर्ण सहभागिता सुनिश्चित गर्न अझै सामाजिक संरचनागत सोच तथा क्रियाकलापहरू सुधार गर्न आवश्यक छ। लैङ्गिक साक्षरता अन्तर, सामाजिक विभेद र आर्थिक असमानताले शिक्षामा समान अवसर प्राप्तिमा अवरोध सिर्जना गरेका छन्। समावेशी पूर्वाधार, सहायक सामग्री र संवेदनशील शिक्षक तयारी अपर्याप्त हुँदा समावेशी शिक्षाको प्रभाव सीमित हुन सक्छ।

## छ) विद्यालय सुशासन र व्यवस्थापन

विद्यालय व्यवस्थापन समिति, प्रधानाध्यापक र शिक्षकबीचको समन्वय सुदृढ नहुँदा विद्यालय सुधार योजना योजना कार्यान्वयनमा समस्या रहेको देखिन्छ। पारदर्शी बजेट व्यवस्थापन, सहभागितामूलक योजना निर्माण र जवाफदेहिता प्रणाली पूर्ण रूपमा संस्थागत हुन सकेको छैन। अनुगमन तथा मूल्याङ्कन संयन्त्र कमजोर हुँदा विद्यालय सुधार योजना प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन हुन नसक्ने अवस्था देखिन्छ। विद्यालयहरूको शैक्षिक र प्रशासनिक क्रियाकलापको चुस्त अनुगमन तथा वैज्ञानिक मूल्याङ्कन प्रणालीको अभाव छ। शैक्षिक सत्र र क्यालेन्डरलाई नियमित र व्यवस्थित बनाउन नसक्दा सिकाइ प्रक्रिया प्रभावित हुने गरेको छ। माध्यमिक र प्राविधिक शिक्षालाई गुणस्तरीय र सुविधासम्पन्न बनाउन आवश्यक पर्ने लगानी र बजेटको व्यवस्थापन चुनौतीपूर्ण रहेको छ।

समग्रमा हेर्दा पचालझरना गाउँपालिकामा शिक्षा क्षेत्रमा पहुँच विस्तार र नीतिगत प्रतिबद्धता सकारात्मक भए पनि गुणस्तर, समावेशीकरण, शिक्षक व्यवस्थापन, पूर्वाधार सुदृढीकरण र सुशासनका क्षेत्रमा थप सुधार अपरिहार्य देखिन्छ। प्रभावकारी योजना, स्रोतको उचित उपयोग र समुदायमा आधारित उत्तरदायित्व प्रणाली विकास गर्न सके यी समस्यालाई अवसरमा रूपान्तरण गर्न सकिने सम्भावना रहेको छ।

## ४. अवसरहरू

संविधान र कानुनी व्यवस्था अनुसार शिक्षा स्थानीय तहको अधिकारभित्र परेपछि स्थानीय सरकारले आफ्नै योजना अनुसार गुणस्तरीय शिक्षा प्रवर्द्धन गर्न सक्ने अवसर प्राप्त भएको छ। यससँगै शिक्षा क्षेत्रमा लगानी वृद्धि गर्ने क्षमता र तीन तहको सरकार तथा अन्य सङ्घ संस्थाबाट सहकार्य र स्रोत जुटाउने वातावरण पनि उपलब्ध छ। सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको प्रयोग विस्तार भएसँगै डिजिटल शिक्षण—सिकाइ, अनलाइन सामग्री र शिक्षक-विद्यार्थी समन्वयमा सहजता आएको छ। स्थानीय पाठ्यक्रम विकासका क्रममा वातावरण संरक्षण, हरित विद्यालय निर्माण, जलवायु परिवर्तन र जीवनोपयोगी विषयवस्तु समावेश गर्न सकिने भएकाले शिक्षा केवल सैद्धान्तिक नभई व्यवहारिक र वर्तमान चुनौतीसँग सुसंगत हुने सम्भावना बढेको छ। त्यस्तै, स्थानीय स्तरमा विद्यमान रैथाने ज्ञान, सिप र प्रविधिलाई पाठ्यक्रम र सिकाइ अभ्यासमा आन्तरिकीकरण गर्न सकिनु विद्यार्थीको सांस्कृतिक र सामाजिक सन्दर्भसँग शिक्षा जोड्ने अवसर दिन्छ। साथै, वैकल्पिक सिकाइको सहजीकरणमार्फत प्रत्येक विद्यार्थीले सिक्न पाउने अधिकार सुनिश्चित गर्न सकिने भएकाले पहुँच, समावेशीकरण र गुणस्तर एकसाथ बढाउने वातावरण तयार भएको छ। यस प्रकार, कानुनी अधिकार, स्रोत व्यवस्थापन, प्रविधि र स्थानीय ज्ञानको उपयोगले पचालझरना गाउँपालिकाको शिक्षा प्रणालीलाई दिगो, समावेशी र जीवनोपयोगी बनाउन महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान गरेको छ।

## ५. चुनौतीहरू

पचालझरना गाउँपालिकाले शिक्षा क्षेत्रमा पहुँच, गुणस्तर र समावेशीकरण सुनिश्चित गर्न थुप्रै चुनौती र अवसरको सामना गर्दै आएको देखिन्छ। लैङ्गिक, भाषिक, भौगोलिक, आर्थिक, शारीरिक अपाङ्गता, जात/जाति र अन्य सामाजिक विविधताका कारण सबै बालबालिकालाई समान रूपमा गुणस्तरीय शिक्षा प्रदान गर्न अझै प्रयास आवश्यक छ। जनसाङ्ख्यिकीय प्रवृत्ति, जन्म दर, बसाइँसराइ, भौगोलिक विकटता र स्थानीय बनौटका कारण व्यवहारिक विद्यालय नक्साङ्कन तथा शिक्षक दरबन्दीको न्यायोचित वितरण आवश्यक छ, जसले विद्यार्थी र शिक्षक दुवैको सहज पहुँच सुनिश्चित गर्दछ। विद्यालयमा थप आर्थिक व्यवस्थापन गर्न कठिनाई हुँदा निःशुल्क र अनिवार्य शिक्षा कार्यान्वयनमा पूर्णता दिन चुनौती देखिन्छ। दक्ष जनशक्तिको अभावले पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक र मूल्याङ्कन प्रणाली सुधार तथा सूचना सञ्चार प्रविधिको प्रभावकारी प्रयोगमा बाधा पुऱ्याउँछ। साथै, विपत्का अवस्थाहरू जस्तै बाढी, पहिरो वा अन्य आपतकालीन परिस्थितिमा वैकल्पिक माध्यमबाट सिकाइ अवसर उपलब्ध गराउने रणनीति आवश्यक छ। जनसाङ्ख्यिक विविधताका कारण आजीवन सिकाइ कार्यक्रममा समान अवसर र विविधता सुनिश्चित गर्नुपर्छ। सबै विद्यालयमा तोकिएअनुसारको भौतिक पूर्वाधार निर्माण गरी हरित विद्यालयको रूपमा विकास गर्न आर्थिक स्रोत संकलन आवश्यक छ, साथै जलवायु परिवर्तन र त्यसको असर कम गर्ने उपायहरू अपनाउनु दिगो शिक्षा प्रणालीका लागि अनिवार्य छ। यी सबै चुनौती र अवसरलाई व्यवस्थित रूपमा सम्बोधन गर्दा पचालझरना गाउँपालिकामा समावेशी, दिगो र गुणस्तरीय शिक्षा प्रणाली विकास गर्न सकिने सम्भावना उच्च रहेको छ।

## परिच्छेद २

### दूरदृष्टि, उद्देश्य, रणनीति तथा लक्ष्य निर्धारण

#### २.१ दूरदृष्टि

"गुणस्तरीय, सिपमूलक, प्रविधिमैत्री शिक्षाको माध्यमबाट सामाजिक रूपान्तरण"

#### २.२ लक्ष्य

समावेशी पहुँचसहितको गुणस्तरीय, सिपमूलक र प्रविधिमैत्री शिक्षा प्रणालीको विकासमार्फत स्थानीय आवश्यकता र राष्ट्रिय-अन्तर्राष्ट्रिय श्रम बजारमा प्रतिस्पर्धा गर्न सक्ने सक्षम, नैतिक र आत्मनिर्भर जनशक्ति उत्पादन गर्ने,

#### २.३ उद्देश्य

- क) सबै बालबालिकालाई शिक्षामा समतामूलक पहुँच र सहभागिता सुनिश्चित गर्नु,
- ख) सबै बालबालिकाको शिक्षामा गुणस्तरीय र सान्दर्भिकता सुनिश्चित गर्नु,
- ग) औपचारिक शिक्षाको अवसरबाट वञ्चित व्यक्तिहरूका लागि वैकल्पिक, अनौपचारिक, खुला र निरन्तर सिकाइको वातावरण सुनिश्चित गर्नु,
- घ) विद्यालय शिक्षामा सुशासन तथा व्यवस्थापन सुनिश्चित गर्नु,

#### २.४ रणनीतिहरू

उद्देश्य १ सबै बालबालिकालाई शिक्षामा समतामूलक पहुँच र सहभागिता र सुनिश्चित गर्नु

रणनीतिहरू:

- क) आधारभूत शिक्षालाई सबै बालबालिकाका लागि अनिवार्य र निःशुल्क बनाउँदै पहुँचयोग्य र समतामूलक बनाउने,
- ख) विद्यालय जानबाट वञ्चित बालबालिकाहरूको पहिचान गर्न तथ्याङ्क सङ्कलन गर्ने र शैक्षिक सत्रको सुरुमा "विद्यार्थी भर्ना घरदैलो अभियान" सञ्चालन गर्ने,
- ग) गरिब, विपन्न, दलित र सीमान्तकृत समूहका बालबालिकालाई विद्यालयमा आकर्षित गर्न र टिकाइराख्न दिवा खाजा, छात्रवृत्ति र पोसाक वितरण गर्ने,

- घ) विकट क्षेत्र वा अध्ययन गर्ने वातावरण नभएका बालबालिकाहरूका लागि आवश्यकता अनुसार छात्रावासको व्यवस्था गर्ने,
- ङ) अपाङ्गता भएका बालबालिकाका लागि उनीहरूको अवस्था अनुसार (शारीरिक, सुनाइ, दृष्टि, अटिजम आदि) ब्रेल, साङ्केतिक चित्र र हिलचेयर जस्ता सामग्री र विशेष छात्रवृत्तिको व्यवस्था गर्ने,
- च) अपाङ्गता भएका, सीमान्तकृत वा विशेष आवश्यकताका बालबालिकाका लागि समावेशी सिकाइ वातावरण उपलब्ध गराउने,
- छ) बालबालिकाको शिक्षामा अभिभावकलाई जिम्मेवार बनाउन अभिभावक शिक्षा कार्यक्रमलाई अभियानकै रूपमा सञ्चालन गर्ने,
- ज) शिक्षकहरूलाई नवीनतम् शिक्षण पद्धति र प्रविधिमा अभ्यस्त गराउन नियमित र नतिजामुखी तालिम प्रदान गर्ने र उनीहरूको कार्यसम्पादनलाई विद्यार्थीको सिकाइ उपलब्धिसँग जोड्ने
- झ) विद्यालय पूर्वाधार र सिकाइ वातावरणमा जलवायु-उत्थानशीलता र वातावरणमैत्री पूर्वाधार सुनिश्चित गर्नु

उद्देश्य २ सबै बालबालिकाको शिक्षामा गुणस्तरीय र सान्दर्भिकता सुनिश्चित गर्नु,

रणनीतिहरू:

- क) शिक्षकहरूलाई नवीनतम् शिक्षण पद्धति र प्रविधिमा अभ्यस्त गराउन नियमित र नतिजामुखी तालिम प्रदान गर्ने र उनीहरूको कार्यसम्पादनलाई विद्यार्थीको सिकाइ उपलब्धिसँग जोड्ने
- ख) शिक्षण सिकाइलाई प्रभावकारी बनाउन स्मार्ट बोर्ड, कम्प्युटर ल्याब, विज्ञान प्रयोगशाला र इन्टरनेट सुविधाको विस्तार गर्ने
- ग) शिक्षाको गुणस्तर कायम गर्न नतिजमा आधारित अनुगमन तथा वैज्ञानिक मूल्याङ्कन प्रणालीको विकास गर्ने
- घ) पाठ्यक्रमलाई स्थानीय आवश्यकता, संस्कृति र जीवनोपयोगी सीपसँग मेल खाने गरी अनुकूल बनाउने
- ङ) विषयगत र कक्षागत रूपमा शिक्षक व्यवस्थापन गर्ने
- च) शिक्षण सिकाइमा खोजमूलक, प्रयोगात्मक, विद्यार्थीकेन्द्रित र क्रियाकलाप आधारित सिकाइ प्रवर्द्धन गर्ने
- छ) शिक्षकलाई नवीनतम शिक्षण विधि, ICT प्रयोग, समावेशी र गुणस्तरीय शिक्षण तालिम प्रदान गर्ने
- ज) नियमित मूल्याङ्कन र फिडब्याक प्रणालीको माध्यमबाट सिकाइ उपलब्धि र गुणस्तर सुनिश्चित गर्ने
- झ) विद्यालयमा पर्याप्त पाठ्यपुस्तक, डिजिटल सामग्री, स्मार्ट बोर्ड, कम्प्युटर ल्याब र प्रयोगशालाको उपलब्धता सुनिश्चित गर्ने

उद्देश्य ३ औपचारिक शिक्षाको अवसरबाट वञ्चित व्यक्तिहरूका लागि अनौपचारिक, खुला र वैकल्पिक निरन्तर सिकाइको वातावरण सुनिश्चित गर्नु

## रणनीतिहरू

- क) अनलाइन प्लेटफर्म, भिडियो क्लास, मोबाइल एप्लिकेशन र रेडियो/टेलिभिजन माध्यमबाट वैकल्पिक सिकाइ पहुँच विस्तार गर्ने
- ख) प्रत्येक वडामा इन्टरनेट सुविधा सहित कम्तीमा एक सामुदायिक सिकाइ केन्द्र स्थापना गर्ने
- ग) एक वडा एक पुस्तकालय/वाचनालय" को अवधारणा अनुसार प्रत्येक सामुदायिक सिकाइ केन्द्रसँग आबद्ध रहने गरी पुस्तकालयहरू स्थापना गर्ने
- घ) गाउँस्तरमा एक मुख्य पुस्तकालय स्थापना गरी वडाका पुस्तकालयहरूलाई एउटै सञ्चालनमा जोड्ने
- ङ) परम्परागत र मौलिक ज्ञान, दर्शन र प्राकृतिक विज्ञानलाई सङ्ग्रह र सूचीकरण गरी संरक्षण गर्ने
- च) प्रत्येक टोलमा नागरिकहरूको सिकाइको चाहना पूरा गर्न र "जीवन पर्यन्त सिकाइ" लाई अभियानको रूपमा सञ्चालन गर्न स्थानीय बौद्धिक समाज गठन गर्ने
- छ) समुदायको समन्वय र सहयोगमा टोल-टोलमा प्रौढ कक्षाहरू सञ्चालन गर्ने र उनीहरूको सिकाइ उपलब्धिलाई मापन गर्ने सूचकहरू विकास गरि कार्यान्वयन गर्ने
- ज) अनौपचारिक शिक्षा र सामुदायिक सिकाइ केन्द्रहरूको भूमिका प्रभावकारी बनाएर गाउँपालिकालाई "पूर्ण साक्षर तथा शिक्षित पालिका" घोषणा गर्ने

## उद्देश्य ४ विद्यालय शिक्षामा सुशासन तथा व्यवस्थापन सुनिश्चित गर्नु,

### रणनीतिहरू

- क) शिक्षकहरूको कार्यसम्पादन मूल्याङ्कनलाई विद्यार्थीको सिकाइ उपलब्धि र परीक्षा परिणामसँग आबद्ध गर्ने
- ख) शैक्षिक पेसामा संलग्न जनशक्तिमा जवाफदेहिता सुनिश्चित गर्न परिणाममा आधारित जवाफदेहिता प्रणालीको विकास गर्ने
- ग) प्रधानाध्यापक छनोट प्रणालीलाई योग्यता र क्षमताका आधारमा हुने गरी परिमार्जन गर्ने
- घ) वि.व्य.सको भूमिका र जिम्मेवारीलाई समयसापेक्ष परिमार्जन गरी विद्यालयलाई स्वचालित र सफल संस्थाका रूपमा विकास गर्ने
- ङ) विद्यालयप्रति समुदायको अपनत्व बढाउन विद्यालय समुदाय सहकार्य कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने
- च) विद्यालय र विद्यार्थीको विस्तृत विवरणका लागि एकीकृत तथ्याङ्क प्रणालीको विकास र सुदृढीकरण गर्ने
- छ) सम्पूर्ण सूचनालाई सुरक्षित राख्न र रियल टाइममा प्राप्त गर्न Cloud Data Management र स्वचालित संयन्त्रको विकास गर्ने
- ज) निजी (संस्थागत), गुठी र सहकारी विद्यालयहरूको स्थापना, अनुमति, सञ्चालन र आर्थिक पारदर्शिताको नियमित अनुगमन र नियमन गर्ने
- झ) शैक्षिक जनशक्ति र नेतृत्व तहका लागि स्पष्ट आचारसंहिता निर्माण गरी लागू गर्ने
- ञ) गाउँपालिकाभरि रहेका शिक्षक दरबन्दीको अध्ययन गरी दरबन्दी मिलान र पुनर्वितरण गर्ने

ट) प्रधानाध्यापक, व्यवस्थापन समिति, शिक्षक र कर्मचारीहरूका लागि नियमित तालिम र नेतृत्व विकास कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्ने

## २.६ अपेक्षित उपलब्धि

- (क) सबै बालबालिकालाई शिक्षामा समतामूलक पहुँच र अर्थपूर्ण सहभागिता सुनिश्चित भएको हुनेछ,  
 (ख) सबै बालबालिकाको शिक्षामा गुणस्तरीय र सान्दर्भिकता सुनिश्चित भएको हुनेछ,  
 (ग) औपचारिक शिक्षाको अवसरबाट वञ्चित व्यक्तिहरूका लागि वैकल्पिक, अनौपचारिक, खुला र निरन्तर सिकाइको वातावरण सुनिश्चित भएको हुनेछ  
 (घ) विद्यालय शिक्षामा सुशासन तथा व्यवस्थापन सुनिश्चित भएको हुनेछ।

## २.७ मुख्य कार्यसम्पादन सूचक र लक्ष्य निर्धारण

| क्र.स.                          | सूचक   | आधार वर्ष | २०८४  | २०८७  | २०९२  | स्रोत |
|---------------------------------|--|-----------|-------|-------|-------|-------|
|                                 |  | २०८२      |       |       |       |       |
| १. प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षा |  |           |       |       |       |       |
| १.१                             | प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षामा कूल भर्ना दर* (%)                                   | ९२.३      | ९४.२  | ९८    | १००   |       |
| १.२                             | प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षाको अनुभव लिई कक्षा १ मा नयाँ भर्ना भएका बालबालिका* (%) | ७८        | ८४    | ८८    | ९२    |       |
| २. आधारभूत शिक्षा (कक्षा १ - ८) |  |           |       |       |       |       |
| २.१                             | कक्षा १ मा नयाँ भर्ना भएका बालबालिकाको खुदप्रवेश दर (%)                            | ९२.५      | ९५    | ९७    | ९८.५  |       |
| २.२                             | कक्षा १ मा नयाँ भर्ना भएका बालबालिकाको कूल प्रवेश दर (%)                           | ९१.३      | ९३.३  | ९६.२  | ९८.४  |       |
| २.३                             | आधारभूत तह (प्राथमिक कक्षा १-५) मा खुद भर्ना दर* (%)                               | ९४.४      | ९५.२  | ९६.३  | ९८.५  |       |
| २.४                             | आधारभूत तह (प्राथमिक कक्षा १-५) मा कूल भर्ना दर* (%)                               | १४३.३     | १३५.२ | १२५.३ | ११२.९ |       |
| २.५                             | आधारभूत तहको कक्षा ५ को खुदप्रवेश दर* (%)  | ९८        | ९८.५  | ९९    | १००   |       |
| २.६                             | आधारभूत तहको कक्षा ५ को कूलप्रवेश दर* (%)  | ८४.५      | ९०.३  | ९६.४  | १००   |       |
| २.७                             | आधारभूत तहको कक्षा ५ सम्म टिकाउ दर* (%)  | ९३.१      | ९५    | ९८    | १००   |       |

| क्र.स.                                 | सूचक   | आधार वर्ष | २०८४  | २०८७  | २०९२ | स्रोत                                |
|--|--|-----------|-------|-------|------|--------------------------------------|
|  |  | २०८२      |       |       |      |                                      |
| २.८                                    | आधारभूत तह (प्राथमिक कक्षा ५) पूरा गर्ने दर* (%)   | ९५.९      | ९७    | ९९    | १००  |                                      |
| २.९                                    | आधारभूत तहमा (प्राथमिक कक्षा १-५)मा भर्ना भएका ५-९ वर्ष उमेर भन्दा माथिका बालबालिका* (%) | १२०       | ११०   | १०५   | १००  | (CEHRD)को फल्यास रिपोर्ट (२०८१/२०८२) |
| २.१                                    | आधारभूत तह (प्राथमिक कक्षा १-५) कूल भर्ना दरमा लैङ्गिक समता सूचाङ्क*                     | १.०       | १.०   | १.०   | १.०  |                                      |
| २.११                                   | आधारभूत तह (कक्षा १-८) मा खुद भर्ना दर* (%)  | ९३.५      | ९६.२  | ९८.१  | १००  |                                      |
| २.१२                                   | आधारभूत तह (कक्षा १-८) मा कूल भर्ना दर (%)   | १३५.३     | १२२.३ | ११२.३ | १००  |                                      |
| २.१३                                   | आधारभूत तहको कक्षा ८ सम्मको टिकाउ दर* (%)  | ८४.८      | ८८.९  | ९२.४  | ९६   |                                      |
| २.१४                                   | आधारभूत तहको कक्षा १ मा भर्ना भई कक्षा ८ पूरा गर्ने दर*(%)                               | ८३.१      | ८७    | ९३    | ९७   |                                      |
| २.१५                                   | आधारभूत तह(कक्षा १-८) कूल भर्ना दरमा लैङ्गिक समता सूचक*                                  | ०.८१      | ०.८१  | ०.८१  | ०.८१ |                                      |
| २.१९                                   | विद्यालय बाहिर रहेका बालबालिका* (%)  | ६.५       | ५.३   | ४.५   | १.५  | (CEHRD)को फल्यास रिपोर्ट (२०८१/२०८२) |
| २.२                                    | आधारभूत तह (कक्षा १-८) अध्यापनरत कूल शिक्षक मध्ये महिला शिक्षकको सङ्ख्या*(%)             | ४६.५      |       |       |      |                                      |
| <b>३. माध्यमिक शिक्षा (कक्षा ९-१२)</b> |  |           |       |       |      |                                      |
| ३.१                                    | माध्यमिक तह (कक्षा ९-१२) मा खुद भर्ना दर* (%)  | ७९.६      | ८१.२  | ८३.५  | ८७.२ |                                      |
| ३.२                                    | माध्यमिक तह (कक्षा ९-१२) मा कूल भर्ना दर* (%)  | ७२.४      | ८०.१  | ८५    | ९०   | ९५                                   |
| ३.३                                    | माध्यमिक तहमा कूल भर्ना दरमा लैङ्गिक समता सूचक* (कक्षा ९-१२)                             | ०.९३      | ०.९४  | ०.९५  | ०.९६ |                                      |
| ३.४                                    | आधारभूत तहवाट माध्यमिक तहमा ट्रान्जिसन दर* (%)   | ८८.५      | ९०    | ९४    | ९७   |                                      |
| ३.५                                    | कक्षा १ मा भर्ना भएका बालबालिका मध्ये कक्षा १० मा पुग्ने दर (%)                          | २८        | ३५    | ४०    | ५०   | (CEHRD)को फल्यास रिपोर्ट             |

| क्र.स.  | सूचक   | आधार वर्ष | २०८४ | २०८७ | २०९२ | स्रोत   |
|---|--|-----------|------|------|------|---|
|   |  | २०८२      |      |      |      |   |
|   |  |           |      |      |      | (२०८१/२०८२)                                     |
| ३.६   | कक्षा १ मा भर्ना भएका बालबालिका मध्ये कक्षा १२ मा पुग्ने दर (%)        | ३२.३      | ३५   | ४५   | ५५   | (CEHRD) को फल्यास रिपोर्ट (२०८१/२०८२)           |
| ३.७   | माध्यमिक तह (कक्षा ९-१२) मा कार्यरत महिला शिक्षक सङ्ख्या* (%)          | २२.५      | ३०   | ३३   | ४०   | (CEHRD) को फल्यास रिपोर्ट (२०८१/२०८२)           |
| ४. जिवन-पर्यन्त शिक्षा तथा सिकाइ र अनौपचारिक शिक्षा |  |           |      |      |      |   |
| ४.१   | साक्षरता दर (१५ वर्ष भन्दा माथि) (%)                                   | ९७.३      | ९८   | ९८.९ | ९९   |   |
| ४.२   | साक्षरता दर (६ वर्ष भन्दा माथि) (%)                                    | ९८        | ९८.९ | ९९   | ९८.९ | (CEHRD) को फल्यास रिपोर्ट (२०८१/२०८२)           |
| ४.३   | साक्षरता दर (१५-२४ उमेर समूह) (%)                                      | ९७        | ९८.९ | ९९   | ९८.९ | (CEHRD) को फल्यास रिपोर्ट (२०८१/२०८२)           |
| ४.४   | साक्षरता दरमा लैङ्गिक समता (१५ वर्ष भन्दा माथि)                        |           |      |      |      |   |
| ५. सुशासन तथा व्यवस्थापन                            |  |           |      |      |      |   |
| ५.१   | आधारभूत तह (कक्षा १-५) मा विद्यार्थी:शिक्षक अनुपात(सामुदायिक विद्यालय) | १:३५      | १:३७ | १:४० | १:४५ | नेपालको शिक्षा नियमावली, २०५९ को नियम ७७ अनुसार |
| ५.२   | आधारभूत तह (कक्षा ६-८) मा विद्यार्थी:शिक्षक अनुपात(सामुदायिक विद्यालय) | १:८०      | १:७५ | १:७० | १:४५ |   |
| ५.३   | आधारभूत तह (कक्षा १-८) मा विद्यार्थी:शिक्षक अनुपात(सामुदायिक विद्यालय) | १:१०२     | १:८० | १:६५ | १:४५ |   |

| क्र.स. | सूचक   | आधार वर्ष | २०८४ | २०८७ | २०९२ | स्रोत |
|--------|--|-----------|------|------|------|-------|
|        |  | २०८२      |      |      |      |       |
| ५.४    | माध्यमिक तह (कक्षा ९-१०) मा विद्यार्थी:शिक्षक अनुपात(सामुदायिक विद्यालय) | १:६०      | १:५५ | १:५० | १:४५ | १:४५  |
| ५.५    | माध्यमिक तह (कक्षा९-१२) मा विद्यार्थी:शिक्षक अनुपात                      | १:७२      | १:६० | १:५५ | १:५० | १:४५  |

## परिच्छेद ३

### विद्यालय शिक्षा क्षेत्रका मुख्य उपक्षेत्र

## ३.१ प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षा

### ३.१.१ परिचय:

नेपालको संविधानको धारा ३९ (३) मा प्रत्येक बालबालिकालाई प्रारम्भिक बालविकास तथा बाल सहभागिताको हक हुनेछ भनी उल्लेख गरिनु र शिक्षा ऐन २०२८ को नवौँ संशोधनले बालविकास र शिक्षालाई विद्यालय शिक्षाकै अङ्गको रूपमा मान्यता दिनुले यसको आवश्यकता र महत्व थप पुष्टि भएको छ। बालबालिकाको शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं नैतिक सृजनात्मक पक्षको विकासमा सघाउँदै उनीहरूलाई आधारभूत शिक्षाको लागि तयार गर्ने उद्देश्यले सञ्चालित यो कार्यक्रम विद्यालय शिक्षाको पहिलो पाइला भएकोले पनि यसलाई सर्वसुलभ र गुणस्तरीय बनाउनु आवश्यक भएको छ। यसै कुरालाई मध्यनजर गरेर यस पालिकाले निर्माण गरेको यस शिक्षा योजनामा प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षालाई व्यवस्थित र गुणस्तरीय बनाउने कार्यक्रमहरू समावेश गरिएको छ।

### ३.२.१ वर्तमान अवस्था

पञ्चालझरना गाउँपालिकामा हाल जम्मा ४३ वटा प्रारम्भिक बालविकास केन्द्र सञ्चालनमा रहेका छन् जसमा सामुदायिकतर्फ ४३ र संस्थागत विद्यालयतर्फ ० केन्द्र रहेका छन्। यी केन्द्रहरूमा कुल ८२१ जना बालबालिका अध्ययनरत रहेका छन् जसमध्ये ४१० जना छात्र र ४११ जना छात्रा रहेका छन्। यस उमेर समूहको अनुमानित कुल जनसंख्या ८४० रहेको आधारमा सहजै देखिने भर्नादर ९७.७३ प्रतिशत रहेको देखिन्छ, जसले पहुँच विस्तार भएको संकेत गरे पनि शतप्रतिशत लक्ष्य अझै हासिल हुन बाँकी रहेको देखाउँछ।

बालविकास कार्यक्रम पूरा गरी कक्षा १ मा प्रवेश गर्ने बालबालिकाको संख्या ४९५ रहेको छ। यसमध्ये एक वर्षको बालविकास अनुभवसहित कक्षा १ मा जाने बालबालिकाको ९७.६ प्रतिशत रहेको छ। अनुभवसहित कक्षा १ मा प्रवेश गरेका बालबालिकाको सिकाइ उपलब्धि र कक्षागत अनुकूलन क्षमता तुलनात्मक रूपमा राम्रो देखिएको छ, जसले बालविकास कार्यक्रमको प्रभावकारिता पुष्टि गर्दछ।

समावेशी पहुँचको दृष्टिले दलित बालबालिकाको संख्या १४१७ (३१.५३ प्रतिशत), जनजाति बालबालिकाको संख्या १० (०.२२ प्रतिशत) र अपाङ्गता भएका बालबालिकाको संख्या ८० रहेको छ। यी तथ्याङ्कले समावेशी सहभागिता बढ्दो क्रममा रहेको देखाए पनि जनसंख्या अनुपातअनुसार अझ सुधारको आवश्यकता रहेको देखिन्छ। विशेषगरी

अपाङ्गता भएका बालबालिकाका लागि सहायक सामग्री, पहुँचयोग्य भौतिक संरचना तथा प्रशिक्षित जनशक्ति व्यवस्था सुदृढ गर्नुपर्ने आवश्यकता देखिन्छ।

बालविकासका न्यूनतम सक्षमता मापदण्ड पूरा गरेका संस्थागत विद्यालयको संख्या ० रहेको छ। न्यूनतम सक्षमता अन्तर्गत सुरक्षित कक्षाकोठा, खेलमैत्री सिकाइ सामग्री, प्रशिक्षित सहजकर्ता, बालमैत्री शौचालय र सुरक्षित खानेपानी जस्ता सूचकहरू समावेश गरिएका छन्। हाल यी मापदण्ड पूर्ण रूपमा कार्यान्वयन भएका केन्द्रहरूको अनुपात सीमित रहेको देखिएकाले गुणस्तर सुधारका लागि थप लगानी र अनुगमन आवश्यक देखिन्छ।

समग्रमा हेर्दा पचालझरना गाउँपालिकामा प्रारम्भिक बालविकासको पहुँच विस्तार सन्तोषजनक देखिए पनि गुणस्तर, समावेशिता र न्यूनतम सक्षमता सुनिश्चिततामा अझ रणनीतिक हस्तक्षेप आवश्यक रहेको निष्कर्ष निकाल्न सकिन्छ।

## तालिका १

### प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षासँग सम्बन्धित विवरण

| जम्मा बालविकास |        | जम्मा बालबालिका |        |       | दलित बालबालिका |        |       | अपाङ्गता भएका बालबालिका |        |       |
|----------------|--------|-----------------|--------|-------|----------------|--------|-------|-------------------------|--------|-------|
| प्रकार         | संख्या | छात्र           | छात्रा | जम्मा | छात्र          | छात्रा | जम्मा | छात्र                   | छात्रा | जम्मा |
| सामुदायिक      | ४३     | ४१०             | ४११    | ८२१   | १३९            | १३१    | २७०   | ६                       | १२     | १८    |
| संस्थागत       | -      | -               | -      | -     | -              | -      | -     | -                       | -      | -     |
| जम्मा          | ४३     | ४१०             | ४११    | ८२१   | १३९            | १३१    | २७०   | ६                       | १२     | १८    |

पचालझरना गाउँपालिकाले प्रारम्भिक बाल विकास र शिक्षालाई बालबालिकाको नैसर्गिक अधिकारको रूपमा लिएको छ। यसले ५ वर्ष मुनिका बालबालिकाको शारीरिक, मानसिक, सामाजिक र सर्वाङ्गीण विकास सुनिश्चित गर्ने आधार तयार गर्दछ। गाउँपालिकाले प्रारम्भिक बाल विकासलाई विद्यालय शिक्षासँग पूर्ण रूपमा एकीकृत गरी प्रत्येक विद्यालयमा अनिवार्य गर्ने नीति लागू गरेको छ, जसले बालबालिकाको सिकाइको निरन्तरता र गुणस्तर सुनिश्चित गर्दछ। हाल पचालझरना गाउँपालिकामा बाल विकास केन्द्रहरूमा भौतिक र शैक्षिक पूर्वाधारको कमी देखिएको छ। धेरै केन्द्रहरूमा बालमैत्री वातावरण, खेल सामग्री, श्रव्य—दृश्य सिकाइ सामग्री र पर्याप्त शिक्षण उपकरणको अभाव रहेको छ। यद्यपि, गाउँपालिकाले यी केन्द्रहरूको स्तरोन्नति गर्ने योजना बनाएको छ र निजी क्षेत्रसँगको सहकार्यमा नयाँ केन्द्र स्थापना गर्ने सम्भावनाहरूलाई आफ्नो सबल पक्षको रूपमा लिएको छ।

### ३.१.३ उदेश्यः

- (क) बालबालिकाको सर्वाङ्गीण विकास सुनिश्चित गर्न प्रारम्भिक बाल विकास र शिक्षाको प्रभावकारी व्यवस्थापन गर्नु।
- (ख) सबै बालबालिकालाई समावेशी, पहुँचयोग्य र गुणस्तरीय प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध गराउनु।
- (ग) सबै बालबालिकालाई समावेशी, पहुँचयोग्य र गुणस्तरीय प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध गराउनु।
- घ) ELDS अनुसार बालबालिकाको सिकाइको न्यूनतम मापदण्ड सुनिश्चित गर्ने।
- ङ) शिक्षकलाई ELDS आधारित पाठ योजना, मूल्यांकन र खेलाधारित सिकाइ विधिमा दक्ष बनाउने।
- च) प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षामा सबै बालबालिकाहरूको समतामूलक पहुँच सुनिश्चित गर्नु।
- छ) स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा र सुरक्षा क्षेत्रबीच सहकार्य गर्दै बहुक्षेत्रीय प्रारम्भिक बालविकास सेवा प्रभावकारी बनाउने।
- ज) सबै बालबालिकाहरूलाई प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षाको अनुभव सहित कक्षा १ को लागि तयार पार्नु।

### ३.१.४ रणनीतिहरू

- (क) सबै बालबालिकाको पहुँचका लागि सङ्घीय सरकारले निर्धारण गरेको मापदण्डअनुसार प्रारम्भिक बालविकास तथा शिक्षा सञ्चालन गर्ने,
- (ख) बाल विकास र शिक्षालाई विद्यालय शिक्षाको अभिन्न अङ्ग बनाउने।
- (ग) निजी क्षेत्रलाई समेत केन्द्र स्थापना र सञ्चालनमा प्रोत्साहित गर्दै न्यूनतम मापदण्डमा नियमित निगरानी र मूल्याङ्कन गर्ने।
- (घ) अति विपन्न, दलित, सीमान्तकृत र अपाङ्ग बालबालिकालाई पहुँच सुनिश्चित गर्दै निःशुल्क भर्ना अभियान सञ्चालन।
- (ङ) कार्यक्रमको नक्साङ्कन, पुनर्वितरण र आवश्यकता अनुसार नयाँ केन्द्र स्थापना गर्ने,
- (च) जटिल भौगोलिक क्षेत्रमा बसोबास गर्ने, लोपोन्मुख तथा सिमान्तकृत समुदायका बालबालिकाका लागि विभिन्न नमूनाहरू विकास गरी पहुँच सुनिश्चित गर्ने,
- (छ) पाठ्यक्रमको परिमार्जन तथा अनुकूलन गर्ने,
- (ज) लागत सहभागिता अभिवृद्धि गर्ने,
- (झ) कार्यक्रमको प्रभावकारिता वृद्धिका लागि परिवार, समुदाय, गैर सरकारी सङ्घ संस्था, निजी क्षेत्र र विद्यालयहरूलाई जिम्मेवार बनाउने,
- (ञ) ऐन र कार्यविधिमा उल्लेख भए बमोजिमको मापदण्ड पूरा गर्ने,
- (ट) कार्यरत जनशक्तिको वृत्ति विकास तथा क्षमता विकास गर्ने,
- (ठ) स्थानीय तहको आवश्यकतामा आधारित हुने गरी प्रारम्भिक बाल विकास तथा शिक्षाका लागि सुपरिवेक्षण र सहजीकरणका लागि थप छुट्टै अधिकार सम्पन्न संयन्त्र बनाउने,
- (ड) पाठ्यक्रम र मापदण्ड तथा ढाँचाहरूलाई समयानुकूल स्थानीयकरणकालागि समायोजन तथा परिमार्जन गर्ने,

- (ढ) भौगोलिक विकटता र अपाङ्गता भएका तोकिएका उमेर समूहलाई सम्बोधन गर्ने गरी नीतिगत व्यवस्था गर्ने।
- ण) प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षामा सबै बालबालिकाहरूको समतामूलक सहभागिता सुनिश्चित गर्नको लागि निर्धारित न्यूनतम मापदण्ड, पाठ्यक्रम, प्रारम्भिक सिकाइ तथा विकास मापदण्ड र ढाँचा अनुसार प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षा सञ्चालन गर्ने ।
- त) प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षामा सबै बालबालिकाहरूको समतामूलक सहभागिता सुनिश्चित गर्नको लागि निर्धारित न्यूनतम मापदण्ड, पाठ्यक्रम, प्रारम्भिक सिकाइ तथा विकास मापदण्ड र ढाँचा अनुसार प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षा सञ्चालन गर्ने ।
- थ) बालविकासको शैक्षिक गुणस्तर सुनिश्चित गर्न र सिकाइको सुदृढीकरणका लागि शिक्षकको क्षमता विकास, पाठ्यक्रम प्रबोधिकरण, अभिभावक सचेतिकरण जस्ता कार्यक्रमहरू कार्यान्वयन गर्ने ।
- द) कक्षा-अनुसार ELDS सूचकहरू विद्यालयमै अभिमुखिकरण र प्रयोग गर्ने । अभिभावक, शिक्षक र समुदायलाई ELDS का सूचकहरूमा अभिमुखिकरण गर्ने ।
- ध) बच्चाको सिकाइ स्तर पहिचान गरी वयक्तिक सिकाइ योजना ( Individual Learning Plan (ILP)) तयार गर्ने ।
- न) ELDS आधारित पाठ योजना र मूल्यांकनमा दक्ष बनाउने र खेलमा आधारित सिकाइ विधिको प्रयोग गर्ने
- प) विद्यालयमा पोषणयुक्त टिफिन, नियमित स्वास्थ्य परीक्षण, deworming र स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का साथमा स्वस्थ बानी सुरक्षित खानेपानी, हात धुने, सरसफाइ सम्बन्धि गतिविधि र आधारभूत संरचना विस्तार गर्ने ।

### ३.१.५ उपलब्धि, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य निर्धारण

#### (क) अपेक्षित उपलब्धि:

- i. पचालझरना गाउँपालिकामा प्रारम्भिक बालविकास तथा शिक्षा उमेरका सबै बालबालिकालाई गुणस्तरीय प्रारम्भिक बालविकास तथा शिक्षाको अवसर सुनिश्चित भएको हुनेछ ।
- ii. यस अन्तर्गत लक्षित उमेर समूहका सबै बालबालिकालाई कम्तीमा एक वर्षको प्रारम्भिक बालविकास तथा शिक्षामा सहज, समावेशी र समान पहुँच उपलब्ध हुनेछ ।
- iii. सबै बालबालिकाले प्रारम्भिक बालविकास तथा शिक्षाको पूर्ण अनुभव हासिल गरी आवश्यक सक्षमता विकासपछि कक्षा १ मा प्रवेश गर्ने अवसर प्राप्त गर्नेछन्, जसले उनीहरूको सिकाइको आधार सुदृढ भई दीर्घकालीन शैक्षिक सफलतामा सकारात्मक प्रभाव पार्नेछ ।
- iv. बाल शिक्षकहरू कम्तीमा बाल मनोविज्ञानमा आधारित तालिम पास प्रविणता प्रमाण पत्र तह वा साविकको उच्च माध्यमिक तह उत्तिर्ण गरेको हुनेछन ।
- v. विद्यालयमा भर्ना भएका बालबालिकाले ELDS अनुसार सिकाइको न्यूनतम मापदण्ड पूरा गर्न सुरु गरेका हुनेछन ।
- vi. भाषा, गणित, सामाजिक—भावनात्मक, सृजनात्मक कला, शारीरिक विकास लगायत ६ डोमेनमा बालबालिकाको सिकाइ स्तर वृद्धि भै बालबालिका कक्षामा सक्रिय सहभागिता गर्न थाल्नेछन ।

- vii. बालबालिकाको स्वास्थ्य, पोषण र WASH संयोजन प्रभावकारी हुनुको साथै ELDS आधारिक मूल्यांकन र अनुगमन प्रणाली स्थापना भएको हुनेछ ।
- viii. बालमैत्री, सुरक्षित र स्वच्छ सिकाइ वातावरणमा बालबालिकाको उपस्थिति र सिकाइ परिणाम सुधार भएको हुने छ ।
- ix. अभिभावकहरूमा स्वास्थ्य, पोषण र बालविकासका सूचकहरूबारे सचेतना वृद्धि भइ पोषण, स्वास्थ्य परीक्षण र सरसफाइ सुधारले बालबालिकाको विकास सूचकमा सकारात्मक परिवर्तन आएको हुने छ ।

(ख) प्रमुख क्रियाकलापहरू तथा लक्ष्य निर्धारण

| क्र.सं. | क्रियाकलाप विस्तृतिकरण   | इकाइ              | लक्ष्य  | भौतिक लक्ष्य (५ वर्ष) |         |         |         |         |         |
|---------|--|-------------------|---------|-----------------------|---------|---------|---------|---------|---------|
|         |  |                   |         | २०८३                  | २०८४    | २०८५    | २०८६    | २०८७    | जम्मा   |
| १       | प्रारम्भिक बालविकासका सहजकर्ताहरूको पारिश्रमिक   | जना               | ४३      | ४३                    | ४३      | ४३      | ४३      | ४३      | ४३      |
| २       | प्रारम्भिक बालविकासमा न्यूनतम सक्षमता विकास गर्न प्रति विद्यार्थी एकाइ लागतका आधारमा अनुदान                                      | बाल विकास केन्द्र | निरन्तर | निरन्तर               | निरन्तर | निरन्तर | निरन्तर | निरन्तर | निरन्तर |
| ३       | प्रारम्भिक बालविकास तथा शिक्षाका न्यूनतम मापदण्ड प्रबोधिकरण गर्ने  | पटक               | ५       | १                     | १       | १       | १       | १       | ५       |
| ४       | प्रारम्भिक बालविकास तथा शिक्षा केन्द्रहरूको नक्सामा नक्साङ्कन तथा पुनर्वितरण   | पटक               | २       | ०                     | १       | ०       | ०       | १       | २       |
| ५       | बाल विकास केन्द्रमा छुट्टै सुरक्षित तथा अपाङ्गमैत्री शौचालयको व्यवस्था गर्ने   | वटा               | ४३      | ३                     | १०      | १०      | १०      | १०      | ४३      |
| ६       | बालविकास केन्द्रका सहजकर्ताका लागि क्षमताविकास कार्यक्रम सञ्चालन   | पटक               | ५       | १                     | १       | १       | १       | १       | ५       |
| ७       | पोषणयुक्त दिवा खाजाको व्यवस्था गर्ने   | निरन्तर           | निरन्तर | निरन्तर               | निरन्तर | निरन्तर | निरन्तर | निरन्तर | निरन्तर |
| ८       | स्थानीय भाषालाई प्राथमिकता दिई आवश्यकताअनुसार स्थानीय भाषाको प्रयोग  | आवश्यकता अनुसार   | निरन्तर | निरन्तर               | निरन्तर | निरन्तर | निरन्तर | निरन्तर | निरन्तर |
| ९       | अभिभावक शिक्षा कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने   | पटक               | ५       | १                     | १       | १       | १       | १       | ५       |
| १०      | शैक्षिक सूचना व्यवस्थापन प्रणाली   | निरन्तर           |         |                       |         |         |         |         | ०       |
| ११      | प्रारम्भिक बालविकास सहजकर्ताहरूको सेवा तथा सुविधामा वृद्धि गर्ने   | पटक               | ५       | १०%                   | १०%     | १०%     | १०%     | १०%     | ५०%     |
| १२      | नमुना प्रारम्भिक बालविकास सहजकर्तालाई पुरस्कारको व्यवस्था  | जना               | ४३      | ५                     | ७       | १०      | १२      | ९       | ४३      |
| १३      | प्रारम्भिक बालविकास सहजकर्ताको थप कोटाको व्यवस्थापन  | जना               | ५       | १                     | १       | १       | १       | १       | ५       |
| १४      | राष्ट्रिय न्यूनतम मापदण्ड अनुसार प्रत्येक केन्द्रमा पोषण, खेल मैदान, सयन कक्ष, श्रव्य-दृश्य सामग्री र बालमैत्री वातावरण निर्माण। | ४३                | ४३      | ४३                    | ४३      | ४३      | ४३      | ४३      | ४३      |

## ३.२ आधारभूत शिक्षा

### ३.२.१ परिचय

नेपालको संविधानले आधारभूत शिक्षालाई मौलिक हकका रूपमा सुनिश्चित गरेको छ। संविधानको धारा ३१ अनुसार प्रत्येक नागरिकलाई आधारभूत तहसम्मको शिक्षा अनिवार्य र निःशुल्क प्राप्त गर्ने अधिकार छ। यसले राज्यलाई सबै बालबालिकाका लागि समान, समावेशी र गुणस्तरीय शिक्षा उपलब्ध गराउने दायित्व प्रदान गरेको छ। राष्ट्रिय शिक्षा नीतिले आधारभूत शिक्षालाई १-८ कक्षासम्म परिभाषित गर्दै समावेशी, जीवनोपयोगी तथा सीपमुखी शिक्षामा जोड दिएको छ। नीति अनुसार सबै बालबालिकाको पहुँच, सहभागिता, निरन्तरता र सिकाइ उपलब्धि सुनिश्चित गर्नु राज्यको प्राथमिकता हो। त्यसैगरी अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा ऐनले आधारभूत शिक्षा अनिवार्य र निःशुल्क हुने स्पष्ट व्यवस्था गरेको छ। यस ऐनले अभिभावकलाई बालबालिकालाई विद्यालय पठाउने जिम्मेवारी तोकेको छ भने राज्यलाई आवश्यक पूर्वाधार, शिक्षक र स्रोत-साधन उपलब्ध गराउने कानुनी दायित्व दिएको छ। यसरी संविधान, नीति र ऐनले आधारभूत शिक्षालाई अधिकारका रूपमा स्थापित गर्दै कार्यान्वयनका लागि स्पष्ट मार्गनिर्देशन गरेका छन्।

### ३.२.२ वर्तमान अवस्था

पचालझरना गाउँपालिकाका सामुदायिक विद्यालयहरूमा आधारभूत शिक्षा प्रवाहको विश्लेषण गर्दा, हाल विद्यार्थी संख्या ४४९४, शिक्षक दरबन्दी ११३ र शिक्षक विद्यार्थी अनुपात १:३९.७६ रहेको देखिन्छ। विद्यार्थीमध्ये दलित १४१७, जनजाति १० र अपाङ्गता भएका बालबालिका ८० रहेका छन्। केही विद्यालयमा पूर्वाधार, जस्तै कक्षा कोठा शौचालय खानेपानी खेलमैदान र सूचना तथा सञ्चार प्रविधि पर्याप्त छैन। यी चुनौतीहरूले गुणस्तरीय शिक्षा र समावेशी वातावरणको सुनिश्चिततामा प्रभाव पार्न सक्छ। तथ्यानुसार सुधार, स्रोत व्यवस्थापन र शिक्षक तालिमको आवश्यकता देखिन्छ। यस्ता कमजोरीहरूको सुधार, शिक्षक उपलब्धता सुनिश्चित गर्नु र समग्र सिकाइ वातावरण सुदृढ पार्नु आवश्यक छ।

### तालिका २

#### आधारभूत शिक्षासँग सम्बन्धित विवरण

| जम्मा विद्यालय संख्या |        | जम्मा विद्यार्थी |        |       | दलित विद्यार्थी |        |       | अपाङ्गता भएका विद्यार्थी |        |       |
|-----------------------|--------|------------------|--------|-------|-----------------|--------|-------|--------------------------|--------|-------|
| प्रकार                | संख्या | छात्र            | छात्रा | जम्मा | छात्र           | छात्रा | जम्मा | छात्र                    | छात्रा | जम्मा |
| सामुदायिक             | १४     | १७७२             | १९६८   | ३७४०  | ४४७             | ४८६    | ९३३   | २७                       | २६     | ५३    |
| संस्थागत              | -      | -                | -      | -     | -               | -      | -     | -                        | -      | -     |
| जम्मा                 | १४     | १७७२             | १९६८   | ३७४०  | ४४७             | ४८६    | ९३३   | २७                       | २६     | ५३    |

पचालझरना गाउँपालिकाले आधारभूत शिक्षालाई समतामूलक, पहुँचयोग्य र गुणस्तरीय बनाउने नीति अवलम्बन गरेको छ। पचालझरना गाउँपालिकामा केही बालबालिका अझै विद्यालय बाहिर रहेका छन्। सामुदायिक विद्यालयहरूमा स्वच्छ खानेपानी, समावेशी शौचालय, पुस्तकालय, खेलमैदान तथा सूचना प्रविधि (इन्टरनेट, कम्प्युटर ल्याब) जस्ता पूर्वाधारको अभाव देखिएको छ। विषयगत शिक्षकको कमी, परम्परागत शिक्षण पद्धति तथा सीमित सिकाइ सामग्रीका कारण शिक्षाको गुणस्तर सुधारमा चुनौती रहेको छ।

### ३.२.३ उद्देश्य

- (क) आधारभूत शिक्षालाई सबै बालबालिकाका लागि पहुँचयोग्य, समतामूलक, निःशुल्क र अनिवार्य बनाउनु
- (ख) सिकाइ उपलब्धि र शिक्षाको गुणस्तरमा सुधार गर्नु
- (ग) आधारभूत विद्यालयको भौतिक तथा शैक्षिक वातावरण बालमैत्री, समावेशी र सुरक्षित बनाउनु

### ३.२.४ रणनीतिहरू

- (क) कुनै पनि बालबालिका शिक्षाबाट वञ्चित नहोस् भन्ने उद्देश्यले विशेष भर्ना तथा पुनःभर्ना अभियान सञ्चालन गर्ने
- (ख) विद्यालय बाहिर रहेका विद्यालय उमेरका बालबालिकाहरूको यथार्थ विवरण सङ्कलन गरी शिक्षामा पहुँच सुनिश्चित गर्ने व्यवस्था मिलाउने
- (ग) अनिवार्य तथा निःशुल्क आधारभूत शिक्षा कार्यान्वयनका लागि आवश्यक कानुनी व्यवस्था तथा कार्यविधि तर्जुमा गर्ने
- (घ) अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षाका लागि आवश्यक आर्थिक तथा अन्य स्रोतको सुनिश्चितता गर्ने
- (ङ) विद्यालय नक्साङ्कन गर्ने तथा विद्यालयहरूको पुनर्वितरण र समायोजन गरी शैक्षिक पहुँच सन्तुलित बनाउने
- (च) शिक्षक दरबन्दी पुनर्वितरण तथा समायोजन गरी विषयगत तथा कक्षागत शिक्षकको पर्याप्तता सुनिश्चित गर्ने
- (छ) सामुदायिक विद्यालयहरूको गुणस्तर सुधार गरी तिनलाई प्रतिस्पर्धी, प्रभावकारी र विश्वसनीय बनाउने
- (ज) शिक्षण—सिकाइ विधिमा आवश्यक परिमार्जन गरी विद्यार्थीकिन्द्रित, क्रियाकलाप आधारित तथा व्यवहारमुखी पद्धति अवलम्बन गर्ने
- (झ) कक्षा ३ सम्म आधारभूत कक्षा शिक्षण प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गर्ने
- (ञ) न्यूनतम सिकाइ उपलब्धि हासिल गराउन आवधिक रूपमा सिकाइको मूल्याङ्कन गर्ने
- (ट) मूल्याङ्कनलाई शिक्षण—सिकाइ प्रक्रियाको अभिन्न अङ्गका रूपमा प्रयोगमा ल्याउने
- (ठ) कक्षाकोठामा आधारित मूल्याङ्कन प्रणाली सुदृढ गर्न क्षमता विकास कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने
- (ड) विद्यार्थीलाई आवश्यक शैक्षिक सहयोग उपलब्ध गराई सिकाइ उपलब्धिमा सुधार ल्याउने
- (ढ) अन्तरसम्बन्धित विषयवस्तुलाई एकीकृत गरी सिकाइ सामग्री, विधि तथा क्रियाकलापमा सुधार गर्ने
- (ण) दैनिक जीवनसँग सम्बन्धित व्यवहारिक सिपहरूलाई सिकाइ क्रियाकलापमा समावेश गर्ने
- (त) शिक्षकलाई प्रधानाध्यापक तथा प्रधानाध्यापकलाई स्थानीय तहप्रति जवाफदेही बनाउने

- (थ) आवश्यक शिक्षक तालिम, तयारी तथा प्रोत्साहनका कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने
- (द) शिक्षक विकास तथा सहायता प्रणालीलाई व्यवस्थित गर्ने
- (ध) शिक्षामा कार्यरत सबै जनशक्तिको क्षमता विकास र उत्प्रेरणा व्यवस्थापन गर्ने
- (न) विद्यालय तथा शैक्षिक निकायको शासकीय र व्यवस्थापकीय पद्धतिमा सुधार गरी नतिजाप्रति जवाफदेहिता सुनिश्चित गर्ने
- (प) विद्यालयको कार्यसम्पादन तथा विद्यार्थीको सिकाइ उपलब्धिको नियमित परीक्षण गरी पारदर्शिता र जवाफदेहिता सुनिश्चित गर्ने
- (फ) विद्यालयहरूमा खानेपानी, शौचालय तथा सरसफाइको उचित प्रबन्ध सहित न्यूनतम भौतिक सुविधा सुनिश्चित गर्ने
- (ब) विद्यालयलाई बालमैत्री, समावेशी र सुरक्षित सिकाइ वातावरणयुक्त बनाउने
- (भ) सबै विद्यालयहरूमा प्राथमिकता प्राप्त न्यूनतम सक्षमता पूरा गराउने
- (म) विद्यार्थीको पोषण तथा स्वास्थ्यमा सुधार ल्याउने कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने
- (य) स्थानीय उत्पादनमा आधारित पौष्टिक तथा स्वस्थकर दिवा खाजाको प्रबन्धलाई व्यवस्थित गर्ने
- (र) विद्यालयमा आधारित शैक्षिक तथा मनोसामाजिक परामर्श सेवा उपलब्ध गराउने
- (ल) विद्यालय शिक्षालाई विविधताअनुकूल, समावेशी र समतामूलक बनाउन स्थानीय परिवेशअनुकूल सिकाइ क्रियाकलाप सञ्चालन गर्ने तथा भाषिक र सामाजिक—सांस्कृतिक विविधताको सम्मान गर्ने
- (व) विद्यालय शिक्षालाई प्रकोप, संकट तथा महामारीजस्ता परिस्थितिप्रति उत्थानशील बनाउने योजना तयार गरी कार्यान्वयन गर्ने
- (श) सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको प्रयोग विस्तार गरी शिक्षालाई आधुनिक, सहज र प्रभावकारी बनाउने

### ३.२.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य

#### (क) उपलब्धि

पञ्चालझरना गाउँपालिकामा आधारभूत शिक्षा सबै बालबालिकाका लागि पहुँचयोग्य, समतामूलक, निःशुल्क र अनिवार्य भएको हुनेछ। यसका साथै सिकाइ उपलब्धिमा वृद्धि भई शिक्षाको गुणस्तरमा सुधार भएको हुनेछ। आधारभूत विद्यालयहरूको भौतिक तथा शैक्षिक वातावरण बालमैत्री, समावेशी र सुरक्षित भएको सुनिश्चित गरिएको हुनेछ।

नतिजाको दृष्टिले, आधारभूत तहको खुद भर्नादर उच्च स्तरमा पुगेको हुनेछ। सबै विद्यालयले प्राथमिकता प्राप्त न्यूनतम सक्षमता (PMEC) पूरा गरेका हुनेछन् र आधारभूत तहको सिकाइ उपलब्धि \_\_\_ प्रतिशत पुगेको हुनेछ, जसले विद्यार्थीहरूको समग्र सिकाइ क्षमता र गुणस्तरीय शिक्षा सुनिश्चित गर्नेछ।

(ख) प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य:

| क्र.सं. | क्रियाकलाप विस्तृतिकरण   | इकाइ     | लक्ष्य          | भौतिक लक्ष (५ वर्ष) |      |      |      |      |       |
|---------|--|----------|-----------------|---------------------|------|------|------|------|-------|
|         |  |          |                 | २०८३                | २०८४ | २०८५ | २०८६ | २०८७ | जम्मा |
| १       | विद्यालय नक्शाङ्कन, पुनर्वितरण तथा समायोजन                               | पटक      | ८               |                     | २    | २    | २    | २    | ८     |
| २       | कक्षागत र विषयगत रूपमा शिक्षक दरबन्दी मिलान                              | जना      | आवश्यकता अनुसार |                     |      |      |      |      | ०     |
| ३       | विद्यालयको न्यूनतम भौतिक पुर्वाधार विकास                                 | कोठा     | २७              | ०                   | ७    | १०   | ०    | १०   | २७    |
| ४       | विद्यार्थीको सिकाइ उपलब्धि परीक्षण                                       | पटक      | ५               | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| ५       | आधारभूत तहका शिक्षक क्षमता विकास कार्यक्रम                               | जना      | ८४              | ४२                  | ४२   | ४२   | ४२   | ४२   | ८४    |
| ६       | आधारभूत विद्यालयमा सूचना प्रविधिको विस्तार                               | विद्यालय | २७              | २७                  | २७   | २७   | २७   | २७   | २७    |
| ७       | अपाङ्गता तथा विशेष अवस्थाका बालबालिकाहरुको लागि प्रोत्साहनमूलक कार्यक्रम | जना      | २५              | १                   | ५    | ५    | ५    | ५    | २५    |
| ८       | विद्यालय व्यवस्थापन तथा व्यवस्थित परीक्षा प्रणाली                        | विद्यालय | २७              | २७                  | २७   | २७   | २७   | २७   | २७    |
| ९       | शैक्षिक व्यवस्थापन सूचना प्रणालीको प्रयोग                                | विद्यालय | २७              | २७                  | २७   | २७   | २७   | २७   | २७    |
| १०      | अभिभावक शिक्षा कार्यक्रम सञ्चालन   | विद्यालय | १४              | २७                  | २७   | २७   | २७   | २७   | २७    |
| ११      | विद्यार्थीहरुको लागि अतिरिक्त क्रियाकलाप सञ्चालन                         | पटक      | १०              | १०                  | १०   | १०   | १०   | १०   | १०    |
| १२      | उत्कृष्ट शिक्षकलाई पुरस्कारको व्यवस्था गर्ने                             | जना      | १५              | १५                  | १५   | १५   | १५   | १५   | १५    |
| १३      | आधारभूत तहमा शिक्षण सिकाइ अनुदानमा कार्यरत शिक्षकको तलब व्यवस्थापन       | जना      | २२              | २३                  | २४   | २५   | २६   | २७   | २८    |
| १४      | विद्यालय कर्मचारीको थप पारिश्रमिक व्यवस्थापन                             | जना      | ३७              | ३७                  | ३७   | ३७   | ३७   | ३७   | ३७    |
| १५      | विद्यालय सुधार योजना निर्माण एवम् कार्यान्वयन                            | विद्यालय | २७              | २७                  | २७   | २७   | २७   | २७   | २७    |

## ३.३ माध्यमिक शिक्षा

### ३.३.१ परिचय

नेपालको वर्तमान संविधानले माध्यमिक तहको शिक्षा निःशुल्क प्राप्त गर्ने हक स्थापित गरेको छ भने अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा ऐन २०७५ ले पनि प्रत्येक नागरिकालाई माध्यमिक शिक्षा प्रदान गर्ने दायित्व राज्यको हुने उल्लेख गरेको छ। राष्ट्रिय शिक्षा नीति २०७६ ले गुणस्तरिय माध्यमिक शिक्षामा सबैको निःशुल्क पहुँच सुनिश्चित गर्दै यसबाट सिर्जनशिलता रचनात्मकता, अध्ययनशिलता, सकारात्मक चिन्तन र सदाचार जस्ता गुण सहितको प्रतिस्पर्धी सिपयुक्त एवम् उत्पादनशिल जनशक्ति तयार गर्ने उद्देश्य राखेको छ ।

श्रमप्रति सकारात्मक भावना भएका सिपमूलक जनशक्ति उत्पादन गर्ने माध्यमिक तहको शिक्षालाई साधारण, व्यवसायिक र संस्कृत गरी तीन धारमा बाँडिएको छ। विद्यालय क्षेत्र विकास कार्यक्रमको कार्यान्वयन सँगै कक्षा (९-१२) मा प्राविधिक तथा व्यवसायिकधारको सुरुवात गरिएको छ । यो तहको शिक्षा कामको संसाधन प्रवेश गर्न सक्ने सिप सहितको नागरिक विकास तथा उच्च शिक्षाको लागि तयारीको आधार पनि हो । नेपालको शिक्षाको राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप, २०७६ अनुसारको पाठ्यक्रमको कार्यान्वयन वि.स. २०७७ बाट प्रारम्भ भएको छ । विज्ञान प्रविधि तथा नवप्रवर्तन नीति २०७६ ले विद्यालय तहदेखिनै परम्परागत मौलिक ज्ञान, प्रविधि तथा सिपका वारेमा अध्ययन अध्यापन गरी वैज्ञानिक चिन्तन तथा सिर्जनशिलता अभिवृद्धि गर्ने रणनीति लिएको छ ।

### ३.३.२ वर्तमान अवस्था

पचालझरना गाउँपालिकाका सामुदायिक विद्यालयहरूमा माध्यमिक शिक्षा प्रवाहको विश्लेषण गर्दा, हाल विद्यार्थी संख्या ७५४, शिक्षक दरबन्दी १५ र शिक्षक विद्यार्थी अनुपात ५०:१ रहेको देखिन्छ। विद्यार्थीमध्ये दलित २१२, जनजाति ४ र अपाङ्गता भएका बालबालिका ९ रहेका छन्। केही विद्यालयमा पूर्वाधार, जस्तै कक्षा कोठा शौचालय खानेपानी खेलमैदान र सूचना तथा सञ्चार प्रविधि पर्याप्त छैन। यी चुनौतीहरूले गुणस्तरीय शिक्षा र समावेशी वातावरणको सुनिश्चिततामा प्रभाव पार्न सक्छ। तथ्यानुसार सुधार, स्रोत व्यवस्थापन र शिक्षक तालिमको आवश्यकता देखिन्छ। यस्ता कमजोरीहरूको सुधार, शिक्षक उपलब्धता सुनिश्चित गर्नु र समग्र सिकाइ वातावरण सुदृढ पार्नु आवश्यक छ।

### तालिका ३

#### माध्यमिक शिक्षासँग सम्बन्धित विवरण

| जम्मा विद्यालय संख्या |        | जम्मा विद्यार्थी |        |       | दलित विद्यार्थी |        |       | अपाङ्गता भएका विद्यार्थी |        |       |
|-----------------------|--------|------------------|--------|-------|-----------------|--------|-------|--------------------------|--------|-------|
| प्रकार                | संख्या | छात्र            | छात्रा | जम्मा | छात्र           | छात्रा | जम्मा | छात्र                    | छात्रा | जम्मा |
| सामुदायिक             | १०     | ४१०              | ३४४    | ७५४   | ११६             | ९६     | २१२   | ६                        | ३      | ९     |
| संस्थागत              | -      | -                | -      | -     | -               | -      | -     | -                        | -      | -     |
| जम्मा                 | १०     | ४१०              | ३४४    | ७५४   | ११६             | ९६     | २१२   | ६                        | ३      | ९     |

नेपालको संघीय संरचना र शैक्षिक नीतिअनुसार कक्षा ९-१२ लाई माध्यमिक शिक्षा मानिएको पचालझरना गाउँपालिकाले माध्यमिक शिक्षालाई सक्षम, कर्मठ, नैतिकवान र पौरखी मानव स्रोत उत्पादन गर्ने आधारका रूपमा परिभाषित गरेको छ। गाउँपालिकाको साक्षरता दर उच्च भए पनि माध्यमिक तहमा पहुँच र गुणस्तर सुधारको आवश्यकता रहेको छ। विषयगत शिक्षकको अभाव, विज्ञान तथा कम्प्युटर प्रयोगशालाको कमी र इन्टरनेट सुविधा अपर्याप्त रहेको छ भनेकेही विद्यालय अझै ०+२ मोडेलमा सञ्चालन भइरहेका र पूर्ण माध्यमिक संरचनामा रूपान्तरण गर्नुपर्ने अवस्था रहेको छ।

### ३.३.३ उद्देश्य

- क) माध्यमिक शिक्षामा सबैको पहुँच तथा सहभागिता सुनिश्चित गर्नु,
- ख) माध्यमिक शिक्षाको सान्दर्भिकता र गुणस्तरमा सुधार गर्नु
- ग) विद्यालयहरूको भौतिक तथा शैक्षिक वातावरण बालमैत्री, समावेशी, र सुरक्षित बनाउनु

### ३.३.४ रणनीतिहरू

- क) विद्यालयहरूको नक्सानुसार तथा संरचनागत सुधार गरी पूर्ण माध्यमिक संरचनामा रूपान्तरण गर्ने
- ख) सबै बालबालिकाको पहुँच सुनिश्चित गर्न विद्यालयहरूको पुनर्वितरण, समायोजन तथा आवश्यकता अनुसार स्थापना गर्ने
- ग) निःशुल्क माध्यमिक शिक्षामा पहुँच अभिवृद्धि गर्ने
- घ) माध्यमिक तहमा खुद भर्नादर र टिकाउदर बढाउने
- ङ) विपन्न तथा लक्षित समूहका लागि छात्रवृत्ति र विशेष अनुदानको व्यवस्था गर्ने
- च) विद्यार्थी प्रोत्साहन कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने
- छ) वैकल्पिक शिक्षाका कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने
- ज) सबै विद्यालयमा न्यूनतम सिकाइ वातावरण सुनिश्चित गर्ने
- झ) माध्यमिक तहमा दक्ष विषय शिक्षकको व्यवस्था गर्ने
- ञ) शिक्षक पेसागत विकास तथा सहयोगको व्यवस्था गर्ने
- ट) शिक्षकहरूका लागि अभिप्रेरणाका कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने
- ठ) शिक्षण—सिकाइ पद्धतिमा सुधार गर्ने
- ड) हरेक विद्यालयमा सूचना तथा सञ्चार प्रविधि विस्तार गर्ने

- ढ) स्मार्ट बोर्ड, इन्टरनेट तथा श्रव्य—दृश्य सामग्रीको प्रयोग विस्तार गर्ने
- ण) विद्यालयहरूलाई प्रकोप, सङ्कट तथा महामारीप्रति उत्थानशील बनाउने
- त) विज्ञान विषय अध्ययनका लागि आवश्यक पूर्वाधारसहितको व्यवस्था गर्ने
- थ) थप विद्यालयहरूमा विज्ञान संकाय विस्तारका लागि अध्ययन तथा लगानी गर्ने
- द) व्यावसायिक, कृषि, सङ्गीत वा आयुर्वेद जस्ता विशिष्टीकृत विद्यालय स्थापनाको सम्भाव्यता अध्ययन गर्ने
- ध) छानिएका विद्यालयलाई अङ्ग्रेजी माध्यमबाट नमूना विद्यालयका रूपमा विकास गर्ने
- न) यौन शिक्षा, आत्मरक्षा तथा मनोसामाजिक परामर्श कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने
- न) सदाचार, अनुशासन र समाजसेवा समेटिएको नैतिक शिक्षा कार्यक्रम लागू गर्ने
- प) सफल व्यक्तिहरूसँग अन्तरक्रिया तथा प्रेरणादायी कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने
- फ) सक्षम र उत्प्रेरित प्रधानाध्यापकको व्यवस्था गर्ने
- ब) आवधिक रूपमा सिकाइको मूल्याङ्कन गरी विद्यार्थीको सिकाइप्रति जवाफदेही प्रणाली विकास गर्ने

### ३.३.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य

#### (क) उपलब्धि

माध्यमिक शिक्षामा सबै बालबालिकाका लागि पहुँच सुनिश्चित हुने र शिक्षाको सान्दर्भिकता तथा गुणस्तरमा उल्लेखनीय सुधार आउने अपेक्षा गरिएको छ। यस अन्तर्गत सबै बालबालिकाले निःशुल्क माध्यमिक शिक्षा प्राप्त गर्ने अवसर पाउनेछन् र खुद भर्ना तथा टिकाउ दरमा वृद्धि हुनेछ। सबै माध्यमिक विद्यालयले आधारभूत मापदण्ड पुरा गर्नेछन्, जसले गुणस्तरीय शिक्षाको प्रवाह सुनिश्चित गर्नेछ र विद्यार्थीहरूको दक्षता, शारीरिक तथा मानसिक विकासमा योगदान पुऱ्याउनेछ।

(ख) प्रमुख क्रियाकलापहरू तथा लक्ष्य निर्धारण

| क्र.सं. | क्रियाकलाप विस्तृतिकरण   | इकाइ              | लक्ष्य | भौतिक लक्ष (५ वर्ष) |      |      |      |      |       |
|---------|--|-------------------|--------|---------------------|------|------|------|------|-------|
|         |  |                   |        | २०८३                | २०८४ | २०८५ | २०८६ | २०८७ | जम्मा |
| १       | छानिएका विद्यालयलाई अङ्ग्रेजी माध्यममा नमूना विद्यालयका रूपमा विकास गर्ने  | विद्यालय          | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| २       | निशुल्क माध्यमिक शिक्षाको कार्यान्वयनका लागि आवश्यक पर्ने कानून, कार्यविधि र निर्देशिका तयारी  | पटक               | ३      | १                   | ०    | १    | ०    | १    | ३     |
| ३       | माध्यमिक शिक्षामा विज्ञान प्रविधि, इन्जिनियरिङ, कला र गणित शिक्षा (STEAM) जस्ता विषयको सिकाइलाई अन्तर सम्बन्धित गर्ने र विज्ञान, गणित तथा कम्प्युटर विज्ञान विषय अध्ययनका लागि सुरुवात गर्ने | निरन्तर           |        |                     |      |      |      |      |       |
| ४       | विद्यालयमा न्यूनतम भौतिक पूर्वाधार विकास (भवन तथा कक्षाकोठा, फर्निचर, खानेपानी, खेलमैदान, घेरबार, शौचालय)  | माध्यमिक विद्यालय | १०     | २                   | २    | २    | २    | २    | १०    |
| ५       | सिकाइका लागि सूचना तथा सञ्चार प्रविधि लगायतका प्रविधिको प्रयोगमा वृद्धि गर्न आवश्यक संरचना र सामग्री व्यवस्थापन  | विद्यालय          | १०     | १०                  | १०   | १०   | १०   | १०   | १०    |
| ६       | विभिन्न किसिमका अपाङ्गता भएका विद्यार्थीहरूलाई सहयोग   | विद्यार्थी        | १५     | ३                   | ३    | ३    | ३    | ३    | १५    |
| ७       | आर्थिक रूपमा विपन्नका लागि ड्रेस तथा स्टेस्नरी सहयोग   | विद्यार्थी        | २५     | ५                   | ५    | ५    | ५    | ५    | २५    |
| ८       | उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार व्यवस्था गर्ने  | जना               | २५     | ५                   | ५    | ५    | ५    | ५    | २५    |
| ९       | शिक्षण सिकाइ अनुदानमा कार्यरत शिक्षक तलव भत्ता   | शिक्षक            | १०     | ११                  | १२   | १३   | १४   | १५   | १६    |
| १०      | स्मार्ट बोर्ड, इन्टरनेट र श्रव्य—दृश्य सामग्री प्रयोग विस्तार गर्ने  | विद्यालय          | १०     | २                   | २    | २    | २    | २    | १०    |
| ११      | सदाचार, अनुशासन, करुणा र समाजसेवा समेटिएको नैतिक शिक्षा कार्यक्रम लागू गर्ने   | पटक               | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| १२      | विद्यालय पुनर्वितरण, समायोजन र नयाँ स्थापना गरेर पहुँच सुधार गर्ने   | विद्यालय          | २      | ०                   | १    | ०    | १    | ०    | २     |
| १३      | शिक्षक दरबन्दी व्यवस्थापन, पेसागत विकास र अभिप्रेरणा कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने   | आ.अनुसार          |        |                     |      |      |      |      | ०     |
| १४      | शैक्षिक उपलब्धि न्यून भएका सामुदायिक विद्यालयका लागि अभिभावक सचेतनामूलक कार्यक्रम  | पटक               | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| १५      | विज्ञान प्रदर्शनी कार्यक्रम  | पटक               | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| १६      | सङ्गीत तथा नृत्य प्रतियोगिता   | पटक               | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| १७      | वादविवाद, हाजिरी जवाफ र वक्तृत्वकला प्रतियोगिता  | पटक               | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| १८      | निबन्ध र कविता लेखन प्रतियोगिता  | पटक               | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |

## ३.४ अनौपचारिक शिक्षा तथा आजिवन सिकाई

### ३.४.१ परिचय

औपचारिक पद्धति भन्दा बाहिर फरक समयमा विभिन्न उमेर समुहमा दिइने शिक्षा नै अनौपचारिक शिक्षा हो। यो एउटा निरन्तर प्रक्रिया जस्तो पनि हो। औपचारिक शिक्षा प्रणालीको संरचना भन्दा बाहिर मानवजीवनका लागि आवश्यक ज्ञान, सीप र प्रक्रियाका प्रशोधन गर्न जीवनप्रयन्त अर्थात आजीवन सिकाई प्रणाली अनौपचारिक शिक्षा हो। अनौपचारिक शिक्षा त्यस्तो सांस्कृतिक केन्द्र हो जहाँ सहभागीहरू आफ्ना जीवनमा आइपर्ने समस्याहरूको बारेमा छलफल र समाधानका उपायहरू खोजी निर्णय कार्यान्वयन गर्दैछन्। आफ्नो जीवनको इतिहास आफै लेख्छन्। तसर्थ सिकाई जीवन पद्धतिसंग जोडिएको हुन्छ। अनौपचारिक एवं आजीवन शिक्षाले समाजमा विद्यमान विभिन्न किसिमका समुहका लागि आफ्ना लक्ष्य बनाई सेवा प्रदान गर्दछ। निरक्षरका लागि साक्षरता साक्षरका लागि साक्षरोत्तर सिकाई अवसरका लागि स्तरबृद्धि शिक्षासंग सीप र आम्दानी जोड्दै शिक्षित समाजको विकासका लागि अनौपचारिक एवं आजीवन शिक्षाले काम गर्दछ।

संविधानले सुनिश्चित गरेको शिक्षा पाउने हक, राष्ट्रिय शिक्षा नीतिका सिद्धान्त, दिगो विकासको लक्ष्यमा समेत नागरिकले शिक्षा पाउने हकको कार्यान्वयन गर्न औपचारिक शिक्षासंग अनौपचारिक शिक्षा प्रणालीले समेत योगदान गर्दछ। विभिन्न सिकाई अवस्थाको आधारमा थप सिकाई अवसरको निर्माण गरी आजीवन सिकाई संस्कृतिको विकास गर्न आवश्यक छ। राष्ट्रिय शिक्षा नीति २०७६ ले नेपाललाई पूर्ण साक्षर मुलुक तुल्याइ अनौपचारिक वैकल्पिक परम्परागत र खुला शिक्षाको माध्यमबाट आजीवन सिकाई संस्कृतिका विकास गर्न, सबै प्रकारका अपाङ्गता भएका व्यक्तिको लागि गुणस्तरीय शिक्षाको पहुँच सुनिश्चित गरी जीवन पर्यन्त शिक्षाका माध्यमबाट मर्यादित जीवनयापन गर्न सक्षम र प्रतिस्पर्धी नागरिक तयार पार्ने निर्धारण गरेको छ।

### ३.४.२ वर्तमान अवस्था

गाउँपालिकामा १५ देखि ६० वर्ष सम्मका विद्यालयको पहुँच बाहिर रहेको व्यक्तिलाई लक्षित गरी विभिन्न वर्षमा सञ्चालन गरिएको साक्षरता कक्षाहरूबाट गाउँपालिकाको १५ देखि ६० वर्ष उमेरका जनसंख्यामा कुल साक्षरता ९७ प्रतिशत भन्दा माथि पुगेको छ। गाउँपालिकामा ३ वटा सिकाई केन्द्रहरू सञ्चालनमा छ। विभिन्न कारणले औपचारिक शिक्षाबाट वञ्चित भएका नागरिकहरूका लागि अनौपचारिक शिक्षा र वैकल्पिक सिकाइको अवसर सुनिश्चित गर्ने लक्ष्य राखेको छ। सबै उमेर समूहलाई शिक्षाको मूल प्रवाहमा जोड्दै जीवन पर्यन्त सिकाइलाई प्रोत्साहन गर्ने उद्देश्य लिएको छ। औपचारिक शिक्षाबाट बाहिर रहेका नागरिकहरूलाई समेट्ने संस्थागत संरचना सुदृढ गर्न आवश्यक देखिएको छ। केही सामुदायिक सिकाइ केन्द्र र पुस्तकालय सञ्चालनमा रहे पनि सबै वडामा प्रभावकारी पहुँच विस्तार गर्नुपर्ने अवस्था रहेको छ। गुरुकुल, वेद विद्याश्रमजस्ता वैकल्पिक संस्थाहरूको समन्वय र स्रोत सुदृढीकरण आवश्यक रहेको प्रौढ साक्षरता, खुला तथा दूर शिक्षामा सहभागिता बढाउन थप सहजीकरण आवश्यक रहेको छ।

### ३.४.३ उद्देश्य

- क) अनौपचारिक शिक्षा एवम् आजीवन सिकाइको माध्यमबाट जीवनोपयोगी, सीपमूलक र निरन्तर सिकाइका कार्यक्रम विस्तार गर्नु
- ख) सामुदायिक सिकाइ केन्द्रको सबलीकरण गरी अनौपचारिक शिक्षा र निरन्तर शिक्षाका कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु,
- ग) औपचारिक, अनौपचारिक तथा अरिक्तिक माध्यमबाट प्राप्त ज्ञान, सिपको अभिलेखीकरण गरी परीक्षण तथा प्रमाणीकरण गर्नु

### ३.४.४ रणनीतिहरू

- क) घरधुरी सर्वेक्षण गरी साक्षर तथा निरक्षर जनसंख्याको पहिचान र अभिलेखीकरण गर्ने
- ख) औपचारिक शिक्षाबाट वञ्चित सबै उमेर समूहलाई लक्षित गरी कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने
- ग) प्रत्येक वडामा सामुदायिक सिकाइ केन्द्र स्थापना, समायोजन तथा सुदृढीकरण गर्ने
- घ) सामुदायिक सिकाइ केन्द्रलाई बहुउद्देश्यीय केन्द्रका रूपमा विकास गर्दै विद्युतीय पुस्तकालय, सूचना केन्द्र तथा अन्य सेवा विस्तार गर्ने
- ङ) "एक वडा एक पुस्तकालय" अवधारणा कार्यान्वयन गरी गाउँस्तरीय पुस्तकालय सञ्चालन निर्माण गर्ने
- च) सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको प्रयोग विस्तार गरी डिजिटल सिकाइ पहुँच बढाउने
- छ) प्रौढ साक्षरता, साक्षरोत्तर तथा निरन्तर शिक्षा कार्यक्रम समुदायको सहकार्यमा सञ्चालन गर्ने
- ज) संघीय, प्रदेश सरकार तथा अन्य संघसंस्थासँग सहकार्य र साझेदारीमा कार्यक्रम विस्तार गर्ने
- झ) नवसाक्षर महिला तथा पुरुषलाई आयआर्जन र सीपमूलक कार्यक्रमसँग जोडेर आत्मनिर्भर बनाउने
- ञ) नागरिकहरूको आवश्यकता अनुसार तहगत पाठ्यक्रम, सिकाइ मोडुल र भाषिक विविधताअनुसार सामग्री विकास तथा प्रयोग गर्ने
- ट) खुला, वैकल्पिक, परम्परागत विद्यालय तथा मदरसा, गुरुकुल, गुम्बा, विहार र वेद विद्याश्रमसँग समन्वय र सुदृढीकरण गर्ने
- ठ) सामुदायिक सिकाइ केन्द्रमार्फत सांस्कृतिक सम्पदाको संरक्षण, अभिलेखीकरण र प्रवर्द्धन गर्ने
- ड) सरोकारवालाको समन्वयमा साक्षरता तथा साक्षरोत्तर कक्षा सञ्चालन गर्ने
- ढ) समुदायमा रहेका परम्परागत ज्ञान तथा सीपहरूको अभिलेखीकरण गरी परीक्षण तथा प्रमाणीकरण गर्ने
- ण) अनौपचारिक तथा वैकल्पिक शिक्षा कार्यक्रमको नियमित अनुगमन, मूल्याङ्कन र अभिलेखीकरण प्रणाली सुदृढ गर्ने
- त) सामुदायिक सिकाइ केन्द्रमार्फत आयआर्जन तथा सीपमूलक कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने
- थ) गाउँपालिकालाई पूर्ण साक्षर तथा शिक्षित पालिका घोषणा गर्ने लक्ष्यसहित चरणबद्ध कार्ययोजना कार्यान्वयन गर्ने

### ३.४.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप तथा लक्ष्य

क) उपलब्धि: सबै नागरिकहरूलाई साक्षरता, निरन्तर शिक्षा र जीवनपर्यान्त सिकाइको अवसर प्राप्त भएको हुनेछ।

ख) प्रमुख क्रियाकलाप तथा लक्ष्य

| क्र.सं. | क्रियाकलाप विस्तृतिकरण   | इकाइ            | लक्ष्य | भौतिक लक्ष (५ वर्ष) |      |      |      |      |       |
|---------|--|-----------------|--------|---------------------|------|------|------|------|-------|
|         |  |                 |        | २०८३                | २०८४ | २०८५ | २०८६ | २०८७ | जम्मा |
| १       | सामुदायिक सिकाई केन्द्रको अनुदान   | वटा             | ३      | ३                   | ३    | ३    | ३    | ३    | ३     |
| २       | नयाँ सामुदायिक सिकाई केन्द्रको स्थापना   | वटा             | ६      | ०                   | ०    | ३    | ०    | ३    | ६     |
| ३       | घरघुरी सर्वेक्षणको आधारमा निरक्षर व्यक्तिको तथ्यांक संकलन                      | पटक             | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| ४       | महिला तथा प्रौढहरूलाई साक्षरता, निरन्तर शिक्षा र आजिवन सिकाई कार्यक्रम सञ्चालन | पटक             | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| ५       | प्रौढहरूलाई सीप विकास तालिम र आय आर्जनका कार्यक्रम सञ्चालन                     | पटक             | २      | ०                   | १    | ०    | १    | ०    | २     |
| ६       | सामुदायिक सिकाई केन्द्रका परीचालकहरूको क्षमता विकास कार्यक्रम सञ्चालन          | पटक             | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| ७       | विद्यालय बाहिर रहेका बालबालकाहरूको नाम नामेसी विवरण सहितको प्रोफाइलको विकास    | संख्या          |        |                     |      |      |      |      | ०     |
| ८       | युवाका लागि कानूनी साक्षरता कार्यक्रम  | पटक             | २      | १                   | ०    | १    | ०    | ०    | ५     |
| ९       | युवाहरूलाई लागु पदार्थ र दुर्व्यसनबाट जोगाउन सचेतनामूलक कार्यक्रम              | पटक             | २      | ०                   | १    | ०    | ०    | १    | २     |
| १०      | अनौपचारिक शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम संचालन                                     | आवश्यकता अनुसार |        |                     |      |      |      |      | ०     |

## परिच्छेद ४

### अन्तरसम्बन्धित विषय क्षेत्रहरू

#### ४.१ पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, सिकाइ सामग्री तथा मूल्याङ्कन

##### ४.१.१ परिचय

नेपालमा विद्यमान संविधान, राष्ट्रिय शिक्षा नीति, शिक्षा ऐन तथा सम्बन्धित नियम—निर्देशनले पाठ्यक्रम र मूल्याङ्कन प्रणालीलाई गुणस्तरीय शिक्षा सुनिश्चित गर्ने प्रमुख माध्यमका रूपमा लिएको छ। यी कानुनी प्रावधानअनुसार पाठ्यक्रमले विद्यार्थीको सैद्धान्तिक ज्ञानसँगै व्यवहारिक, जीवनोपयोगी सीप विकास गर्न लक्षित छ भने मूल्याङ्कन प्रणालीले सिकाइ उपलब्धि, दक्षता र सिकाइ प्रक्रियामा प्रगतिको मापन गर्दै विद्यार्थीको पूर्ण मूल्याङ्कन गर्न सुनिश्चित गर्दछ। यसले शिक्षक र विद्यालयलाई पनि जिम्मेवार बनाउँदै शिक्षा प्रणालीमा पारदर्शिता, समावेशिता र गुणस्तरीय सुधारको वातावरण सिर्जना गर्ने कार्य गर्दछ।

नेपालमा वि.सं. २०२८ को राष्ट्रिय शिक्षा पद्धतिको योजनामा सर्वप्रथम विद्यालय तहमा आवश्यक जगहरूसहित पाठ्यक्रमलाई दस्तावेजीकरण गरिएको थियो भने पाठ्यक्रम विकासका लागि संस्थागत प्रबन्धका रूपमा शिक्षा मन्त्रालयअन्तर्गत पाठ्यक्रम विकास केन्द्र स्थापना भएको थियो। पाठ्यक्रम विकास केन्द्रको संरचनाको निरन्तरतासँगै विद्यालय तहको पाठ्यक्रम विकास, सुधार तथा अद्यावधिक गर्ने कार्य केन्द्रद्वारा भइरहेको सन्दर्भमा विद्यालय तहको शिक्षाको मार्गदर्शक दस्तावेजका रूपमा वि.सं. २०६३ मा राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप तयार गरी सोहीअनुसार पाठ्यक्रम विकास तथा कार्यान्वयन गर्ने परिपाटी सुरु गरियो। यसै क्रममा वि.सं. २०७६ सालमा नयाँ पाठ्यक्रम प्रारूप तयार भई सो विद्यालय शिक्षाको राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप, २०७६ कार्यान्वयन गर्ने क्रममा विद्यालय तहमा नयाँ पाठ्यक्रम विकास गरी वि.सं. २०७७ देखि कक्षा १ र ११ मा कार्यान्वयन सुरु गरिएको र वि.सं. २०८० सम्ममा विद्यालय तहका सबै कक्षाहरू अर्थात् कक्षा १ देखि १२ सम्म यो पाठ्यक्रम कार्यान्वयन गरिएको छ। राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप, २०७६ ले आधारभूत तह (कक्षा १ देखि ८ सम्म) मा स्थानीय पाठ्यक्रमको व्यवस्था गरेको छ।

##### ४.१.२ वर्तमान अवस्था

पञ्चालझरना गाउँपालिकामा हाल पाठ्यक्रम र मूल्याङ्कन प्रणालीलाई गुणस्तरीय शिक्षा सुनिश्चित गर्ने माध्यमका रूपमा विकास गर्ने प्रयास भइरहेको छ। विद्यालयहरूमा स्थानीय आवश्यकता, भाषा, कला, संस्कृति, र सिप समेटिएको स्थानीय पाठ्यक्रम हाल पूर्ण रूपमा लागू नभएको अवस्थालाई गाउँपालिकाले कमजोरीका रूपमा स्वीकार गरेको छ। यसलाई सुधार्न गाउँपालिका स्थानीय पाठ्यक्रम विकास गरी लागू गर्ने लक्ष्य राखेको छ, जसले विद्यार्थीको जीवनोपयोगी सीप, नैतिक शिक्षा, अनुशासन र समाजसेवा जस्ता विशेष पाठ्यक्रमसँग जोडिनेछ।

मूल्याङ्कन र परीक्षा प्रणालीमा परम्परागत, केवल सैद्धान्तिक मूल्याङ्कनमा निर्भर अभ्यासलाई सुधार गर्दै वैज्ञानिक, व्यवस्थित र नतिजामुखी बनाउने प्रयास भइरहेको छ। आधारभूत र माध्यमिक तहका प्रत्येक कक्षा र विषयका लागि सिकाइ उपलब्धि मापन गर्ने सूचकहरू विकास गर्ने रणनीति लिइएको छ। शिक्षकको कार्यसम्पादनलाई विद्यार्थीको सिकाइ उपलब्धि र परीक्षाको परिणामसँग जोड्ने, अपाङ्गता भएका बालबालिकाका लागि विशेष मूल्याङ्कन गर्ने, तथा प्रयोगात्मक अभ्यास र इन्टर्नेसिपसमेत मूल्याङ्कनमा समावेश गर्ने व्यवस्था विकास भइरहेको छ।

गाउँपालिकाले मूल्याङ्कन र अनुगमनलाई चुस्त बनाउन स्थानीय संयन्त्र निर्माण गर्ने र भविष्यमा माध्यमिक तहसम्मको परीक्षा स्थानीय तहबाट सञ्चालन गर्न पूर्वाधार र जनशक्ति तयार गर्ने लक्ष्य राखेको छ। यसरी, पचालझरना गाउँपालिकाले पाठ्यक्रम र मूल्याङ्कन प्रणालीलाई स्थानीय परिवेश अनुकूल, समावेशी, गुणस्तरीय र नतिजामुखी बनाउन अग्रसर रहेको देखिन्छ।

### ४.१.३ उद्देश्य

- क) विद्यालय तहको पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकको प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गर्नु
- ख) स्थानीय पाठ्यक्रम निर्माण तथा कार्यान्वयन गर्नु
- ग) पाठ्यक्रमले तोके बमोजिम विद्यार्थीको सिकाइको मूल्याङ्कन गर्नु

### ४.१.४ रणनीतिहरू

- क) राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप, २०७६ र तदनुसारका पाठ्यक्रमको कार्यान्वयन गर्ने,
- ख) विकास गरिएका पाठ्यक्रम तथा पाठ्यसामग्रीलाई सम्बन्धित शिक्षक तथा सरोकारवालाहरूलाई प्रबोधिकरण गर्ने,
- ग) पाठ्यक्रम कार्यान्वयनका लागि अत्यावश्यक संरचनागत तथा पेसागत सक्षमता अभिवृद्धि गर्ने,
- घ) विपद्, महामारी तथा सङ्कटको अवस्थामा वैकल्पिक विधिबाट शिक्षण सिकाइ क्रियाकलाप सञ्चालन गर्ने,
- ङ) शिक्षकका लागि शिक्षक निर्देशिका तथा स्रोत सामग्री तथा विद्यार्थीका लागि सिकाइ सामग्री, स्वाध्यायन तथा सन्दर्भ सामग्रीहरू उपलब्ध हुने व्यवस्था गर्ने,
- च) शिक्षकको पेसागत सक्षमता विकास गर्ने,
- छ) सहभागितामूलक, अन्तरक्रियात्मक, खोजमूलक एवम् समस्या समाधान केन्द्रित शिक्षण विधिको प्रयोगलाई संस्थागत गर्ने,
- ज) विद्यालयमा आधारित सहयोग पद्धति विकास गर्ने,
- झ) सहपाठी सिकाइ समूह गठन गरी कमजोर सिकाइ क्षमता भएका बालबालिकालाई सहयोग गर्ने,
- ञ) शिक्षण सिकाइमा सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको प्रयोग बढाउने,
- ट) स्थानीय तथा मातृभाषाको पाठ्यक्रम र पाठ्य सामग्रीको विकास तथा प्रयोगलाई व्यवस्थित गर्ने,

- ठ) विद्यार्थीको सिकाइ उपलब्धिलाई शिक्षकको वृत्ति विकाससँग आबद्ध गरी पाठ्यक्रमको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्ने वातावरण सृजना गर्ने,
- ड) स्थानीय पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकको विकास एवमं कार्यान्वयन गर्ने,
- ढ) स्थानीय पाठ्यक्रम कार्यान्वयनको लागि शिक्षकको क्षमता विकास गर्ने।

#### ४.१.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य

##### क) उपलब्धि:

पाठ्यक्रमको प्रभावकारी कार्यान्वयनबाट दैनिक जीवनका लागि आवश्यक आधारभूत सक्षमतासहित सृजनशील, सकारात्मकसोच भएको, निरन्तर सिकाइप्रति प्रतिबद्ध र रोजगारउन्मुख नागरिक तयार भएको हुनेछ।

##### ख) प्रमुख क्रियाकलापहरू तथा लक्ष्य निर्धारण

| क्र.सं. | क्रियाकलाप विस्तृतिकरण  | इकाइ            | लक्ष्य  | भौतिक लक्ष (५ वर्ष) |      |      |      |      |       |
|---------|---|-----------------|---------|---------------------|------|------|------|------|-------|
|         |   |                 |         | २०८३                | २०८४ | २०८५ | २०८६ | २०८७ | जम्मा |
| १       | विद्यालय शिक्षाको राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूपको अभिमुखिकरण          | पटक             | ५       | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| २       | शिक्षक तालिम र पुनर्ताजगि तालिम                                     | पटक             | ५       | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| ३       | कक्षाकोठामा आधारित विद्यार्थी मूल्यांकन                             | आवश्यकता अनुसार |         |                     |      |      |      |      |       |
| ४       | आवधिक मूल्यांकन   | पटक             | १५      | ३                   | ३    | ३    | ३    | ३    | १५    |
| ४       | डिजिटल सामग्रीको प्रयोग   | विद्यालय        | २७      | ५                   | ५    | ५    | ५    | ७    | २७    |
| ५       | सूचना प्रविधिको प्रयोग  | विद्यालय        | २७      | २७                  | २७   | २७   | २७   | २७   | २७    |
| ६       | स्थानीय पाठ्यक्रम निर्माण तथा कार्यान्वयन                           | आधारभूत तह      | निरन्तर |                     |      |      |      |      | ०     |
| ७       | माध्यम भाषाको रूपमा मातृभाषाको प्रयोग                               | आवश्यकता अनुसार | निरन्तर |                     |      |      |      |      |       |
| ८       | विद्यालय शिक्षाको राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूपको अभिमुखिकरण          | संख्या          | १००     | २०                  | २०   | २०   | २०   | २०   | १००   |
| ९       | विद्यार्थीको आवधिक मूल्यांकन  | पटक             | १५      | ३                   | ३    | ३    | ३    | ३    | १५    |
| १०      | सत्रै बालबालिकालाई पाठ्यपुस्तक तथा अभ्यास/कार्य पुस्तिकाको उपलब्धता | विद्यार्थी      | निरन्तर |                     |      |      |      |      | ०     |

|    |   |                 |         |    |    |    |    |    |    |
|----|---|-----------------|---------|----|----|----|----|----|----|
| ११ | स्थानीय पढाइ सामग्री र अन्य शैक्षणिक सामग्री निर्माण तथा प्रयोग     | विद्यालय        | २७      | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ |
| १२ | स्थानीय पाठ्यक्रम विकास र कार्यान्वयन                               | आधारभूत तह      | निरन्तर |    |    |    |    |    | ०  |
| १३ | पाठ्यक्रम कार्यान्वयनसम्बन्धी शिक्षक क्षमता अभिवृद्धि तालिम सञ्चालन | पटक             | ५       | १  | १  | १  | १  | १  | ५  |
| १४ | निरन्तर विद्यार्थी मूल्याङ्कन (CAS) प्रभावकारी कार्यान्वयन          | निरन्तर         |         |    |    |    |    |    | ०  |
| १५ | प्रविधिमा आधारित (डिजिटल) मूल्याङ्कन प्रणालीको प्रवर्द्धन।          | आवश्यक ताअनुसार | निरन्तर |    |    |    |    |    | ०  |
| १६ | कक्षा अवलोकन तथा शैक्षिक पृष्ठपोषण प्रणाली सुदृढीकरण                | पटक             | १०      | २  | २  | २  | २  | २  | १० |
| १७ | विषयगत शिक्षक सञ्चाल तथा पेशागत सिकाइ समुदाय गठन                    | संख्या          | ७       | ७  | ७  | ७  | ७  | ७  | ७  |
| १८ | परीक्षाको नतिजा विश्लेषण गरी सुधारात्मक कार्ययोजना कार्यान्वयन      | विद्यालय        | २७      | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ |

## ४.२ शिक्षक व्यवस्थापन र विकास

### ४.२.१ परिचय

शिक्षाको गुणस्तर सुधारमा शिक्षक व्यवस्थापन र विकासको भूमिका निर्णायक हुन्छ। गुणस्तरीय शिक्षाका लागि शिक्षक योग्य, व्यावसायिक रूपमा दक्ष, प्रेरित, समर्पित र विद्यार्थीको सिकाइप्रति जवाफदेही हुनु आवश्यक छ। शिक्षकको विषयगत ज्ञान, शिक्षण सिकाइमा दक्षता र नमुना व्यवहारले विद्यार्थीको सिकाइमा सकारात्मक प्रभाव पार्दछ। यसका लागि शिक्षकको पेशागत विकास सुनिश्चित गर्दै विद्यालयमा प्रभावकारी शिक्षक व्यवस्थापन गर्न आवश्यक छ। प्राथमिक तहमा शिक्षक—विद्यार्थी अनुपात विद्यार्थी सङ्ख्याको आधारमा, र माध्यमिक तहमा विषयगत मापदण्डअनुसार कायम गरिएको छ। शिक्षकको क्षमता अभिवृद्धि, तालिम, कार्यशाला, अवलोकन भ्रमण, मेन्टरिङ तथा प्रविधिको प्रयोगमार्फत शिक्षक पेशालाई रोजाइको पेशा बनाउने प्रयास गाउँपालिकाले गर्दै आएको छ। यसरी शिक्षक व्यवस्थापन र विकासले शिक्षाको गुणस्तर वृद्धि गर्न, शिक्षकलाई जिम्मेवार बनाउने र कक्षाकोठामा विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण—सिकाइ प्रवाह सुनिश्चित गर्ने लक्ष्य राखिएको छ।

### ४.२.२ वर्तमान अवस्था

पचालझरना गाउँपालिकाभित्रका बालविकास शिक्षक सहित १७१ जना रहेको देखिन्छ, अधिकांश विद्यालयहरूमा विषयगत शिक्षकहरूको दरबन्दी पर्याप्त नभएको देखिन्छ। विद्यार्थी संख्यासँग अनुपात मिलाएर शिक्षक दरबन्दीको नक्साङ्कन र पुनर्वितरण तथा व्यवस्थापन गर्न अहिले टड्कारो आवश्यकता छ। त्यस्तै, हाल कार्यरत शिक्षक तथा शिक्षिकाहरूका लागि नवीनतम शिक्षण पद्धति, सूचना प्रविधि र बाल मनोविज्ञानसँग सम्बन्धित नियमित र गुणात्मक तालिमको अभाव रहेको छ। शिक्षकहरूको निरन्तर पेशागत विकासलाई अझ नतिजामुखी र नियमित बनाउन आवश्यक छ। साथै, शिक्षा क्षेत्रमा हुने राजनीतिक हस्तक्षेप र नियुक्ति विवादले शैक्षिक गुणस्तरमा हास ल्याइरहेको र शिक्षक व्यवस्थापनलाई जटिल बनाएको देखिन्छ। शिक्षकहरूको कार्यसम्पादनलाई विद्यार्थीको सिकाइ उपलब्धिसँग वैज्ञानिक रूपमा जोड्ने संयन्त्रको कमी भएको छ, जसले शिक्षकलाई थप जिम्मेवार, उत्तरदायी र नतिजामुखी बन्ने आवश्यकता देखाउँछ। गाउँपालिकामा दक्ष र तालिमप्राप्त शिक्षकहरूको आपूर्ति पर्याप्त छैन भने प्रधानाध्यापकहरूको छनोट प्रक्रियामा पनि योग्यता र क्षमतामाथि आधारित सुधार आवश्यक छ। यी चुनौतीहरूको समाधानका लागि गाउँपालिका शिक्षक दरबन्दी मिलान, कार्यसम्पादनमा आधारित पुरस्कार तथा प्रोत्साहन, र नियमित पुनर्ताजगी तालिमको माध्यमबाट दीर्घकालीन रणनीतिहरू लागू गर्दै आएको छ।

### ४.२.३ उद्देश्य

- क) विषयगत र कक्षागत रूपमा शिक्षक दरबन्दी व्यवस्थापन गर्नु,
- ख) विद्यालय सुपरिवेक्षण, शिक्षक तालिम, शिक्षकको पेशागत विकास, शिक्षक सक्षमतालाई प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गर्नु,

ग) शिक्षकलाई निरन्तर पेशागत विकासका अवसरहरूको सुनिश्चितता गर्नु,

#### ४.२.४ रणनीतिहरू

- (क) विद्यार्थी संख्यासँग अनुपात मिलाएर तहगत र विषयगत रूपमा शिक्षक दरबन्दी मिलान र आवश्यक अनुसार पुनर्वितरण गर्ने
- (ख) रिक्त शिक्षक दरबन्दीमा स्थानीय तहद्वारा शिक्षक व्यवस्थापन गर्ने
- (ग) दक्ष र तालिमप्राप्त शिक्षकको आपूर्ति सुनिश्चित गर्ने र नियुक्ति प्रक्रिया पारदर्शी बनाउने
- (घ) शिक्षकहरूको नियमित पेशागत विकासका लागि तालिम, कार्यशाला, सेमिनार, अवलोकन भ्रमण र मेन्टोरिङको व्यवस्था गर्ने
- (ङ) शिक्षकलाई ICT उपकरण, स्मार्ट बोर्ड र डिजिटल शिक्षण विधि प्रयोगमा प्रशिक्षित गर्ने
- (च) शिक्षक पेशागत सहयोग प्रणालीमार्फत विषयगत शिक्षक सञ्जाल, विज्ञ समूह, शिक्षक सिकाइ समूह, स्रोत शिक्षक र अनुभवी शिक्षकबाट कोचिङ तथा मेन्टोरिङ उपलब्ध गराउने
- (छ) शिक्षकहरूको कार्यसम्पादनलाई विद्यार्थीको सिकाइ उपलब्धि र मूल्याङ्कनसँग जोडेर वैज्ञानिक मूल्याङ्कन प्रणाली लागू गर्ने
- (ज) उत्कृष्ट कार्यसम्पादन गर्ने शिक्षकलाई पुरस्कार र प्रोत्साहन कार्यक्रममार्फत प्रेरित गर्ने
- (झ) शिक्षकको उपस्थिति, नियमितता र कार्यसम्पादनमा सुधार गर्ने
- (ञ) प्रधानाध्यापकलाई नेतृत्व, विद्यालय व्यवस्थापन, लेखा तथा संसाधन व्यवस्थापनमा तालिम प्रदान गर्ने
- (ट) शिक्षक तथा प्रधानाध्यापकको पेशागत विकासलाई विद्यार्थीको सिकाइ सुधारसँग सम्बन्धित गरी नतिजाप्रति जवाफदेही हुने पद्धति विकास गर्ने
- (ठ) नियुक्ति र पदस्थापन प्रक्रियामा राजनीतिक हस्तक्षेप न्यूनिकरण गरी योग्यता र अनुभव आधारित निर्णय सुनिश्चित गर्ने
- (ड) कार्ययोजना, शैक्षिक योग्यता र अनुभवको आधारमा प्रधानाध्यापकको छनौट गर्ने
- (ढ) नव प्रवेशी शिक्षकहरूका लागि अभिमुखीकरण मार्फत जिम्मेवार र उत्तरदायी बनाउने
- (ण) शिक्षकले कक्षा काठामा विताउने समय सुनिश्चित गर्न प्रधानाध्यापक जिम्मेवार हुने
- (त) शिक्षक व्यवस्थापन र विकासको प्रभावकारितालाई समय-समयमा अनुगमन गरी सुधारात्मक कदम चाल्ने

#### ४.२.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य

क) उपलब्धि: विषयगत र कक्षागत रूपमा शिक्षक दरबन्दी व्यवस्थापन हुनेछ, विद्यालय सुपरिवेक्षण, शिक्षक तालिम, शिक्षकको पेशागत विकास, शिक्षक सक्षमतालाई प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन भएको हुनेछ र शिक्षकलाई निरन्तर पेशागत विकासका अवसरहरूको सुनिश्चितता भएको हुनेछ।

(ख) प्रमुख क्रियाकलापहरू तथा लक्ष्य

| क्र.सं. | क्रियाकलाप विस्तृतिकरण   | इकाइ            | लक्ष्य | भौतिक लक्ष (५ वर्ष) |      |      |      |      |       |    |
|---------|--|-----------------|--------|---------------------|------|------|------|------|-------|----|
|         |  |                 |        | २०८३                | २०८४ | २०८५ | २०८६ | २०८७ | जम्मा |    |
| १       | शिक्षक दरबन्दीको पुनर्वितरण र विषयगत आवश्यकता अनुसार समायोजन गर्ने   | आवश्यक ताअनुसार | २७     |                     |      |      |      |      |       | २७ |
| २       | शिक्षकको पेशागत क्षमता विकासका लागि कार्यशाला, तालिम, अवलोकन भ्रमण, क्लस्टर बैठक र अनलाइन फोरम सञ्चालन गर्ने | शिक्षक          | सबै    |                     |      |      |      |      |       |    |
| ३       | अनुभवी शिक्षकबाट कोचिङ्ग र मेन्टरिङ्ग प्रदान गर्ने   | पटक             | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | १     | ५  |
| ४       | शिक्षकको कार्यसम्पादन र विद्यार्थी सिकाइ उपलब्धिसँग जोडेर नतिजामुखी मूल्याङ्कन लागू गर्ने                    | पटक             | १५     | ३                   | ३    | ३    | ३    | ३    | ३     | १५ |
| ५       | प्रधानाध्यापकलाई विद्यालय व्यवस्थापन, लेखा र स्रोत व्यवस्थापनमा तालिम प्रदान गर्ने                           | पटक             | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | १     | ५  |
| ६       | नयाँ प्रविधि र आधुनिक शिक्षण विधि प्रयोग प्रवर्द्धन गर्ने  | विद्यालय        | २७     | २७                  | २७   | २७   | २७   | २७   | २७    | २७ |
| ७       | शिक्षक तथा प्रधानाध्यापकको निरन्तर मूल्याङ्कन र सुधार कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने                                | निरन्तर         |        |                     |      |      |      |      |       |    |
| ८       | शिक्षकको प्रेरणा, व्यावसायिक प्रतिबद्धता र जवाफदेहिता बढाउने कार्यक्रम लागू गर्ने                            | आवश्यक ताअनुसार |        |                     |      |      |      |      |       |    |
| ९       | एकीकृत पाठ्यक्रम प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि पठन तत्व तथा ढाँचासम्बन्धी तालिमको व्यवस्था गर्ने             | पटक             | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | १     | ५  |
| १०      | शैक्षिक सामग्री निर्माण तालिम/कार्यशालाको व्यवस्था गर्ने   | पटक             | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | १     | ५  |
| ११      | प्रविधि—मैत्री सिकाइका लागि टेलिभिजन, कम्प्युटर, इन्टरनेट प्रयोग तालिमको व्यवस्था गर्ने                      | पटक             | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | १     | ५  |
| १२      | शिक्षक पेशागत सहयोग प्रणाली विकास र कार्यान्वयन गर्ने  | निरन्तर         |        |                     |      |      |      |      |       |    |

## ४.३ शैक्षिक समानता र समावेशीकरण

### ४.३.१ परिचय

शिक्षा क्षेत्रमा समता र समावेशीकरण विशेष रूपमा महत्वपूर्ण छन्। समावेशी शिक्षा प्रणालीले सबै बालबालिकालाई गुणस्तरीय शिक्षा प्राप्त गर्ने अवसर प्रदान गर्दछ। विद्यालयले विद्यार्थीहरूको विविध आवश्यकता अनुसार पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, मूल्याङ्कन र भौतिक वातावरण अनुकूल बनाउँछ। यसले विशेष आवश्यकता भएका, अपाङ्गता भएका, भाषिक वा सांस्कृतिक रूपमा फरक पृष्ठभूमिका तथा वञ्चित समुदायका बालबालिकालाई शिक्षा प्रणालीमा समावेश गर्न मद्दत गर्दछ।

समता र समावेशीकरणको प्रभावकारी कार्यान्वयनले सामाजिक न्याय, समान अवसर, मानव अधिकारको संरक्षण र दिगो विकासलाई प्रवर्द्धन गर्दछ। यसले समाजमा रहेका विभेद र असमानता कम गर्दै सबै नागरिकलाई समान रूपमा सम्मानजनक र सक्रिय जीवन जीउने अवसर प्रदान गर्दछ। त्यसैले, समता र समावेशीकरणलाई नीति, योजना र कार्यक्रमहरूको मुख्य आधारका रूपमा ग्रहण गर्नु आवश्यक हुन्छ।

### ४.३.२ वर्तमान अवस्था

पचालझरना गाउँपालिकाले शिक्षा तथा सामाजिक सेवामा समता र समावेशीकरणलाई प्राथमिकता दिँदै विभिन्न कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्दै आएको छ। गाउँपालिकामा हाल करिब २७ वटा सामुदायिक विद्यालय छन्, जसमा करिब ४४९४ जना विद्यार्थी अध्ययनरत छन्। तीमध्ये छात्राको संख्या करिब ५२.५७ प्रतिशत रहेको छ भने दलित, जनजाति तथा अन्य वञ्चित समुदायका विद्यार्थीहरूको संख्या करिब १३.८७ प्रतिशत रहेको अनुमान छ।

गाउँपालिकाले आर्थिक रूपमा कमजोर तथा वञ्चित समुदायका विद्यार्थीहरूका लागि छात्रवृत्ति कार्यक्रम सञ्चालन गर्दै आएको छ। हालसम्म करिब १२८ जना विद्यार्थीले छात्रवृत्ति सुविधा प्राप्त गरेका छन्। त्यसैगरी अपाङ्गता भएका विद्यार्थीहरूको संख्या करिब ८० जना रहेको छ र उनीहरूका लागि समावेशी शिक्षालाई प्रवर्द्धन गर्ने प्रयास भइरहेको छ।

यद्यपि, केही विद्यालयहरूमा शिक्षक दरबन्दी, स्रोतसाधन तथा पूर्वाधारको असमानता देखिन्छ। विशेष गरी दुर्गम बस्तीका बालबालिकाको नियमित उपस्थिति, सिकाइ उपलब्धि तथा डिजिटल स्रोतमा पहुँच अझै चुनौतीपूर्ण रहेको छ।

समग्रमा हेर्दा, पचालझरना गाउँपालिकाले समता र समावेशीकरणलाई संस्थागत गर्न प्रयास गरे पनि सबै समुदाय र समूहसम्म सेवाको समान पहुँच सुनिश्चित गर्न थप तथ्यमा आधारित योजना, लक्षित कार्यक्रम तथा प्रभावकारी अनुगमन आवश्यक देखिन्छ।

### ४.३.३ उद्देश्य

- (क) शिक्षा तथा सामाजिक सेवामा सबै बालबालिका र समुदायको समान पहुँच सुनिश्चित गर्दै विशेषगरी वञ्चित, सीमान्तकृत तथा अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूको सहभागिता वृद्धि गर्नु
- (ख) जात, लिङ्ग, भाषा, आर्थिक अवस्था, अपाङ्गता तथा भौगोलिक अवस्थाका कारण हुने विभेदलाई न्यूनीकरण गर्दै समावेशी, सुरक्षित र समान अवसरयुक्त वातावरण निर्माण गर्नु

### ४.३.४ रणनीतिहरू

- (क) विद्यालयमा हुने सबै प्रकारका विभेदको अन्त्य गर्न शिक्षक, विद्यार्थी तथा अभिभावक लगायत सबै सरोकारवालाहरूलाई नियमित अभिमुखीकरण तथा सचेतनामूलक कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने
- (ख) विद्यालयका सबै शैक्षिक तथा अतिरिक्त गतिविधिहरूमा बालबालिकाको समावेशी तथा समान सहभागिता सुनिश्चित गर्ने
- (ग) विद्यालयमा विशेषगरी छात्राहरूलाई हुने विभेद कम गर्न र गुनासो सुन्नका लागि 'जेन्डर फोकल पर्सन' वा गुनासो सुन्ने अधिकारीको व्यवस्था गर्ने
- (घ) प्रत्येक विद्यालयमा गुनासो पेटिका राखी विद्यार्थी तथा सरोकारवालाहरूका गुनासो सङ्कलन र समाधानको व्यवस्था गर्ने
- (ङ) सबै तह र प्रकारका विद्यालयहरूमा लैङ्गिक तथा अपाङ्गमैत्री भौतिक संरचनाहरू (शौचालय, र्याम्प, सुरक्षित कक्षा कोठा आदि) निर्माण तथा सुधार गर्ने
- (च) घरधुरी सर्वेक्षणमार्फत बालबालिकासम्बन्धी आवश्यक विवरण सङ्कलन गरी तथ्याङ्क अद्यावधिक गर्ने र सोही आधारमा योजना तथा कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने
- (छ) साधारण विद्यालयमा भर्ना भएर अध्ययन गर्न नसक्ने विशेष प्रकृतिका बालबालिकाका लागि स्रोत कक्षा वा आवश्यक सहयोगी सेवा उपलब्ध गराउने
- (ज) समावेशी र समतामूलक पहुँच सुनिश्चित गर्न लक्षित विद्यार्थीहरूका लागि आवश्यक छात्रवृत्ति तथा अन्य सहयोग कार्यक्रम उपलब्ध गराउने
- (झ) विशेषगरी किशोरीहरूलाई हुने विभेद, हिंसा तथा हेपाइ न्यूनीकरण गर्न सचेतनामूलक कार्यक्रम, अनुगमन, निरीक्षण तथा आवश्यक अनुसन्धान सञ्चालन गर्ने र विभेद गर्ने व्यक्तिलाई कानुनी दायरामा ल्याउने

### ४.३.५ उपलब्धी, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य

- क) उपलब्धि: समाजमा पछाडि परेका र आर्थिक तथा सामाजिक रूपले कमजोर अपाङ्गता भएका र सहारा विहीन बालबालिकाहरूको विद्यालयमा समतामूलक पहुँच र सहभागिता सुनिश्चित भएको हुनेछ।

ख) प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य

| क्र.सं. | क्रियाकलाप विस्तृतिकरण   | इकाइ                   | लक्ष्य | भौतिक लक्ष (५ वर्ष) |      |      |      |      |       |
|---------|--|------------------------|--------|---------------------|------|------|------|------|-------|
|         |  |                        |        | २०८३                | २०८४ | २०८५ | २०८६ | २०८७ | जम्मा |
| १       | समता र समावेशीकरण सम्बन्धी अभिमुखीकरण कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने।                             | पटक                    | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| २       | विद्यालयमा जेन्डर फोकल पर्सन तोक्ने।   | जना                    | २७     | २७                  | ०    | २७   | ०    | ०    | २७    |
| ३       | प्रत्येक विद्यालयमा गुनासो पेटिका राख्ने।  | विद्यालय               | २७     | २७                  | ०    | २७   | ०    | ०    | २७    |
| ४       | विद्यालयमा लैङ्गिकमैत्री शौचालय निर्माण गर्ने।   | वटा                    | २७     | ५                   | ५    | ५    | ५    | ७    | २७    |
| ५       | घरघुरी सर्वेक्षणमार्फत बालबालिकाको विवरण सङ्कलन गर्ने।                                     | पटक                    | २      | १                   | ०    | ०    | ०    | १    | २     |
| ६       | विद्यालय बाहिर रहेका बालबालिकाको पहिचान गर्ने।   | संख्या                 |        |                     |      |      |      |      | ०     |
| ७       | किशोरीहरूका लागि सचेतनामूलक कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने।                                       | पटक                    | २      | ०                   | १    | ०    | ०    | १    | २     |
| ८       | विद्यालयमा विभेद तथा हिंसा न्यूनीकरण अभियान सञ्चालन गर्ने।                                 | पटक                    | २      | ०                   | १    | ०    | १    | ०    | २     |
| ९       | विद्यालय व्यवस्थापन समिति र अभिभावकसँग अन्तरक्रिया गर्ने।                                  | पटक                    | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| १०      | बालिका तथा समावेशी शिक्षा रणनीति २०८० र व्यवस्थापन सम्बन्धी मापदण्ड २०८० कार्यान्वयन गर्ने | आवश्यक<br>ता<br>अनुसार |        |                     |      |      |      |      | ०     |

## ४.४ विद्यालय दिवाखाजा, स्वास्थ्य, पोषण र सरसफाई कार्यक्रम

### ४.४.१ परिचय

विद्यालय दिवाखाजा, स्वास्थ्य, पोषण र सरसफाई कार्यक्रम विद्यालय उमेरका बालबालिकाको समग्र विकास, नियमित उपस्थिती र सिकाइ उपलब्धि सुधार गर्न सञ्चालन गरिने महत्वपूर्ण कार्यक्रम हो। यस कार्यक्रमअन्तर्गत विद्यालयमा अध्ययनरत बालबालिकालाई पोषणयुक्त दिवाखाजा उपलब्ध गराउने, स्वास्थ्य तथा पोषणसम्बन्धी सचेतना अभिवृद्धि गर्ने, व्यक्तिगत तथा वातावरणीय सरसफाइका व्यवहारहरू प्रवर्द्धन गर्ने तथा विद्यालयमा सुरक्षित र स्वच्छ वातावरण निर्माण गर्ने कार्यहरू गरिन्छन्। यसले बालबालिकाको स्वास्थ्य अवस्था सुधार गर्न, कुपोषण न्यूनीकरण गर्न तथा विद्यालयमा नियमित उपस्थिति र सक्रिय सहभागिता बढाउन महत्वपूर्ण योगदान पुऱ्याउँछ। साथै, विद्यालय, अभिभावक र समुदायको सहकार्यमा स्वास्थ्य, पोषण र सरसफाइसम्बन्धी सकारात्मक व्यवहार विकास गर्न पनि यस कार्यक्रमले सहयोग गर्दछ।

### ४.४.२ बर्तमान अवस्था

पचालझरना गाउँपालिकाले बालबालिकाको स्वास्थ्य, पोषण र समग्र विकास सुनिश्चित गर्न विद्यालय स्तरमा विविध कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्दै आएको छ। सामुदायिक विद्यालयहरूमा बालविकासदेखि कक्षा ५ सम्मको दिवाखाजा नेपाल सरकारको व्यवस्थापनमा रहेको छ भने कक्षा ६ देखि १२ सम्मको दिवाखाजा गाउँपालिकाको जिम्मेवारीमा प्रभावकारी रूपमा संचालन हुँदै आएको छ। यस कार्यक्रमबाट विशेषगरी आर्थिक अवस्था कमजोर परिवारका विद्यार्थीहरू लाभान्वित भएका छन्।

पचालझरना गाउँपालिकाका सबै माध्यमिक तथा केही आधारभूत विद्यालयमा छात्र र छात्राका लागि अलग-अलग शौचालय निर्माण भइसकेको छ र बाँकी विद्यालयमा निर्माण प्रक्रिया जारी छ। कक्षा ६—१२ सम्म अध्ययनरत छात्राहरूका लागि महिनावारी स्वच्छता व्यवस्थापन सुनिश्चित गर्न निःशुल्क सेनिटरी प्याड वितरण कार्यक्रम सञ्चालन गरिएको छ। साथै, सबै विद्यालयमा प्राथमिक उपचार सामग्रीको बाकस राखिएको छ र बालिकाहरूका लागि आइरन चक्री वितरण गरी पोषण सुधारमा सहयोग पुऱ्याइएको छ।

यी कार्यक्रमहरूले बालबालिकाको स्वास्थ्य सुधार, कुपोषण न्यूनीकरण, नियमित उपस्थिती र सिकाइ उपलब्धिमा सकारात्मक प्रभाव पुऱ्याउँदै समता र समावेशीकरणलाई प्रवर्द्धन गर्ने महत्वपूर्ण भूमिका खेलेका छन्।

### ४.४.३ उद्देश्यहरू

- क) बालबालिकाहरूलाई स्वस्थ एवं पोषणयुक्त पौष्टिक खाना प्राप्तिको सुनिश्चितता गर्नु,
- ख) विद्यालयमा अध्ययन गर्ने बालबालिकाहरूको स्वास्थ्य, पोषण र सरसफाई तथा स्वच्छता सम्बन्धी सेवाको गुणस्तर बृद्धि गरी बालबालिकाको पोषण, स्वास्थ्य र सिकाई उपलब्धीमा सुधार गर्नु

#### ४.४.४ रणनीतिहरू

- क) सबै सामुदायिक विद्यालयमा बालविकास देखि कक्षा १२ सम्म पोषिलो र ताजा दिवाखाजा उपलब्ध गराउने।
- ख) विद्यालय भान्सा, भण्डार, भान्सामा प्रयोग हुने भाँडावर्तन र सामाग्री सुधार्ने, समूहमा हात धुने सुविधा विस्तार गर्ने।
- ग) पर्याप्त पानी, साबुन, सफाइ सामाग्री, अलग—अलग शौचालय र युरिनल, किशोरीका लागि चेन्ज रुम, कक्षा र परिसर सरसफाइ सुनिश्चित गर्ने।
- घ) प्राथमिक उपचार किट वितरण, बालबालिकाको स्वास्थ्य जाँच, जुकाको औषधि तथा सूक्ष्मपोषक तत्व वितरण नियमित गर्ने।
- ङ) किशोरीहरूको महिनावारी स्वच्छता व्यवस्थापनका लागि सेनिटरी प्याड वितरण प्रभावकारी बनाउने।
- च) विद्यार्थी, शिक्षक र अभिभावकलाई पोषण, स्वास्थ्य, स्वच्छता र महिनावारी व्यवस्थापन सम्बन्धी सचेतनामूलक कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने।
- छ) अपाङ्गता भएका, वञ्चित र आर्थिक रूपमा कमजोर विद्यार्थीहरूलाई लक्षित गरी कार्यक्रम पहुँच सुनिश्चित गर्ने।
- ज) शिक्षक र कर्मचारीलाई तालिम दिई क्षमता विकास गर्ने।
- झ) अभिभावक र समुदायलाई अनुगमन, सुधार र मूल्याङ्कनमा सक्रिय सहभागी बनाउने।
- ञ) स्वास्थ्य, पोषण, सरसफाइ र किशोरी स्वच्छता कार्यक्रमलाई स्वास्थ्य र कृषि क्षेत्रसँग समन्वय गरी संयुक्त कार्ययोजना निर्माण र कार्यान्वयन गर्ने।
- ट) कार्यक्रमको अनुगमन, मूल्याङ्कन र पुनरावलोकन गर्दै प्रभावकारिता सुनिश्चित गर्ने।

#### ४.४.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप तथा लक्ष्य

- क) उपलब्धि: विद्यालयमा अध्ययन गर्न सबै बालबालिकाको स्वास्थ्य तथा पोषणको अवस्थामा सुधार, मनोसामाजिक कुशलतामा अभिवृद्धि तथा सिकाईमा सुधार सहित सुरक्षित तथा रमाइलो सिकाई वातावरणमा समतामूलक पहुँच तथा सहभागिता भएको हुनेछ।

ख) प्रमुख क्रियाकलापहरू तथा लक्ष्य

| क्र.सं. | क्रियाकलाप विस्तृतिकरण  | इकाइ               | लक्ष्य | भौतिक लक्ष (५ वर्ष) |      |      |      |      | जम्मा |
|---------|---|--------------------|--------|---------------------|------|------|------|------|-------|
|         |   |                    |        | २०८३                | २०८४ | २०८५ | २०८६ | २०८७ |       |
| १       | विद्यालय पोषण र दिवाखाजा सम्बन्धी कार्यविधि तयार गर्ने र कार्यान्वयन गर्ने।                   | निरन्तर            |        |                     |      |      |      |      | ०     |
| २       | साबुन, पानी, सरसफाइ सामग्री र सेनेटरी प्याड उपलब्ध गराउने।                                    | विद्यार्थी         | ४०००   |                     |      |      |      |      | ०     |
| ३       | प्राथमिक उपचार कक्ष सञ्चालन, स्वास्थ्य जाँच र पोषण तत्व वितरण गर्ने।                          | आवश्यक<br>ताअनुसार |        |                     |      |      |      |      | ०     |
| ४       | विद्यार्थी, शिक्षक र अभिभावकलाई पोषण, स्वास्थ्य र स्वच्छतासम्बन्धी सचेतनामूलक कार्यक्रम दिने। | पटक                | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| ५       | अभिभावक र समुदायलाई अनुगमन र सुधारमा सहभागी बनाउने।   | निरन्तर            |        |                     |      |      |      |      | ०     |
| ६       | कार्यक्रमको नियमित अनुगमन, मूल्याङ्कन र सुधार गर्ने।  | आवश्यक<br>ताअनुसार |        |                     |      |      |      |      | ०     |

## ४.५ विद्यालय सुरक्षा, विपत् तथा उत्थानशीलता

### ४.५.१ परिचय

आपतकालीन अवस्था, जस्तै प्राकृतिक प्रकोप, महामारी, द्वन्द्व वा अन्य संकटका बेला बालबालिकाको शिक्षा निरन्तरता सुनिश्चित गर्नु अत्यन्त महत्वपूर्ण हुन्छ। यस क्रममा विद्यालय भवन क्षतिग्रस्त भए पनि वैकल्पिक कक्षा, अनलाइन वा सामुदायिक आधारमा सिकाइको व्यवस्था गरिनु पर्छ। शिक्षण सामग्री, शिक्षक प्रशिक्षण र विद्यार्थीहरूको पहुँचमा ध्यान दिँदै सबै बालबालिकाले समान अवसर पाउनुपर्छ। आपतकालीन शिक्षाले मात्र बालबालिकाको सिकाइ निरन्तरता सुनिश्चित गर्दैन, उनीहरूको मानसिक स्वास्थ्य, सुरक्षा र सामाजिक सुरक्षा पनि प्रवर्द्धन गर्छ। यसले दीर्घकालीन विकास र समावेशी समाज निर्माणमा योगदान पुऱ्याउँछ।

### ४.५.२ वर्तमान अवस्था

पचालझरना गाउँपालिकामा आपतकालीन अवस्थामा बालबालिकाको शिक्षा निरन्तरता सुनिश्चित गर्न विभिन्न तयारी र कार्यक्रमहरू सञ्चालन हुँदै आएका छन्। प्राकृतिक प्रकोप वा स्वास्थ्य संकट जस्ता अवस्थाका बेला विद्यालय भवन क्षतिग्रस्त भए पनि वैकल्पिक कक्षा, सामुदायिक केन्द्र वा घरमा आधारित सिकाइको व्यवस्था गरिन्छ। स्थानीय सरकार, शिक्षक र विद्यालय व्यवस्थापन समितिको सहकार्यमा संकटमा रहेका बालबालिकाका लागि आवश्यक शैक्षिक सामग्री वितरण, अनलाइन वा टेलिफोन माध्यममार्फत सिकाइको सुविधा उपलब्ध गराउने व्यवस्था छ।

साथै, शिक्षकहरूलाई आपतकालीन शिक्षासम्बन्धी तालिम दिइरहेको र अभिभावक तथा समुदायलाई बालबालिकाको सिकाइ निरन्तरतामा सहकार्य गर्न अभिमुखीकरण गरिएको छ। यद्यपि, केही दुर्गम क्षेत्रका बालबालिकाले अनलाइन पहुँच, उपकरण र स्रोत अभावका कारण प्रभावकारी सिकाइमा चुनौती भोगिरहेका छन्। गाउँपालिकाले आपतकालीन शिक्षामा पहुँच, सामग्री वितरण र समावेशीता सुनिश्चित गर्न थप योजना र स्रोत व्यवस्थापन गर्दै आएको छ।

### ४.५.३ उद्देश्य

- क) प्राकृतिक प्रकोप, महामारी वा अन्य संकटका बेला पनि सबै बालबालिकाले समान रूपमा निरन्तर शिक्षा प्राप्त गर्न पहुँच र अवसर सुनिश्चित गर्नु
- ख) आपतकालीन अवस्थामा बालबालिकाको सुरक्षा, मानसिक स्वास्थ्य र समावेशी सिकाइ प्रवर्द्धन गर्दै दीर्घकालीन विकासमा योगदान पुऱ्याउनु

### ४.५.४ रणनीति

- (क) संघीय सरकारले बनाएको विपद्/आपतकालीन कार्यविधि स्थानीय स्तरमा लागू गर्ने संयन्त्र विकास गर्ने।
- (ख) स्थानीय सरकार र विज्ञहरूसँग अन्तरक्रिया गरी तहगत वैकल्पिक सिकाइ पाठ योजना तयार गर्ने।

- (ग) स्थानीय रेडियो, टेलिभिजन र अन्य सञ्चार माध्यमसँग समन्वय गर्ने।
- (घ) विपद् प्रतिरोधी विद्यालय पूर्वाधार निर्माणमा जोड दिने।
- (ङ) गाउँपालिका स्तरमा विपद् व्यवस्थापन समिति गठन गर्ने, जसमा विद्यालय शिक्षा उपसमिति पनि रहने।
- (च) प्रत्येक विद्यालयमा आपतकालीन प्रतिकार्य योजना तयार गर्ने।
- (छ) महामारी वा संकटका समयमा वैकल्पिक शिक्षण—सिकाइ उपाय तयार गर्ने।
- (ज) स्थानीय तह र विद्यालयका कर्मचारी/शिक्षकहरूको आपतकालीन क्षमता विकास गर्ने।
- (झ) विद्यालय सुधार योजनामा विपद् व्यवस्थापन समावेश गरी कार्यान्वयन गर्ने।
- (ञ) हरित विद्यालय, जलवायु परिवर्तन र दिगो विकाससम्बन्धी कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने।
- (ट) संकट/आपतकालिन अवस्थामा बालबालिकाको शिक्षा पाउने अधिकार सुनिश्चित गर्दै सिकाइ निरन्तरता कायम गर्ने।
- (ठ) Covid-१९ जस्ता संकटले पार्ने छोटो र लामो अवधि प्रभाव पहिचान गरी समाधान गर्ने।
- (ड) विपद् पूर्व तयारी, प्रतिकार्य र ड्रिल अभ्यासलाई विद्यालयको वार्षिक योजना समावेश गर्ने।
- (ढ) शिक्षक र विद्यार्थीलाई विपद्, जलवायु परिवर्तन र आपतकालीन तयारी सम्बन्धी ज्ञान र व्यवहारिक तालिम दिने।
- (ण) अभिभावक र समुदायलाई आपतकालीन शिक्षामा सक्रिय सहभागी बनाउने।
- (त) संकट आपतकालिन अवस्था व्यवस्थापनका लागि नियमित अनुगमन, मूल्याङ्कन र सुधार गर्ने।

#### ४.५.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य

क) उपलब्धी: आपतकालीन अवस्थामा बालबालिकाको सुरक्षा, मानसिक स्वास्थ्य र समावेशी सिकाइ प्रवर्द्धन गर्दै दीर्घकालीन विकासमा योगदान पुगेको हुनेछ

ख) प्रमुख क्रियाकलाप तथा लक्ष्य

| क्र.सं. | क्रियाकलाप विस्तृतिकरण   | इकाइ     | लक्ष्य | भौतिक लक्ष (५ वर्ष) |      |      |      |      |       |
|---------|--|----------|--------|---------------------|------|------|------|------|-------|
|         |  |          |        | २०८३                | २०८४ | २०८५ | २०८६ | २०८७ | जम्मा |
| १       | वि.व्य.स. पदाधिकारी शिक्षक तथा विद्यार्थीको क्षमता विकास गर्ने | पटक      | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |
| २       | विपद् योजना तयारी गरी कार्यान्वय गर्ने                         | निरन्तर  |        |                     |      |      |      |      | ०     |
| ३       | जोखिम नक्सांकन गर्ने   | विद्यालय | २७     | ५                   | ५    | ५    | ५    | ७    | २७    |
| ४       | विद्यालयमा आपतकालिन कोषको स्थापना गर्ने                        | आ.अनुसार |        |                     |      |      |      |      | ०     |
| ५       | प्राथमिक स्वास्थ्य सामग्रीको व्यवस्थापन गर्ने                  | आ.अनुसार |        |                     |      |      |      |      | ०     |
| ६       | विद्यालयमा सूचना प्रविधिको विस्तार गर्ने                       | विद्यालय | २७     | २७                  | २७   | २७   | २७   | २७   | २७    |
| ७       | विद्यालयमा वृक्षारोपण सरसफाई तथा सुन्दरीकरण गर्ने              | विद्यालय | २७     | २७                  | २७   | २७   | २७   | २७   | २७    |

## ४.६ विद्यालय भौतिक पूर्वाधार विकास

### ४.६.१ परिचय

विद्यालयमा बालबालिकाले सुरक्षित र गुणस्तरीय शिक्षा प्राप्त गर्न भौतिक पूर्वाधार अत्यन्त महत्वपूर्ण हुन्छ। शिक्षा नियमावली २०५९ अनुसार, प्रारम्भिक बालविकास तथा आधारभूत तहका प्रारम्भिक कक्षामा प्रति विद्यार्थी ०.७५ वर्ग मिटर र उच्च आधारभूत तथा माध्यमिक तहमा प्रति विद्यार्थी १.०० वर्ग मिटर क्षेत्रफल तोकिएको छ। यसले प्रत्येक विद्यार्थीले पर्याप्त स्थानमा पठनपाठन गर्न सक्ने वातावरण सुनिश्चित गर्छ। विद्यालयका आधारभूत भौतिक पूर्वाधारमा सुरक्षित विद्यालय भवन, पढ्नका लागि कक्षाकोठा, खेलकुदका लागि खेलमैदान, शौचालय, स्वच्छ पानी, सफाइ र पुस्तकालय/बुक कर्नर जस्ता सुविधा समावेश हुन्छन्। राष्ट्रिय शिक्षा नीति २०७६ ले विद्यालयलाई बालमैत्री, सुरक्षित, हरित र विपद् जोखिममुक्त बनाउन भवन, कक्षाकोठा, फर्निचर, प्रयोगशाला, शौचालय, पानी र पुस्तकालय जस्ता सम्पूर्ण पूर्वाधार विकास गर्ने नीतिगत व्यवस्थापन गरेको छ। यी पूर्वाधारले मात्र शिक्षा पहुँच सुनिश्चित नगरी बालबालिकाको सिकाइ अनुभव, स्वास्थ्य र समग्र विकासमा पनि योगदान पुऱ्याउँछ।

### ४.६.२ वर्तमान अवस्था

पचालझरना गाउँपालिकामा बालबालिकाको सुरक्षित र गुणस्तरीय शिक्षा सुनिश्चित गर्न विद्यालय भौतिक पूर्वाधार विकासमा लगातार प्रयास भइरहेका छन्। गाउँपालिकाभित्र रहेका सामुदायिक र संस्थागत विद्यालयमा कक्षाकोठा, खेलमैदान, शौचालय, पिउने पानी, फर्निचर, पुस्तकालय/बुक कर्नर लगायतका आधारभूत संरचना उपलब्ध छन्। प्रारम्भिक बालविकास तथा आधारभूत तहका कक्षामा प्रति विद्यार्थी ०.७५ वर्ग मिटर र उच्च आधारभूत तथा माध्यमिक तहमा प्रति विद्यार्थी १.०० वर्ग मिटर क्षेत्रफल सुनिश्चित गरिएको छ।

गाउँपालिकाले विद्यालय भवन र अन्य पूर्वाधारलाई सुरक्षित, बालमैत्री तथा हरित विद्यालयको रूपमा विकास गर्ने नीति अनुसार काम गर्दै आएको छ। केही विद्यालयमा भवन विस्तार, खेलमैदान सुधार र शौचालय/स्वच्छता सुविधा सुधार गर्न आवश्यक देखिन्छ। यद्यपि, सबै विद्यालयमा विपद् प्रतिरोधी पूर्वाधार निर्माण, पर्याप्त खेल क्षेत्र र पुस्तकालय सुविधा सुनिश्चित गर्न थप प्रयास जारी छ।

समग्रमा, पचालझरना गाउँपालिकाले विद्यालय भौतिक पूर्वाधारको विकासमा ठोस कदम चाल्दै आएको भए पनि विद्यालयहरूको भौतिक वातावरण सुधार, समावेशी पहुँच र विपद् जोखिम न्यूनीकरणमा अझै योजना र स्रोतको आवश्यकता देखिन्छ।

### ४.६.३ उद्देश्य

क) सबै विद्यालयमा बालबालिकाको सिकाइ, स्वास्थ्य र खेलकुदका लागि पर्याप्त, सुरक्षित र समावेशी भौतिक पूर्वाधार सुनिश्चित गर्नु

ख) विद्यालय भवन र अन्य पूर्वाधारलाई बालमैत्री, हरित र विपद् जोखिममुक्त बनाउँदै दीर्घकालीन टिकाउ विकास प्रवर्द्धन गर्नु

#### ४.६.४ रणनीतिहरू

- क) विद्यालयको तह र विद्यार्थी सङ्ख्याको आधारमा पूर्वाधार विकासका मापदण्ड तयार गर्ने।
- ख) पूर्वाधार निर्माण र स्तरोन्नतिका लागि संघसंस्था, सरोकारवालासँगै लागत साझेदारी गर्ने।
- ग) कक्षाकोठा, शिक्षक/प्रधानाध्यापक कक्ष, प्रशासनिक कक्ष, पानी, शौचालय, भान्सा/खाजाका घरलगायत पूर्वाधार समावेश गरेर डिजाइन गर्ने।
- घ) प्रकोपको सिकार भएका विद्यालय भवनलाई तुरून्त वैकल्पिक व्यवस्थासहित स्तरोन्नति गर्ने।
- ङ) पूर्वाधार निर्माणसँगै विद्यालय व्यवस्थापन र संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गर्ने।
- च) विद्यालय भौतिक पूर्वाधारका लागि सूचक तयार गरी अनुगमन गर्ने।
- छ) आंशिक क्षति भएका विद्यालय संरचनाको मर्मत सम्भार नियमित गर्ने।
- ज) विद्यालय भवन र पूर्वाधारलाई विपद् जोखिममुक्त, सुरक्षित र हरित बनाउने।
- झ) विद्यालयलाई बालमैत्री, छात्रामैत्री, अपाङ्गतामैत्री र हिंसा रहित सुरक्षित सिकाइ केन्द्रको रूपमा विकास गर्ने।
- ञ) खेलकुद मैदान, पुस्तकालय/बुक कर्नर र अन्य सिकाइ स्रोत सुनिश्चित गर्ने।
- ट) विद्यार्थीहरूको पहुँच र समावेशीता सुनिश्चित गर्दै सबै पूर्वाधार डिजाइन गर्ने।
- ठ) अनुगमन, मूल्याङ्कन र सुधार मार्फत पूर्वाधारको टिकाउपन र प्रभावकारिता सुनिश्चित गर्ने।

#### ४.६.५ उपलब्धि, नतिजा तथा प्रमुख क्रियाकलापहरू र लक्ष्य

क) उपलब्धि: सबै विद्यार्थीहरूलाई सुरक्षित र उपयुक्त भौतिक वातावरणमा अध्ययन गर्ने अवसर प्राप्त भएको हुनेछ।

ख)

ग) प्रमुख क्रियाकलापहरू तथा लक्ष्य

| क्र.सं. | क्रियाकलाप विस्तृतिकरण   | इकाइ  | लक्ष्य | भौतिक लक्ष (५ वर्ष) |      |      |      |      |       |    |
|---------|--|---|--------|---------------------|------|------|------|------|-------|----|
|         |  |   |        | २०८३                | २०८४ | २०८५ | २०८६ | २०८७ | जम्मा |    |
| १       | विद्यालय भवन निर्माण तथा मर्मतमा भूकम्प प्रतिरोधी (Earthquake Resilient) मापदण्ड अनिवार्य कार्यान्वयन गर्ने गराउने | विद्यालय तथा बालविकास केन्द्र र सिकाइ केन्द्र | ५३     |                     |      |      |      |      |       | ५३ |
| २       | बाढी पहिरो जोखिम क्षेत्रको नक्सांकन गरी जोखिम न्यूनिकरण योजना तयार गर्ने   | आवश्यक ताअनुसार                               |        |                     |      |      |      |      |       |    |
| ३       | विद्यालय परीसरमा वर्षा पानि निकास (Drainage System) सुधार तथा व्यवस्थापन गर्ने                                     | विद्यालय                                      | २७     | २७                  | २७   | २७   | २७   | २७   | २७    | २७ |
| ४       | हरित विद्यालय अवधारणा अनुसार वृक्षारोपण तथा हरियाली प्रवर्द्धन गर्ने   | विद्यालय                                      | २७     | २७                  | २७   | २७   | २७   | २७   | २७    | २७ |
| ५       | सौर्य उर्जा (Solar Power) जडान गरी वैकल्पिक उर्जा प्रयोगलाई विस्तार गर्ने  | विद्यालय                                      | २७     | ५                   | ५    | ५    | ५    | ७    | २७    | २७ |
| ६       | सुरक्षित खानेपानी प्रणाली (Water Purification/Filter System) स्थापना गर्ने   | विद्यालय                                      | २७     | ७                   | ५    | ५    | ५    | ५    | २७    | २७ |
| ७       | विद्यालय भवनमा ताप तथा चिसो न्यूनिकरण गर्ने प्रविधि (Insulation/Ventilation) अपनाउने                               | विद्यालय                                      | २७     | २                   | ४    | ५    | ७    | ९    | २७    | २७ |
| ८       | वद्यलायमा बृहत बिद्यालय सुरक्षा तथा व्यवस्थापन योजना निर्माण तथा कार्यान्वयन तथा अध्याव धक गर्ने ।                 | विद्यालय                                      | २६     | २६                  | २६   | २६   | २६   | २६   | २६    | २६ |
| ९       | विद्यालय भवन तथा पूर्वाधारको नियमित प्राविधिक अनुगमन तथा मर्मत प्रणाली विकास गर्ने                                 | विद्यालय                                      | २६     | २६                  | २६   | २६   | २६   | २६   | २६    | २६ |

## ४.७ विद्यालय शिक्षामा सूचना तथा सञ्चार प्रविधि

### ४.७.१ परिचय

विद्यालय शिक्षाको गुणस्तर सुधार गरी सहरी तथा ग्रामीण, सुगम तथा दुर्गम र निजी तथा सामुदायिक विद्यालयहरूबीच देखिएको शैक्षिक गुणस्तरको दुरी घटाउन एवम् विश्व ज्ञानभण्डारमा विद्यार्थीको पहुँच विस्तार गरी उनीहरूको सिकाइको दायरा फराकिलो पार्न, विशेष गरी शिक्षण सिकाइ क्रियाकलापमा सुधार गर्न, सिकाइ सामग्रीको प्रयोगमा पहुँच बढाउन र शैक्षिक प्रशासन र व्यवस्थापनलाई सुदृढ तुल्याउन वर्तमान समयमा सूचना तथा सञ्चार प्रविधि अपरिहार्य रहेको छ । नेपालको संविधान, २०७२ ले सूचनाको हकमा प्रत्येक नागरिकको आफ्नो वा सार्वजनिक सरोकारको कुनै पनि विषयको सूचना माग्ने र प्राप्त गर्ने हक हुनेछ भनि मौलिक हकमा उल्लेख गरेको छ । शिक्षामा सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको विकास तथा प्रयोगले सबै विद्यार्थीका लागि सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको आधारभूत पहुँच पुर्याइ डिजिटल भिन्नता कम गर्ने, सूचना तथा सञ्चार प्रविधिलाई शिक्षा सिकाइको साधनका रूपमा प्रयोग गरी सिकाइ सुधार गर्ने सबैका लागि शिक्षामा पहुँच पुर्याउने र शिक्षाको व्यवस्थापकीय तथा शासकीय पद्धतिलाई कुशल र प्रभावकारी बनाइ सुशासनको प्रत्याभूतिका लागि सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको प्रयोगलाई सहयोग पुर्याउनु पर्दछ । त्यसैगरी नेपालको सूचना तथा सञ्चार प्रविधि नीति, २०७२ ले सूचना तथा सञ्चारका संरचनामा पहुँच पुर्याउने विषयमा नीति निर्धारण गरेको छ ।

सूचना तथा सञ्चार प्रविधि (ICT) विद्यालय शिक्षामा सिकाइ प्रक्रियालाई थप प्रभावकारी, सहभागी र आधुनिक बनाउन प्रयोग गरिन्छ । ICT मार्फत शिक्षकहरूले बहु-माध्यमिक सामग्री, अनलाइन स्रोत, डिजिटल कक्षाकोठा र शिक्षण सफ्टवेयरको प्रयोग गरी पाठ्यक्रमअनुसार सिकाइ अनुभव समृद्ध बनाउन सक्छन् । विद्यार्थीहरूलाई खोज, अनुसन्धान, प्रोजेक्ट कार्य र संवादात्मक सिकाइमा सहभागी गराउने ICT ले सिकाइलाई सक्रिय र रचनात्मक बनाउँछ । विद्यालय शिक्षामा ICT को प्रयोगले शिक्षण—सिकाइलाई विद्यार्थी केन्द्रित बनाउँछ, सूचना पहुँच सजिलो बनाउँछ, सहकार्य र सञ्चार प्रवर्द्धन गर्छ र डिजिटल सीप विकासमा सहयोग पुऱ्याउँछ । यसले मात्र ज्ञान प्राप्तिमा सहजता ल्याउने होइन, भविष्यका दक्ष र सृजनशील नागरिक तयार पार्नमा पनि महत्वपूर्ण योगदान दिन्छ ।

### ४.७.२ वर्तमान अवस्था

पचालझरना गाउँपालिकामा विद्यालय शिक्षामा सूचना तथा सञ्चार प्रविधि (ICT) को प्रयोग विस्तार हुँदै आएको छ । केही माध्यमिक र आधारभूत विद्यालयमा कम्प्युटर ल्याब, प्रोजेक्टर, स्मार्ट बोर्ड र इन्टरनेट सुविधा उपलब्ध छन् । शिक्षकहरूले सिकाइ प्रक्रियामा डिजिटल स्रोत, अनलाइन सामग्री र प्रस्तुति प्रविधिको प्रयोग गर्दै पाठ्यक्रम अनुसार पाठ सञ्चालन गरिरहेका छन् । तर, सबै विद्यालयमा ICT पहुँच समान छैन । दुर्गम क्षेत्रका विद्यालयहरूमा उपकरण, इन्टरनेट र प्रशिक्षित शिक्षकको अभावले डिजिटल शिक्षामा चुनौती देखा परेको छ । गाउँपालिकाले ICT पहुँच, उपकरण उपलब्धता,

शिक्षक तालिम र डिजिटल पाठ्य सामग्री विकासमा काम गर्दै आएको छ। समग्रमा, पचालझरना गाउँपालिकामा ICT को प्रयोगले शिक्षक र विद्यार्थी दुवैका लागि सिकाइ अनुभव समृद्ध बनाउने क्रम जारी छ, तर समावेशी र पूर्ण पहुँच सुनिश्चित गर्न अझ योजना र स्रोतको आवश्यकता देखिन्छ।

### ४.७.३ उद्देश्य

सबै विद्यालयमा सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको पहुँच सुनिश्चित गरी शिक्षक र विद्यार्थीको सिकाइ अनुभव प्रभावकारी बनाउनु

क) ICT प्रयोगमार्फत डिजिटल क्षमता, अनुसन्धान, सहकार्य र रचनात्मक सोच विकास गर्दै गुणस्तरीय र समावेशी शिक्षा प्रवर्द्धन गर्नु

### ४.७.४ रणनीतिहरू

(क) सबै विद्यालयमा ICT को आधारभूत संरचना र उपकरण (कम्प्युटर, प्रोजेक्टर, स्मार्ट बोर्ड आदि) उपलब्ध गराउने।

(ख) शिक्षकहरूको ICT प्रयोग क्षमता वृद्धि गर्न तालिम र कार्यशाला सञ्चालन गर्ने।

(ग) कक्षा र विषय अनुसार तयार गरिएका अन्तरक्रियात्मक डिजिटल पाठ्य सामग्रीको प्रयोग बढाउने।

(घ) शिक्षक सहायता, मूल्याङ्कन र पृष्ठपोषण प्रणालीमा ICT को प्रयोग गर्ने।

(ङ) शैक्षिक स्रोत र सामग्रीमा इन्टरनेट सुविधा मार्फत विद्यालय र विद्यार्थीहरूको पहुँच विस्तार गर्ने।

(च) विद्यालय प्रशासन, सूचना व्यवस्थापन र शिक्षासम्बन्धी सेवा प्रवाहमा ICT प्रयोग विस्तार गर्ने।

(छ) सामुदायिक सिकाइ केन्द्रहरूमा ICT स्थापना गर्ने।

(ज) दुर्गम क्षेत्रका विद्यालयमा ICT पहुँच सुनिश्चित गर्न मोबाइल/साझा उपकरण वा अनलाइन समाधानको व्यवस्था गर्ने।

(झ) ICT मार्फत विद्यार्थी केन्द्रित, अनुसन्धान र परियोजना आधारित सिकाइ प्रवर्द्धन गर्ने।

(ञ) ICT सम्बन्धी अनुगमन, मूल्याङ्कन र सुधार कार्य योजनामा समावेश गरी प्रभावकारिता सुनिश्चित गर्ने।

### ४.७.५ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य

क) उपलब्धि: विद्यालयमा सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको विस्तार भइ सिकाइलाई प्रभावकारी, गुणस्तरीय र सान्दर्भिक बनाउन सहयोग पुग्नुका साथै विद्यालय शिक्षाको व्यवस्थापनमा सुधार आइ सुशासन प्रबर्द्धन हुनेछ।

ख) प्रमुख क्रियाकलापहरू तथा लक्ष्य

| क्र.सं. | क्रियाकलाप विस्तृतिकरण  | इकाइ          | लक्ष्य | भौतिक लक्ष (५ वर्ष) |      |      |      |      |       |
|---------|---|---------------|--------|---------------------|------|------|------|------|-------|
|         |   |               |        | २०८३                | २०८४ | २०८५ | २०८६ | २०८७ | जम्मा |
| १       | विद्यालयमा ICT संरचना विस्तार   | वटा           | २७     | २                   | ४    | ५    | ७    | ९    | २७    |
| २       | प्रत्येक विद्यालयमा Internet Connectivity को व्यवस्था   | वटा           | २७     | २७                  | २७   | २७   | २७   | २७   | २७    |
| ३       | शिक्षकहरूको क्षमता विकास  | जना           | १००    | २०                  | २०   | २०   | २०   | २०   | १००   |
| ४       | विद्यालय अन्तरक्रियात्मक डिजिटल सामग्रीको प्रयोग  | वटा           | २७     | २                   | ४    | ५    | ७    | ९    | २७    |
| ५       | IEMIS व्यवस्थापन सम्बन्धी तालिम   | प्रधानाध्यापक | २७     | २७                  | २७   | २७   | २७   | २७   | २७    |
| ६       | सम्पूर्ण विद्यालयहरूमा ई-हाजिरी प्रणालीको व्यवस्थापन  | विद्यालय      | २७     | २७                  |      |      |      |      | २७    |
| ७       | माध्यमिक विद्यालयमा अनिवार्य विषयहरूको भर्चुअल कक्षा संचालन   | वटा           | १०     | १०                  | १०   | १०   | १०   | १०   | १०    |
| ८       | प्रविधिमैत्री सिकाइका लागि टेलिभिजन, कम्प्युटर, इन्टरनेट आदि प्रयोगका लागि तालिम सञ्चालन तथा व्यवस्थापन | पटक           | ५      | १                   | १    | १    | १    | १    | ५     |

## परिच्छेद ५ : अन्य उपक्षेत्र

### ५.१ सार्वजनिक पुस्तकालयको प्रबन्ध र व्यवस्थापन

मानव विकासको सर्वोत्तम आधार गुणस्तरीय शिक्षा र गुणस्तरीय शिक्षाको प्रथम आधारस्तम्भ पुस्तकालय हुन्। पुस्तकालय प्रकृति र स्वरूप अनुरूप चार प्रकारका हुन्छन् । जसमध्ये सार्वजनिक पुस्तकालय पनि एक हो । सार्वजनिक पुस्तकालयले समाजमा सबै उमेर समूह, वर्ग, जात धर्म तथा लिङ्ग वर्ण आदिका आधारमा कुनै भेदभाव नगरी समान पहुँचको अवसर प्रदान गर्दै समाजमा शिक्षा, सूचना तथा ज्ञान सेवा दिई सबल समाज निर्माणको आधार तय गर्छन् । त्यसैले सार्वजनिक पुस्तकालयलाई जनताको खुला विश्वविद्यालय पनि भनिन्छ । सार्वजनिक पुस्तकालय प्रजातान्त्रिक तथा लोकतान्त्रिक अभ्यासका मूल्य, मान्यता तथा संस्कारको विकासका लागि उत्तम प्रयोगशाला हुन् । सार्वजनिक पुस्तकालयले जनतालाई समान अवसर एवंम् पहुँच दिई जीवनोपयोगी शिक्षा र जीवन्त सिकाइ सुनिश्चित गर्दै नागरिक चेतना विस्तार र संविधानले प्रदान गरेको सूचनाको हकको प्रत्याभूति गराउन उल्लेख्य भूमिका खेल्छन् । समाजिक, सांस्कृतिक मूल्य मान्यता, सभ्यता संस्कार संस्कृति इतिहासको संरक्षण संवर्द्धनजस्तो महत्वपूर्ण कार्य गरी पुस्तौपुस्तासम्म उपयोगमा सहजता ल्याउँछन् । त्यसैगरी, सार्वजनिक पुस्तकालयमार्फत् मानवीय विकासको साथै समाजिक चेतना अभिवृद्धि विकासमा नागरिक सहभागिता एवंम् सूचनाको हकमा पहुँच वृद्धि र विस्तार गर्न पनि सहयोग पुग्छ । सार्वजनिक पुस्तकालयमा नै व्यक्तित्व विकास गरी जीवन जीउने कला सिकाउन सकिन्छ । राष्ट्रिय स्तरका योजना, नीति तथा कार्यक्रम निर्माण गर्न सघाउँदै हरेक स्थानीय तहमा निर्णय र विकास प्रक्रियामा जनसहभागिता सार्थक बनाउन सामाजिक अन्तरक्रिया गर्ने, उत्तम थलोका रूपमा प्रयोग गर्न सकिन्छ । यसरी सार्वजनिक पुस्तकालयले समाजको सर्वाङ्गीण विकास गर्नु, गर्नुका साथै व्यक्ति र समुदायमा सकारात्मक परिवर्तन ल्याउने कार्यमा सहयोग गर्छन् ।

यस खण्डमा सार्वजनिक पुस्तकालयको प्रबन्ध, व्यवस्थापन र सञ्चालनमा सबैको समावेशी पहुँच, गुणस्तर तथा समता र व्यवस्थापकीय प्रबन्धको वर्तमान अवस्थाको समीक्षाका आधारमा चुनौती र अवसरहरूको पहिचान गरी आगामी दश वर्षका लागि पचालझरना गाउँपालिकाको सार्वजनिक पुस्तकालयो व्यवस्थापन तथा विकासका उद्देश्य, रणनीति, नतिजा र प्रमुख क्रियाकलापहरू तथा लक्ष्य उल्लेख गरिएको छ ।

सार्वजनिक पुस्तकालयले जनतालाई समान अवसर एवंम् पहुँच दिई जीवनोपयोगी शिक्षा र जीवन्त सिकाइ सुनिश्चित गर्दै नागरिक चेतना विस्तार र संविधानले प्रदान गरेको सूचनाको हकको प्रत्याभूति गराउन उल्लेख्य भूमिका खेल्छन् । समाजिक, सांस्कृतिक मूल्य मान्यता, सभ्यता संस्कार संस्कृति इतिहासको संरक्षण संवर्द्धनजस्तो महत्वपूर्ण कार्य गरी पुस्तौपुस्तासम्म उपयोगमा सहजता ल्याउँछन् । त्यसैगरी, सार्वजनिक पुस्तकालयमार्फत् मानवीय विकासको साथै समाजिक चेतना अभिवृद्धि विकासमा नागरिक सहभागिता एवंम् सूचनाको हकमा पहुँच वृद्धि र विस्तार गर्न पनि सहयोग पुग्छ । सार्वजनिक पुस्तकालयमा नै व्यक्तित्व विकास गरी जीवन जीउने कला सिकाउन सकिन्छ । राष्ट्रिय स्तरका योजना, नीति तथा कार्यक्रम निर्माण गर्न सघाउँदै हरेक स्थानीय तहमा निर्णय र विकास प्रक्रियामा जनसहभागिता सार्थक बनाउन सामाजिक अन्तरक्रिया गर्ने, उत्तम थलोका रूपमा प्रयोग गर्न सकिन्छ । यसरी सार्वजनिक पुस्तकालयले समाजको सर्वाङ्गीण विकास गर्नु, गर्नुका साथै व्यक्ति र समुदायमा सकारात्मक परिवर्तन ल्याउने कार्यमा सहयोग गर्छन् ।

## ५.१.१ वर्तमान अवस्था

‘पढौं पढाऔं, निरन्तर शिक्षाका लागि पुस्तकालय जाऔं’ भन्ने आदर्श वाक्यका साथ यस वर्ष १५ औं पुस्तकालय दिवस मनाइएको छ । नेपालमा १८६९ साल भदौ १५ का दिन तत्कालिन राजा गीर्वाणयुद्धविक्रम शाहले पुस्तक चिताइ तहविल नामक ऐतिहासिक दस्तावेजमा लालमोहर जारी गरी पुस्तकालयको सञ्चालन तथा व्यवस्थापनलाई वैधानिकता प्रदान गरेको दिनलाई आधार मानी २०६५ देखि हरेक वर्ष भदौ १५ गते पुस्तकालय दिवस मनाइँदै आएको छ । पुस्तकालय प्रयोगमा रूचि जगाउने, सानै उमेरदेखि पठन संस्कृतिको विकास गर्ने,, शिक्षा, सूचना तथा ज्ञानका स्रोतको सङ्कलन, व्यवस्थापन गरी आवश्यकताका आधारमा समाजमा सम्प्रेषण गराउनेजस्ता विभिन्न गतिविधि गर्ने,, पुस्तकालय विकासका लागि संस्थागत समन्वय स्थापना गर्ने,, जनचेतना विकास गर्ने, तथा पुस्तकालय विकासका लागि निरन्तर पैरवी गर्नु,गर्नु, आजको मुख्य आवश्यकता रहेको छ ।

हरेक स्थानीय तहमा कम्तीमा एउटा सुव्यवस्थित सार्वजनिक पुस्तकालय भएमा मात्र सबल समाज निर्माणको परिकल्पना गर्न सकिन्छ । सभ्य, सुशील शिक्षित नागरिक बनाई ज्ञानमा आधारित समतामूलक समाज निर्माणको राष्ट्रिय इच्छा तब मात्र पूरा हुनेछ । वास्तवमा सार्वजनिक पुस्तकालय जनहित, उन्नति, प्रगति, समृद्धिका साथै जनकल्याणका लागि हुन् । राज्यले यिनको विकास विस्तारको दायित्व लिनुपर्छ भने जनताले आफ्नो अधिकारका रूपमा प्रयोग तथा उपयोग गर्नु,गर्नु,पर्छ । नेपालमा पुस्तकालय क्षेत्र सम्भावनायुक्त भए पनि विभिन्न समस्याले जगडिएको छ । सार्वजनिक पुस्तकालय विकासका लागि अनेकौं अवसरका साथै उत्तिकै चुनौती पनि रहेका छन् ।

### चुनौतीहरू

सार्वजनिक पुस्तकालय विकासका समस्या तथा चुनौती रहेका छन् । सार्वजनिक पुस्तकालय विकासका लागि राज्य सञ्चालनमा रहने नेतृत्वको इच्छाशक्ति नै नहुनु, समयसंगै देशमा अवस्था र व्यवस्थामा परिवर्तन भए पनि सोचमा परिवर्तन आउन नसक्नु, पुस्तकालयलाई पुरातन दृष्टिकोणबाट मात्र हेरिनु, विकासका लागि यो क्षेत्र प्राथमिकतामा नपर्नुलाई समस्या तथा चुनौतीका रूपमा लिन सकिन्छ । पुस्तकालय सञ्चालन तथा व्यवस्थापनका लागि कुनै ऐन, नियम, संस्कृतिको तर्जुमा नहुनु, २०६४ साल असारमा पारित भएको पुस्तकालय तथा सूचना सेवा राष्ट्रिय नीतिको कार्यन्वयनका लागि बनेको पुस्तकालय निर्देशिका २०६९ शासन संरचनाअनुरूप सान्दर्भिक नहुनु, पुस्तकालय गुरुर्योजना, पुस्तकालय स्वचालित योजना कार्यन्वयनमा नआउनु, राष्ट्रिय पुस्तक नीति पारित हुन नसक्नुले सार्वजनिक पुस्तकालय विकासको विकासमा समस्या बल्झिँदै गएको छ ।

त्यसैगरी, चेतनाको कमी, पठनसंस्कृतिको अभाव, स्रोतसाधनको न्यायोचित वितरण नहुनु, दक्ष जनशक्ति तथा बजेटको अभावजस्ता विषय त स्थानीय तहका स्थायी चुनौती नै हुन् । सार्वजनिक पुस्तकालय विकास विस्तार तथा सेवाको आधारशिला तयार हुन नसक्नु, समन्वयात्मक व्यवहार असल कार्यशैली कुशल संस्कार अभाव र संस्थागत समन्वयको स्थापना गर्न सक्नुजस्ता अनेकौं समस्या र चुनौतीहरू पुस्तकालय विकासमा रहेका छन् ।

### अवसरहरू

समाजिक न्याय, प्रादेशिक सन्तुलन, सभ्य र समतामूलक समाज निर्माणमा अग्रणी भूमिका खेल्ने सार्वजनिक पुस्तकालय विकासका लागि धेरै अवसर पनि रहेका छन् । सङ्घीय लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था सबैभन्दा ठूलो अवसर हो । यसको उपयोग, प्रयोग तथा परिचालनले सार्वजनिक पुस्तकालय विकासमा अवसरको ढोका खोलेको हुन्छ । नेपालको संविधान २०७२ कार्यन्वयनमा आएसंगै मुलुकमा सङ्घ, प्रदेश र स्थानीय तह गरी तीन तहको राज्यको संरचना रहेको छ । राज्यशक्तिको बाँडफाँड पनि संविधानमै एकल र साझा अधिकार सूचीका रूपमा उल्लेख गरेको छ ।

तीनै तहले पुस्तकालय तथा वाचनालयको विकासको जिम्मेवारी संविधानतः पाएका छन् । संविधानको भाग २० धारा २३२ मा सङ्घ, प्रदेश र स्थानीय तहबीचको सम्बन्ध सहकारिता, सहअस्तित्व र समन्वयको सिद्धान्तमा आधारित हुने उल्लेख छ । यसले सङ्घमा राष्ट्रिय पुस्तकालयको विकास विस्तार तथा कुशल व्यवस्थापन गरी हरेक स्थानीय तहसम्म सार्वजनिक पुस्तकालयको विकासमा सञ्जालीकरण गर्ने, सुनौलो अवसर दिएको छ ।

संविधानको भाग ४ मा राज्यका निर्देशक सिद्धान्त, नीति तथा दायित्व अन्तर्गत धारा ५१ को (ज) ४ मा नागरिकको व्यक्तित्व विकासका लागि सामुदायिक सूचनाकेन्द्र र पुस्तकालयको स्थापना र प्रवर्द्धन गर्ने, उल्लेख छ । सातौँ संविधानका रूपमा रहेको सङ्घीय, लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था अंगालेको नेपालको संविधान २०७२ मा आएर पुस्तकालयले पहिलोपटक स्थान पाएको छ । जसलाई पुस्तकालय विकास र विस्तारका लागि नीतिगत अवसरका रूपमा लिन सकिन्छ ।

### ५.१.२ उद्देश्य

१. पुस्तकालय सञ्चालन तथा विकासका लागि संस्थागत संयन्त्र स्थापना गर्नु,
२. सार्वजनिक पुस्तकालयमा सबै नागरिकको समावेशी पहुँच वृद्धि गरी पठन संस्कृतिको विकास गर्नु,

### ५.१.३ रणनीति

१. गाउँपालिकास्तरमा एक सार्वजनिक पुस्तकालयको स्थापना र सञ्चालन गर्नु,
२. पुस्तकालय सञ्चालनका लागि आवश्यक जनशक्ति व्यवस्थापन तथा क्षमता विकास गर्नु,
३. सार्वजनिक पुस्तकालयमा इच्छुक व्यक्तिहरूबाट पुस्तक दान गर्नका लागि उत्प्रेरित गर्ने, कार्य गर्नु,
४. सबै नागरिकहरूमा पुस्तक पढने बानिको विकास गर्नका लागि आवश्यक कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्ने, ।

### ५.१.४ प्रमुख उपलब्धि र नतिजा

#### उपलब्धि

पालिकास्तरीय सार्वजनिक पुस्तकालयको स्थापना भई सबै नागरिकको समावेशी पहुँच अभिवृद्धि भएको हुने ।

#### प्रमुख नतिजा तथा परिमाणात्मक लक्ष्य

| क्र. सं. | सूचक   | आधारवर्ष २०६९ | २०६९ /०६२ | २०६२ /०६३ | २०६३ /०६४ | २०६४ /०६५ | २०६५ /०६६ |
|----------|--|---------------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|
| १        | सार्वजनिक पुस्तकालयको सङ्ख्या                                | ०             | १         | १         | १         | १         | १         |
| २        | सार्वजनिक पुस्तकालयमा भएका पुस्तकहरूको सङ्ख्या               | ०             | १००       | २००       | ३००       | ४००       | ५००       |
| ३        | सार्वजनिक पुस्तकालयमा कार्यरत दक्ष जनशक्ति                   | ०             | १         | २         | ३         | ४         | ५         |
| ४        | सार्वजनिक पुस्तकालयमा पुस्तक दान गर्ने, व्यक्तिहरूको सङ्ख्या | ०             | १०        | २०        | ३०        | ४०        | ५०        |
| ५        | सार्वजनिक पुस्तकालयको प्रयोग गर्ने, नागरिकहरूको सङ्ख्या      | ०             | ५०        | १००       | १५०       | २००       | २५०       |

५.१.५ प्रमुख क्रियाकलाप र परिमाणात्मक लक्ष्य

| क्र. सं. | प्रमुख क्रियाकलाप   | एकाइ    | लक्ष्य | भौतिक लक्ष्य ( ५वर्ष) |      |      |      |      |       | भौतिक लक्ष्य (१० वर्ष) |   |
|----------|---|---------|--------|-----------------------|------|------|------|------|-------|------------------------|---|
|          |   |         |        | २०८१                  | २०८२ | २०८३ | २०८४ | २०८५ | जम्मा |                        |   |
| १        | सार्वजनिक पुस्तकालय सञ्चालनका लागि मापदण्ड निर्माण गर्ने,     | सङ्ख्या | १      | १                     |      |      |      |      |       | १                      |   |
| २        | पुस्तकालय भवन निर्माण गर्ने,                                  | सङ्ख्या | १      |                       | १    |      |      |      |       | १                      |   |
| ३        | सार्वजनिक पुस्तकालयमा पुस्तकहरूको व्यवस्था गर्ने,             | सङ्ख्या | १      |                       | √    | √    | √    | √    | √     | √                      |   |
| ४        | पुस्तकालयमा आवश्यक जनशक्तिहरूको व्यवस्थापन गर्ने,             | सङ्ख्या | २      |                       | १    | १    |      |      |       | २                      |   |
| ५        | कार्यरत जनशक्तिहरूको क्षमता विकास गर्ने,                      | पटक     | ५      | ०                     | १    | १    | १    | १    | १     | ४                      | १ |
| ६        | पुस्तक दान गर्न चाहने व्यक्तिहरूका लागि आवश्यक सहजीकरण गर्ने, | पटक     | ५      | ०                     | १    | १    | १    | १    | १     | ४                      | १ |

## परिच्छेद ६

### ६.१ सुशासन तथा व्यवस्थापन

#### ६.१.१ परिचय

शिक्षा क्षेत्रको परिमाणमुखि विकास तथा प्रभावकारी सेवा प्रवाहका लागि यस गाँउपालिकाको लागि संस्थागत क्षमता विकास एक महत्वपूर्ण आधार हो । शिक्षासम्बन्धी सम्बन्धी राष्ट्रिय नीति, मापदण्ड, योजना र कार्यक्रमको प्रभावकारी कार्यान्वयन गरी अपेक्षित नतिजा हासिल गर्नाका लागि संस्थागत क्षमता विकासमा जोड दिन अति आवश्यकता रहेकोछ । यो शिक्षा क्षेत्र योजनाको पूर्ण रूपमा कार्यान्वयनको लागि स्थानीय सरकारले सम्पादन गर्नु पर्ने अधिकतम कार्यक्रमहरू सम्पादन गर्न विद्यमान जनशक्तिलाई कस्तो प्रकारको क्षमता विकासको आवश्यकता छ, त्यसको लेखाजोखा गरी अगामी पाँच वर्षका लागि कर्मचारी र जनप्रतिनिधिहरूको व्यक्तिगत क्षमता, स्थानीय तहको संस्थागत क्षमता र थप सुधार गर्नुपर्ने आवश्यकता लिई मध्यनजर गरेर योजना बद्धरूपमा अगाडी बढ्नुअति आवश्क हुन्छ । स्थानीय तहले आफ्ना अधिकारिभन्न रहेर आवश्यकता अनुसार नीति, योजना तथा कार्यक्रम र बजेट तर्जुमा लगायत विभिन्न विषयगत क्षेत्रको विकासका लागि आवश्यक क्षमता विकासका क्षेत्रहरूको पहिचान सहित योजनाबद्ध हनुपर्दछ । सर्वप्रथम संस्थाको संरचनालाई दुरुस्त पार्नु पर्ने एउटा पाटो हो भने संरचनाको जिम्मेवारी अनकूल हुनेगरी आवश्यक सङ्ख्यामा मानव संसाधनको व्यवस्था र तिनिहरूको जिम्मेवारी अनुसारका कार्य गर्न सक्नेगरी ज्ञान, सिप र क्षमताको विकास गर्नुजरुरी छ । यसका अतिरिक्त पचालझरना गाउँपालिकाले जनसमक्ष न्यनुतम र निरन्तर पुर्याउनुपर्ने सेवाहरू मध्य शिक्षा क्षेत्र अन्तर्गतका सेवाहरू पनि हुन्छन । यी सबै प्रकारका सेवाहरू उचित व्यवस्थापनको लागि संस्थागत क्षमता विकासको आवश्यकता पर्दछ । तर्सथ, यो शिक्षा क्षेत्रको योजना तर्जुमाको सन्दर्भमा संस्थागत क्षमता विकास र सुशानलाई प्रमुख साधन तथा माध्यमको रूपमा लिई योजना तर्जुमा गरिएको छ । यो पचालझरना गाँउपालिका शिक्षा योजना तर्जुमा गर्दा संस्थागत विकास तथा तथा क्षमता विकास, श्रोत परिचालन, स्थानीय सुशासन, विकास व्यवस्थापन, लैङ्गिक समता तथा सामाजिक समावेशिकरण र शिक्षित वर्ग तथा समदायको मूलप्रवाहीकरण सम्बन्धी सम्बन्धी विषयहरू समावेश गरिएका छन । सोहौ योजनामा सबै

जाति, धर्म, भाषा, सिंस्कृति र सम्प्रदायबिच पारस्परिक सद्भाव र सहिषुणताको भावना जागृत गराई राष्ट्रिय एकता कायम गर्न विद्यालय शिक्षा देखि विश्वविद्यालय शिक्षासम्मको पाठ्यक्रममा समायानुकूल परिमार्जन गरि कार्यान्वयन गर्ने कुरा उल्लेख गरिएको छ । साथै सार्वजनिक सेवा र सेवा प्रवाहसँग सम्बन्धी सम्बन्धित कर्मचारी प्रशासनलाई जनमूखी र परिणाममूखी बनाउन सार्वजनिक सेवा सम्पादन सम्बन्धी विशेष सावजनिक सेवा कार्य सम्पादन ऐन निर्माण गर्ने; सङ्घ, प्रदेश र स्थानीय तहबाट प्रवाह हुने सेवालार्ई छँटो, छरितो, चुस्त, दुरुस्त तथा प्रभावकारी बनाउन अनुहार रहित र कागज रहित बनाइ विधुतिय सुशासन प्रवद्धन गर्ने; एउटै विवरण एक पटक मात्र सङ्कलन गर्ने आवश्यक कानूनी व्यवस्था गर्ने; सार्वजनिक सेवा प्रवाहलाई लक्षित वर्गको सेवाग्राहीको माग र आवश्यकतालाई सम्बोधन हुनेगरी सेवा तथा सहायता प्रदान गर्न प्रशासनिक व्यवस्थामा सुधार गर्ने; सार्वजनिक निकायहरूमा हुनेसबै प्रकारका भुक्तानीहरूलाई विधुतिय स्वरूपमा रूपान्तरण गर्ने; गनुसोको सनुवाउँ तथा तत्काल सम्बोधन हुने प्रणालीको विकास गर्ने; सावजनिक सेवामा आबद्ध पदाधिकारी तथा कर्मचारीसँग गरिएको कार्य सम्पादन करारलाई नतिजामूलक बनाउने व्यवस्थापन परिक्षण र कार्य परिक्षण लागु गरी कार्य सम्पादन प्रणालीमा सुधार गर्ने उल्लेख गरिएको छ ।

## ६.१.२ शिक्षाको व्यवस्थापन तथा सस्थागत क्षमता विकास

### ६.१.२.१ परिचय

योजनाले तोकेका लक्ष्य तथा उद्देश्यहरूको प्राप्तिका लागि त्यसमा समावेश भएका क्रियाकलापहरूको कार्यान्वयन, सञ्चालन, व्यवस्थापन, अनुगमन, निरीक्षण, पृष्ठपोषण तथा मूल्याङ्कन जस्ता कार्यका लागि संस्थागत संरचना र त्यसमा कार्यरत मानवीय स्रोतको आवश्यकता पर्दछ । संस्थागत संरचनाले कार्यक्रमलाई व्यवस्थित र सरल बनाउने मात्र नभइ त्यसको प्रभावकारितामा पनि महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गरेको हुन्छ । योजना तथा कार्यक्रमहरूको कार्यान्वयनका लागि कसले, के, कसरी, कहिले र कहाँ जस्ता प्रश्नहरूको उत्तर संस्थामा काम गर्ने व्यक्तित्वसँग जोडिएको हुन्छ । नेपालको संविधान, २०७२ को कार्यान्वयन सँग देशमा शिक्षा प्रशासन सम्बन्धी सम्बन्धी कार्य गर्ने निकायहरूको संस्थागत संरचना र सँगठनात्मक स्वरूपमा फेरबदल भएको छ । नेपालको संविधान, २०७२ ले सङ्घ, प्रदेश र स्थानीय तहको एकल

अधिकार भित्र आधारभूत तथा माध्यमिक शिक्षा र साझा अधिकार भित्र शिक्षा रहने व्यवस्था गरेपश्चात शिक्षा क्षेत्रको विद्यमान संरचनालाई हेर्दा केन्द्र स्तरमा शिक्षा,विज्ञान तथा प्रविधि मन्त्रालय तथा शिक्षा तथा मानव स्रोत विकास केन्द्र लगायतका ७ निकायहरू, प्रदेश स्तरमा सामाजिक विकास मन्त्रालय, शिक्षा विकास निर्देशनालय र मावन संसाधन विकास केन्द्र, जिल्ला स्तरमा शिक्षा विकास तथा समन्वय ढङ्ग र स्थानीय तहमा शिक्षा, युवा तथा खेलकुद महाशाखा/शाखाले शिक्षा सम्बन्धी सम्बन्धी कार्य गर्दै आइरहेका छन् । केन्द्रदेखि स्थानीय तह सम्मका सबै संस्थागत कार्यालयहरूमा तहगत र श्रेणीगत रूपमा विभिन्न कर्मचारीको सँगठनात्मक दरबन्दीको व्यवस्था गरी प्रशासन सञ्चालन गर्ने, कार्यालय व्यवस्थापन गर्ने, कार्यालयको सेवा प्रवाह गर्ने र त्यसलाई निरन्तरता दिने र विद्यमान तमाम समस्याहरूको समाधान गर्ने कार्य भइरहेको छ । संविधान कार्यान्वयनसँग संस्थागत तथा सँगठनात्मक संरचनामा फेरबदल भएता पनि हालसम्म कानुनहरू नबनिसकेकाले कसले, के काम कसरी गर्ने? कसको जिम्मेवारी र अधिकार कति हुने भन्ने विषयले अन्यायलता पैदा गरेको छ ।

शैक्षिक सुशासन प्रवर्द्धनका लागि तीनै तहका सरकार र राजनैतिक दलहरूले विद्यालय शिक्षा निःशुल्क हुने प्रावधान लागू गर्नुपर्ने देखि लिएर सार्वजनिक विद्यालयको भौतिक संरचना, पाठ्यक्रममा सुधार, स्थानीय पाठ्यक्रमको प्रभावकारी प्रयोग, शिक्षणको माध्यम भाषा, पाठ्यपुस्तकमा सुधार, सूचना प्रविधिको प्रयोग, आफ्ना विषयमा अब्बल ठहरिएका व्यक्तिलाई शिक्षकमा नियुक्ति, शिक्षण संस्थामा राजनीतिको प्रवेश निषेध गर्ने कुरामा प्रतिबद्धता समेत जनाउनु पर्नेमा जोड दिइएको छ । यसरी प्रतिबद्धता गरिएका विषयवस्तुको उचित कार्यान्वयन गरी अनुगमन तथा सुपरीवेक्षणका आधारमा आवश्यक पृष्ठपोषण दिने कामलाई व्यवस्थित र प्रभावकारी बनाइनुपर्दछ भन्ने विषयलाई लेखमा जोड दिइएको छ । विद्यालय व्यवस्थापन समिति र शिक्षक अभिभावक सङ्घको गठन र विद्यालयको समग्र व्यवस्थापन तथा सुशासन प्रवर्धन मा नेतृत्वदायी भूमिका बारेमा विस्तृतरूपमा व्याख्या गरिएको छ । विद्यालयमा प्र.अ, शिक्षक, अभिभावक र विद्यार्थी स्वयम्को पनि तत् स्थानमा विद्यालय सुशासनका लागि महत्वपूर्ण भूमिका हुने बारेमा व्याख्या गरिएको छ । विद्यालय सुशासनको विषय कुनै एक सरोकारवालाको मात्रै एकल जिम्मेवारी नभई विद्यालयका प्रत्यक्ष र अप्रत्यक्ष सरोकारवालाहरूको जिम्मेवारिता बोध तथा विद्यालय प्रतिको अपनत्वले मात्रै सम्भव हुने वास्तविकता समेटिएको छ । यसैगरी

सङ्घीय संरचनामा नागरिकको नजिक रहेको स्थानीय सरकारले सम्बन्धी सम्बन्धित गाउँपालिका र नगरपालिका अन्तर्गत सञ्चालित आधारभूत तथा माध्यमिक तहको शिक्षाको समग्र व्यवस्थापन हेर्ने संबैधानिक र कानूनी प्रावधानको कार्यान्वयनमार्फत शैक्षिक गुणस्तरका साथै समग्र शैक्षिक व्यवस्थापनमा गुणात्मक सुधार ल्याउन खेल्नुपर्ने भूमिकाहरूका बारेमा पनि यस पुस्तकमा छलफल गरिएको छ । स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ को दफा ११ उपदफा (२) को (ज) मा आधारभूत र माध्यमिक शिक्षा सम्बन्धी प्रावधान समावेश गरिएता पनि त्यसको कार्यान्वयन पूर्णरूपले हुन नसकेको उजागर गर्दै स्थानीय सरकारले आफूलाई प्राप्त संबैधानिक तथा कानूनी अधिकारको प्रयोग गर्न नीतिगत, कानूनी, संस्थागत र व्यवहारगत सुदृढीकरण जरुरी रहेको कुरामा पनि पुस्तकमा जोड दिइएको छ । हालसम्म भएका असल अभ्यासबाट सिक्दै स्थानीय आवश्यकता र मागको आधारमा आधारभूत र माध्यमिक तहको शिक्षामा नयाँ व्यवस्थापकीय शैली अवलम्बन गर्नुपर्छ साथै नागरिक समाजको सहकार्यमा स्थानीय सरकार उत्तरदायी, जिम्मेवार र पारदर्शी ढङ्गले काम गर्न सकेमा स्थानीय तहमा विद्यालय सुशासन कायम भई शैक्षिकलगायत आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक र राजनैतिक क्षेत्रको समग्र रूपान्तरण संभव हुने विषयलाई महत्वका साथ उल्लेख गरिएको छ ।

#### ६.१.२.२ वर्तमान अवस्था

पचालझरना गाउँपालिकाका विद्यालयहरूमा प्राप्त स्रोत र साधनको अधिकतम सदुपयोग गरी सबैले चित्तबुझ्दो र समयानुकूल गुणस्तरीय शिक्षा प्रयोग गर्न पाउनु आजको आवश्यकता रहेको छ । यसका लागि विद्यालयले कुशल व्यवस्थापन साथै असल शासनका आधारभूत मान्यतालाई आत्मसाथ गरी सरोकारवालाहरूले पाउनुपर्ने आधारभूत सेवा पारदर्शिता तथा छिटो छरितो र कम खर्चिलो ढङ्गले पाउने अवस्था सिर्जना गर्नु नै विद्यालय सुशासन हो । बालबालिकाहरूले सहज वातावरणमा पढ्ने, पठनपाठन गर्ने गराउने व्यक्ति तथा निकायहरूले सहज ढङ्गमा सेवा उपलब्ध गराउने र गराउन पाउने वातावरण सिर्जना गर्ने, सबै कुराहरू व्यवस्थापकीय ढङ्गबाट प्रभावकारी भएको अवस्था नै सुशासन हो । सुशासनका प्रमुख खम्बाहरू जनसहभागिता, कानूनको शासन, सहमतीउन्मुख, समता र समावेशी, पारदर्शिता, जिम्मेवारिता, दक्षता, प्रभावकारिता र जवाफदेहिता हुन् । वर्तमान अवस्थामा सुशासनका सन्दर्भमा शिक्षा सरोकारवालाहरू आमरूपले

सन्तुष्ट भएको अवस्था छैन । सुशासन कति पनि छैन भन्दा पनि हुनुपर्ने जति नभएको अवस्था हो । विद्यालय सुशासनको पाटो कमजोर छ । जसले हाम्रो शैक्षिक कार्यक्रम जुन ढङ्गले अघि बढ्नुपर्ने हो त्यसो हुन सकेको छैन । सबैले जिम्मेवारी वहन गर्ने र त्यसप्रति अपनत्व स्वीकार गर्ने पाटो कमजोर देखिन्छ । कतिपय अवस्थामा नीतिगत सवालहरूले अल्मलिएको देखिन्छ । नयाँ काम गरेर नयाँ गति दिने अभ्यास नगरेको पनि होइन, नीति तथा कार्यक्रमहरू पनि राम्रा छन् तर कार्यान्वयनको पाटो कमजोर र फितलो रहेको देखिन्छ । शिक्षा सम्बद्ध कर्मचारी जिम्मेवार ढङ्गले अगाडि बढ्न नसकेको एकातिर देखिन्छ भने अर्कातिर विद्यालयका प्रधानाध्यापक, शिक्षक र अभिभावकहरू पनि जिम्मेवारी नभएको अवस्था रहेको यसैगरी गाउँपालिकाको समग्र संस्थागत संचाललाई हेर्दा गाउँसभाले शिक्षा सम्बन्धी सम्बन्धी नीति, योजना तथा कार्यक्रम पास गर्ने कार्य, गाउँ कार्यपालिकाले कार्यक्रम तथा बजेट निर्माण गर्ने कार्य, गाउँ शिक्षा समिति बजेट तथा कार्यक्रम निर्माणका लागि सिफारिस, प्राप्त बजेटको बाँडफाँड, शिक्षा सम्बन्धी सम्बन्धी महत्वपूर्ण निर्णयहरू गर्ने, विद्यालय अनुगमन तथा सुपरिवेक्षण गर्ने कार्य, वडा शिक्षा समितिले विद्यालयका लागि आवश्यक थप सहयोग गर्ने, विद्यालय व्यवस्थापन समितिले विद्यालयको सञ्चालन, रेखदेख र व्यवस्थापन गर्ने कार्य, शिक्षक अभिभावक सङ्गले विद्यालयको आर्थिक तथा शैक्षिक गतिविधि सम्बन्धी सम्बन्धी कार्य गर्दै आएका छन् । साथै सबै विद्यालयहरूमा विद्यालयको दैनिक प्रशासन सञ्चालनका लागि प्रधानाध्यापक रहने व्यवस्था पनि रहेको छ । तर विद्यालय व्यवस्थापन समिति, शिक्षक अभिभावक सङ्ग र प्रधानाध्यापकहरूको क्षमता विकासका कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्न नसक्दा शैक्षिक क्षेत्रका समस्याहरू बढ्दै गएको देखिन्छ ।

उल्लेखित परिवेशमा यस योजना मार्फत हाल विद्यालयहरूमा विद्यमान सुशासनका अवस्था, गुणस्तरीय शिक्षा प्रत्याभुतिका लागि सुशासनको महत्व, राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा अवलम्बन गरिएका सुशासनका अभ्यास साथै शैक्षिक सुशासन प्रवर्धन का लागि सरोकारवालाहरूको भूमिकाबारे व्याख्या गरिएको छ । विशेषगरी गुणस्तरीय शिक्षा भनेको व्यक्ति मात्र स्वावलम्बी वा सवल बन्ने होईन समाजको चौतर्फी विकास गर्न सक्ने व्यक्तिको सक्षमतासँग जोड्नु आवश्यक रहेको विषय उजागर गर्न खोजिएको छ । शिक्षाका प्रक्रिया, नीति निर्माण र अभ्यासहरू अर्थपूर्ण ढङ्गले सहभागितामूलक हुनुपर्ने, रैथाने वा स्थानीय परम्परागत संस्थाहरूद्वारा हुने प्रतिनिधिमूलक

सहभागिता बढि वैधानिक र प्रभावकारी हुने विश्लेषण गर्दै रैथाने वा स्थानीय सांस्कृतिक अभ्यासहरूलाई सुशासनको रणनीतिहरू बनाउन सकेमा विद्यालयले समुदायसँग गाढा सम्बन्ध निर्माण गर्न, विद्यालय सुशासनको पश्चिमा विचार र अभ्यासहरूद्वारा निर्देशित नीति र अभ्यासहरूलाई परिवेश सान्दर्भिक बनाउन आवश्यक रहेको व्याख्या गरिएको छ । विशेषगरी यस गाउँपालिकाको हकमा कतिपय विद्यालय व्यवस्थापन समिति र शिक्षक अभिभावक सङ्घ गठन नहुनाले वा भए पनि निधारण गरिएको मापदण्डको कम पालना गरिएको देखिन्छ साथै सामाजिक लेखापरीक्षण, अभिभावक भेलाजस्ता कानुनी प्रावधान हुँदाहुँदै पनि अधिकांश सरकारी विद्यालयहरूले त्यसको मूलमर्म अनुसार कार्यान्वयन नगरेको अवस्थामा रहेको छ । यसै विषयवस्तुलाई केन्द्रबिन्दुमा राखेर यसको पुष्टिका लागि विभिन्न तथ्याङ्कहरू लगायत अन्य चुनौती जस्तै: दिर्घकालीन सोचको अभाव, अस्पष्ट नीति र कार्यान्वयनमा समस्या, फितलो अनुगमन प्रणाली, राजनीतिक हस्तक्षेप, शिक्षामा दोहोरो नीति, शैक्षिक व्यवस्थापनमा अन्यौलता आदिलाई विशेष जोड दिइएको छ । साथै समस्या समाधानका केही विकल्पहरूका बारेमा समेत चर्चा गरी सरोकारवालाहरूलाई सुसुचित गर्ने प्रयास गरिएको छ

चुनौती र अवसरहरू:

नेपाल सङ्घीय संरचनामा गएको ५ वर्ष वित्तिसक्दा पनि हालसम्म शिक्षा क्षेत्रमा अन्यौलता छरपष्ट हुनुले शैक्षिक सुधारमा विभिन्न चुनौतीहरू रहेको प्रष्टै देखिन्छ । दिने र लिनेका बिचको खाडल देखिने, शैक्षिक अनियमितता वा पारदर्शिताको कमी (पुस्तक छपाई, वितरण, शुल्क, पीसीएफ, सामाजिक लेखापरीक्षण, पुरस्कार र दण्डको व्यवस्था), गैरजिम्मेवार शिक्षक (छल्ने प्रवृत्ति, वृत्ति विकासको अभाव, सेवा सुविधाको न्यूनता, राजनैतिक आवद्धता, तालिमको कमी), अस्थायी, करार र आंशिकलगायतका धेरैथरी शिक्षक-कर्मचारी, जीवनोपयोगी, उत्पादनसँग जोड्ने तथा प्राविधिक शिक्षाको अभाव, विद्यालय व्यवस्थापन समिति तथा शिक्षक अभिभावक सङ्घ गठनमा राजनीतिकरण-दलीयकरण, पर्याप्त भौतिक सेवा सुविधाको कमी (कम्प्युटर ल्याव, विज्ञान ल्याव, पुस्तकालय, खेल मैदान आदि), जसमा शिक्षासम्बन्धी स्पष्ट कानुनको व्यवस्था गर्नु, शिक्षा शाखामा आवश्यकता अनुसार दरबन्दीको व्यवस्थापन गर्नु, नागरिक बडापत्र राख्ने तथा गुनासो सुनुवाइ संयन्त्रको विकास गर्नु, शिक्षा शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरूको क्षमता विकासका कार्यक्रमहरू सञ्चालन हुन नसक्नु तथा संविधानले व्यवस्था गरेबमोजिम तीनवटै सरकारका बिच

सहसम्बन्ध,समन्वय र सहकार्य कायम गर्न नसक्नु जस्ता चुनौतीहरू शिक्षा सम्बन्धी संस्थागत संरचना र क्षमता विकासका क्षेत्रमा देखिएका विद्यमान चुनौतीहरू हुन । यसैगरी यि चुनौतीहरूसँग केहि अवसरहरू पनि यस क्षेत्रमा देखापरेका छन् । जसमा स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ कार्यान्वयनमा आउनु,विद्यालय शिक्षालाई स्थानीय तहको अधिकार क्षेत्रभित्र राख्नु, स्थानीय तहको आफ्नै शिक्षा ऐन तथा नियमावली निर्माण हुनु, गाउँपालिकामा शिक्षाका कार्यक्रम हेर्ने गरी छुट्टै शाखाको व्यवस्थापन हुनु, गाउँपालिका देखि विद्यालय तहसम्म विभिन्न समितिहरूको व्यवस्था हुनु, शिक्षा शाखामा स्थायी दरबन्दिको व्यवस्थापन हुनु आदिलाई शिक्षा सम्बन्धी संस्थागत संरचना र क्षमता विकासका क्षेत्रमा देखिएका अवसरहरू मान्न सकिन्छ

६.१.३ लक्ष्

शिक्षाको शासकीय प्रबन्धलाई सुदृढ र गुणस्तरीय बनाई नतिजामुखी शिक्षा व्यवस्थापनको प्रबर्द्धन गर्ने,

६.१.४ उद्देश्य

- क) स्थानीय तहको अधिकार क्षेत्र अनुसार शिक्षा क्षेत्रको संस्थागत संरचना बनाउनु,
- ख) सङ्घ,प्रदेश र स्थानीय सरकारबिचको अन्तरसम्बन्धलाई सुदृढ र बलियो बनाउनु,
- ग) शैक्षिक प्रशासन सम्बन्धी सम्बन्धी गुणस्तरको कमजोर नतिजालाई सम्बोधन गर्न आवश्यकता अनुसारको जनशक्ति व्यवस्थापन गर्नु,
- घ) कार्यसम्पादन स्तरमा सुधार गर्दै उपलब्ध जनशक्तिलाई नतिजाप्रति उत्तरदायी र जवाफदेही बनाउनु,
- ङ) आवश्यकता र परिवेश अनुकूल कार्यरत जनशक्ति र संस्थाको क्षमता अभिवृद्धि गर्नु

६.१.५ रणनीतिहरू

- क) शिक्षाको व्यवस्थापनलाई प्रभावकारी बनाउन आवश्यक नीति, योजना तथा कानून निर्माण गर्ने,
- ख) विद्यमान संस्थागत संरचना अनुसार आवश्यक जनशक्तिको व्यवस्थापन गर्ने,
- ग) शिक्षा,युवा तथा खेलकुद शाखामा कार्यरत जनशक्तिहरूको क्षमता विकास गर्ने,

- घ) पालिकास्तरमा गठित शिक्षक पेसागत सहयोग प्रणालीलाई थप प्रभावकारी बनाउने
- ङ) वि.व्य.स. अध्यक्ष तथा प्रधानाध्यापकसँग करार सम्झौता गरी कार्यसम्पादनमा जिम्मेवार बनाउने ,
- च) विद्यालय शिक्षासँग सम्बन्धी सम्बन्धित वि.व्य.सं., शि.अ.सं तथा प्रधानाध्यापकहरूको क्षमता विकास गर्ने,
- छ) सङ्घ, प्रदेश र स्थानीय सरकारका बिच सहसम्बन्ध , सहकार्य र समन्वयको सिद्धान्त अनुसार कार्य गर्ने परिपाटी सुरु गर्ने,

#### ६.१.६ उपलब्धि तथा प्रमुख नतिजा

उपलब्धि:

- क) शिक्षाका सबै क्षेत्रमा सुशासन प्रबर्द्धन भई बालबालिकाको सिकाइ प्रति उत्तरदायी हुने प्रणालीको विकास भएको हुने
- ख) शिक्षामा स्रोतको दिगो व्यवस्थापन भई शैक्षिक पहुँच, समता, गुणस्तर र क्षमता विकासमा उल्लेख्य प्रगति भएको हुने,
- ग) वित्तीय व्यवस्थापन क्षमतामा सुधार भई वित्तीय कार्यकुशलता, पारदर्शिता, जिम्मेवारी र उत्तरदायित्व सुदृढ हुने

#### ६.२ स्थानीय शिक्षा योजना कार्यान्वयनको

मानिसको जीवनमा जसरी भौतिक शरिरको सुरक्षा र विकासको लागि वा बाँच्नको लागि हावा, पानी, अन्न, कपडा, आवास आवश्यक पर्छ त्यसै गरी व्यक्तित्व विकास र मानसिक स्वास्थ्यको लागि शिक्षा अपरिहार्य हुन्छ । मानिस र पशु छुट्याउने आधार नै शिक्षा हो । शिक्षाले नैतिकता, सदाचारिता, दया, करुणा सिर्जना गर्दछ । यसले मानिसको कल्याण, सुख र सम्बृद्धिका लागि आधार प्रदान गर्दछ । समानता, न्याय र नैतिकतामा आधारित कल्याणकारी राज्य एवम् समतामूलक समाजको सिर्जना गर्न शिक्षा बिना संभव छैन । नागरिकको नजिकमा, नागरिकको वरिपरि, नागरिकले सुन्न, देख्न र महशुस गर्न पाउने सरकार नै स्थानीय सरकार हो । जहाँ जनता छन् त्यहीं उनीहरूका समस्या सुन्न र जस्ताको तस्तै बुझ्न सकिन्छ । समस्याको सही

समाधान पनि यहींबाट गर्न सकिन्छ भन्ने मान्यताबाट स्थानीय सरकार निर्माण भएको हुन्छ । अर्थात जुन तहको सरकारले जुन काम सबभन्दा कुशल ढङ्गले निर्वाह गर्न सक्छ त्यो काम त्यही तहको सरकारलाई दिनुपर्छ भन्ने सैद्धान्तिक मान्यतामा स्थानीय सरकारलाई अधिकारहरू सुम्पिएका छन् । निर्वाचित जनप्रतिनिधिहरू मार्फत सरकारको सबैभन्दा तल्लो, सबैभन्दा नजिकको सरकार स्थानीय सरकार भएकोले यसको विशेष महत्व र खास भूमिका रहेको छ । स्थानीय सरकार अथवा गाउँपालिका र नगरपालिकाहरूले शिक्षा क्षेत्रमा अवलम्बन गर्ने व्यवस्थापकीय शैली जसले शिक्षा क्षेत्रमा गुणात्मक सुधार सम्भव बनाउँछ । सुशासन नागरिकको भलो हुने गरी सरकार र यसका अङ्गहरूले गर्ने व्यवहार हो । सुशासनमा मात्र नागरिक हितका लागि नागरिकप्रति सरकार समर्पित हुन्छ । उत्तर दायी, जिम्मेवार र पारदर्शी ढङ्गले काम गर्छ । नागरिक हित हुने कुरामा उनीहरूको अभिमत लिई कानून बमोजिम शासन व्यवस्था सञ्चालन भएको हुन्छ । पछाडि परेको वर्ग, क्षेत्र र लिङ्गको समन्यायिक विकासमा ध्यान दिन्छ भने शैक्षिक सुशासनले शिक्षा क्षेत्रको समग्र व्यवस्थापनमा सुशासनका अवयवहरूको अवलम्बन नै शैक्षिक सुशासन हो । यसमा शिक्षाको गुणस्तर सिर्जना गर्न शिक्षा प्रशासक, अविभावक, शिक्षक, विद्यार्थी र अन्य सरोकारवालाहरुबिच सिर्जनात्मक सहकार्य गरिन्छ ।

यसै सन्दर्भमा नेपालको सङ्घीय संरचनाले पनि स्थानीय सरकारलाई शासनको एक अभिन्न र अपरिहार्य तहको रूपमा स्थापित गरेको छ । संबैधानिक र कानूनी रूपमा बहुआयामिक अधिकार र भूमिका किटान भएको छ । नेपालको संविधानले शिक्षा सम्बन्धी हकलाई मौलिक हकको रूपमा प्रत्याभूत गरेको छ । राज्यका निर्देशक सिद्धान्तमा शिक्षालाई नागरिकको आधारभूत आवश्यकताको रूपमा वर्गीकरण गरी सबै नागरिकलाई शिक्षाको अवसर उपलब्ध गराउनु राज्यको दायित्व रहेको उल्लेख गरिएको छ । नेपालको संविधानको अनुसूचि ८ अन्तर्गत स्थानीय तहको अधिकारको सूचिमा आधारभूत र माध्यामिक शिक्षा व्यवस्थापनको अधिकार स्थानीय सरकारलाई सुम्पिएको छ । यसैगरी स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ मा शिक्षा सम्बन्धी अधिकारको व्यवस्था गरिएको छ । यी अधिकार र कर्तव्यको कार्यान्वयन गर्दै शिक्षा प्रणालीलाई आर्थिक सामाजिक रूपान्तरणको माध्यमको रूपमा विकास गर्नु परेको छ । सबै तहमा सबै वर्ग क्षेत्रको समतामूलक पहुँचको सुनिश्चिता अपरिहार्य भएको छ । शैक्षिक गुणस्तरमा सुधार गरी रोजगारमूलक र आयमूलक जीवन उपयोगी बनाउनु परेको छ । शैक्षिक क्षेत्रमा व्यवस्थापकीय क्षमता अभिवृद्धि गर्दै आर्थिक सामाजिक विकासका राष्ट्रिय लक्ष्यहरूका

साथै दिगो विकासको विश्वव्यापी लक्ष्य हासिल गर्ने दिशातर्फ स्थानीय सरकार उन्मुख भएको छ जसलाई यस दश वर्षे शिक्षा योजनाले मार्ग प्रशस्त गर्ने भएकाले यस योजना कार्यान्वयको प्रवन्ध स्थानिय नियकालाई दिएको छ र सोही मुल्यमान्यतामा यस पचालझरना गाउँपालिकाको दश वर्षे शिक्षा योजना निर्माण गरिएको छ ।

#### ६.२.१ वर्तमान अवस्था

सन् २०३० सम्मका लागी विश्वव्यापी रूपमा तय गरिएका दिगो विकासका १७ लक्ष्यहरूमा लक्ष्य ४ गुणस्तरिय शिक्षामा केन्द्रित छ । लक्ष्य ४ विशेष गरी समावेशी र समतामूलक गुणस्तरिय शिक्षाको पहुच सुनिश्चित गर्ने र जीवन पर्यन्त शिक्षाका अवसर उपलब्ध गराउने उल्लेख गरेको छ । यो लक्ष्य हासिल गर्न विभिन्न प्रयासहरू भएतापनि उचित प्रतिफल देखा परेका छैन । शिक्षालाई यस रूपमा बुझ्न र सो अनुरूपको व्यवहार गर्न विद्यालय सुशासनमा सबै पक्षको न्यूनतम रूपमा भए पनि साझा धारणा बनाउनु आवश्यक हुन्छ, साझा सोच र प्रयास आवश्यक हुन्छ । यसका लागि विद्यालय सुशासनमा नयाँ नयाँ संरचना बनाउने भन्दा पनि भएका संरचना र संयन्त्रमा सुधार गर्नु आवश्यक हुन्छ । यिनीहरूको क्षमता विकासमा जोड दिनुपर्छ । असहमतिका बिचमा सहमती खोजेर अगाडि बढ्नुपर्ने अवस्था छ । सुशासनमा न्यूनतम साझा धारणा तय गरी अगाडि बढ्न उपयुक्त हुने देखिन्छ । अबका दिनमा विद्यालय गभर्नेन्स कुनै एक कर्ताको एकल निर्णयबाट नभई बहुसहभागितामा आधारित भई साझा मतका आधारमा सन्चालन हुनु आवश्यक हुन्छ, जसलाई थेइसेन्स (२०१६) ले भनेका छन् जहाँ औपचारिक एवम् अनौपचारिक सञ्जाल दुबैले काम गर्न सक्छन् । यसमा राष्ट्रिय ढाँचा चाहिन्छ । विद्यालय गभर्नेन्सको सन्दर्भमा सरकारका प्रतिनि निर्णयकर्ताका रूपमा भन्दा पनि एउटा कर्ताको रूपमा मात्र रहनु उपयुक्त हुन्छ । विद्यालय सुशासनमा सरोकारवालाहरूको सामूहिक र वैयक्तिक जवाफदेहिताले अत्यन्त महत्व राख्दछ (स्मिथ, २०१६) । यस्तो जवाफदेहिता विद्यार्थीको सिकाइ उपलब्धिमा मात्र हेर्ने पद्धति रहेको छ । विद्यार्थीको सिकाइ उपलब्धि बढाउने नाममा पाठ्यक्रमका अन्य अपेक्षा छाँडायमा पर्ने हो कि भन्ने चिन्तालाई पनि स्वभाविक मान्नुपर्ने हुन्छ । किनकी यस्तो उपलब्धिमापन शिक्षकबाट तयार गरिएका औजारका आधारमा हुने गर्दछ जसको सकारात्मक प्रभाव मात्र छैनन् । विद्यार्थीको सिकाइ उपलब्धिमा सुधार ल्याउन तर्जुमा गर्नुपर्ने नीति निर्माणमा पनि सबैको सहभागिता आवश्यक हुन्छ ।

सरोकारवालाहरूको व्यवहार र अभ्यासमा पनि परिवर्तन चाहिन्छ । सुधारका लागि सबैले दबाब महसुस गरेको हुनुपर्छ । विद्यालयमा जवाफदेहिता सबैले पालना गरेको हुनुपर्छ (हुग, २०१६) जुन विद्यालयको असल शासनमा अर्को महत्वपूर्ण पक्षको रूपमा रहेको हुन्छ । यस्तो जवाफदेहिता सामान्यतया समतलीय (Horizontal) र ठाडो (Vertical) हुन्छ भन्ने गरिन्छ । ठाडो (Vertical) अन्तर्गत Regular School Accountability (जहाँ नियम कानूनको परिपालना र सो को प्रतिवेदन माथिल्लो निकायमा पठाउने विषय पर्छ) र School Performance accountability (जसमा विद्यालयको समग्र पक्षको मूल्याङ्कन पर्छ) जस्ता विषयहरू पर्दछन् । यसैगरी समतलीय जवाफदेहिता (Horizontal Accountability) अन्तर्गत Professional School Accountability/ Multiple School accountability पर्दछ । पहिलो अन्तर्गत विद्यालयका शिक्षक र अन्यका लागि पेसागत मापदण्ड पर्दछन् भने दोश्रो अन्तर्गत विद्यालयका समग्र गतिविधीहरू पर्छन् जहाँ सबै सरोकारवालाहरूको संलग्नता, सहकार्य र समन्वय आवश्यक हुन्छ । सबै कर्ताहरूको जवाफदेहिता सुनिश्चित गर्न उनीहरूलाई कानूनतः कामको अवसर पनि दिनुपर्छ । अधिकार र काम दिनु भनेको सरोकारवालाहरूलाई खेलका लागि मैदान उपलब्ध गराउनु पनि हो । अधिकार दिएपछि सो पूरा गर्ने अपेक्षा राख्नु स्वभाविकै हुन्छ र अन्तमा, सुशासनको अवधारणा समयसँग बदलिँदै गएको छ । शुरुमा यो शासन गर्ने पक्षसँग सम्बन्धी सम्बन्धित थियो । अहिले आएर सार्वजनिक सेवा र सुविधाको सुनिश्चितता गर्ने कार्यसँग सम्बन्धी सम्बन्धित गरिएको छ । कम शासन हुनुपर्छ भन्न थालिएको छ । सुक्ष्म ढङ्गबाट विश्लेषण गर्ने हो भने विगतमा जे जस्तो भए तापनि अहिले सरकार एकलैले मुलुकको शासन सन्चालन गर्ने अधिकार प्राप्त गरेको हुँदैन । न्यायालय, संसद, कार्यपालिकाका साथमा विभिन्न संवैधानिक निकायहरू एवम् अन्य पक्षहरूको संयुक्तरूप नै समग्रतामा मुलुकको सुशासन हो । यसले सन्तुलन र नियन्त्रणको सिद्धान्तमा आधारित भई शासन गर्नका लागि आवश्यक अधिकार बाँडफाँड गरेको हुन्छ । विद्यालय एउटा सार्वजनिक निकाय हो । यसले प्रदान गर्नुपर्ने सेवा सुविधाको सहज र प्रभावकारी ढङ्गबाट प्रवाह हुने व्यवस्था सुनिश्चित गर्नका लागि विभिन्न संरचना र संयन्त्र बनाइएका छन् । यीनै संरचना र संयन्त्र मिलेर विद्यालयको सुशासन हुन उपयुक्त हुन्छ । अहिलेको सन्दर्भमा विद्यालय सुशासन एकल निकाय वा पदाधिकारीबाट हुन सम्भव छैन । आन्तरिक र बाह्य सरोकारवालाहरूको संयुक्त सहभागिता र साझा अवधारणबाट विद्यालय सुशासन हुनु उपयुक्त हुने देखिन्छ । तसर्थ नेपालको सन्दर्भमा विद्यालय सुशासन सम्बन्धी सम्पूर्ण अधिकार न त स्थानीय

सरकारमा रहेको छ, न विद्यालय व्यवस्थापन समितिमा छ । यसको अलावा विद्यालय सुशासनको अधिकार त स्थानीय सरकार, विद्यालय व्यवस्थापन समिति, प्रधानाध्यापक, शिक्षक तथा अभिभावकको संयुक्त रूपमा रहेको हुन्छ ।

तसर्थ, यस योजना पचालझरना गाँउपालिका शिक्षा क्षेत्रको आवश्यकता, अवसर र सम्भावनाको आकलन गरी बनाइएको हुदा यस गाउँपालिकाको शैक्षिक गतिविधिलाई व्यवस्थित गर्ने आधारमात्रको रूपमा हेरिएको छ । यसको प्रभावकारी कार्यान्वयनको लागी सम्पूर्ण सरोकारवालाहरूको एकीकृत प्रयासको आवश्यकता पर्दछ । पालिकाभित्रको विशिष्ट परिवेश सापेक्ष शिक्षा नीति निर्माण गरी सोही अनुरूप पको रणनीति र कार्यनीति तयार गरिएको हुदा यस पालिकाको शिक्षा क्षेत्रको विकासमा यो उपयोगी दस्तावेज हनु सक्छ । विगतमा सञ्चालित शिक्षा क्षेत्रमा कार्यक्रमहरूले शिक्षाको पहुँच र सहभागीता समेट्न नसकेको अवस्थामा समावेशी शिक्षाको विश्वव्यापी मान्यतालाई मध्यनजर गरी यो शिक्षा क्षेत्र योजना तर्जुमा गरि कार्यान्वयन गर्न लागीएको हो । यस योजनासाँग सम्बन्धी सम्बन्धित सम्पूर्ण पक्षहरूको समावेशी सहभागीता सुनिश्चित गरी कार्यपालिकाको कुनै एक सदस्यको संयोजकत्वमा स्थानीय शिक्षा योजना कार्यान्वयन तथा समन्वय समिती गठनगरिनेछ । उक्त समितीको सदस्य-सचिवमा पालिकाको शिक्षा शाखा प्रमुख लाई तोकिने छ । साथै यो शिक्षा क्षेत्र योजनाको कार्यान्वयनको जिम्मेवारी मुख्यरूपमा यही समितिले गर्नेछ । यो समितीको कार्य निम्न बमोजिम हुनेछ ।

- शिक्षा क्षेत्र योजना तर्जुमामा नेतृत्वदायी भूमिका निर्वाह गर्ने,
- शिक्षा क्षेत्र योजना अन्तरगत तर्जुमा गरिएका नीति तथा रणनीतिहरू कार्यपालिका मार्फत सभाबाट पारित गराउने र कार्यान्वयनका लागी बजेटको सुनिश्चितता गर्ने,
- शिक्षा क्षेत्र योजनालाई आवश्यकता अनुरूप बार्षिक रूपमा अध्यावधिक गर्ने गराउने,
- यो शिक्षा क्षेत्र योजना अन्तरगतका कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्ने गराउने,
- स्थानीय सरकार र अन्य सङ्घ-संस्थाबाट पालिका क्षेत्रभित्र सञ्चालन हुने शिक्षा क्षेत्रका कार्यक्रमहरू बिच समन्वय गर्नेगराउने,
- समित सूचकमा आधारित भई शिक्षा क्षेत्र अन्तरगतका कार्यक्रमकोअनगुमन गर्ने,
- कार्यक्रमको गुणस्तर सुनिश्चित गर्न नियमित रूपमा कार्यक्रमकोअनगुमन र समीक्षा गर्ने
- अन्य सहयोगी निकार्यहरूबिच समन्वय गर्ने,

- शिक्षा अन्तरगतका गाउँपालिका क्षेत्र सम्बन्धी सम्बन्धी अध्ययन, अन्वेषण गर्नेगराउने, र अन्य आवश्यक कार्यहरू गर्ने, गराउने,

### ६.२.२ उद्देश्य

- स्थानीय तहमा सञ्चालन हुने शैक्षिक कार्यक्रम कार्यान्वयनमा समन्वय र सहकार्यलाई सुदृढिकरण गरी योजनालाई प्रभावकारी बनाउन सरोकारवालाहरूलाई सुसूचित गर्नु ।
- यो गाउँपालिका शिक्षा क्षेत्र योजना अन्तरगतका स्वीकृत कार्यक्रम कार्यान्वयनबाट बालबालिकामा न्यूनतम सिकाइ सुनिश्चित गर्न समग्र विद्यालय शिक्षाको पहुँच, गुणस्तर तथा सान्दर्भिकता अभिवृद्धीको लागी आवश्यक सहजीकरण गर्नु
- शिक्षा क्षेत्र योजनाका उप-क्षेत्र अन्तरगत तर्जुमा गरिएका कार्यक्रमको कार्यान्वयनमा एकरूपता कार्यम गर्न प्रभावकारी शैक्षिक व्यवस्थापन गर्न मदत पुर्यउनु,
- वार्षिक कार्यक्रम तर्जुमा तथा कार्यान्वयनमा प्रभावकारीता अभिवृद्धी गर्न सम्बन्धी सम्बन्धित तह /निकायको भूमिका स्पष्ट गरी अपेक्ष नतिजा हासिल गर्न जिम्मेवार र जवाफदेही बनाउनु
- वार्षिक कार्यक्रमकार्यान्वयन र स्रोत परिचालन एवम् प्रतिवेदन पद्धतिलाई दिशानिर्देशन गर्नु / गराउनु

### ६.२.३ रणनीतिहरू

- नीति तर्जुमा आधाररत अनगुमन प्रणालीको माध्यमबाट कार्यक्रमको प्रभावकारी कार्यान्वयन गरी शिक्षित नतिजा सुनिश्चित गर्न नीति निर्देशन तथा समन्वय गर्ने,
- सङ्घीय तथा प्रदेश तहबाट वित्तिय हस्तान्तरण मार्फत प्राप्त सर्शत अनुदान तथा अन्य अनुदान र आफ्नै स्रोतको बजेटसमेत संलग्न गरी वार्षिक शिक्षा बजेट तथा कार्यक्रमतयार गर्ने,
- कार्यक्रम कार्यान्वयनका लागी आवश्यकतानुसार कानुन, कार्यविधि तथा निर्देशिका विकास गर्ने,
- एकीकृत शैक्षिक सूचना व्यवस्थापन मार्फत नियमित रूपमा कार्यक्रम कार्यान्वयन तथा त्यसका नतिजाहरूको विवरण तयार गर्ने, त्यसको समीक्षा गरी थप सुधारमा प्रयोग गर्ने,
- विद्यालयमा विद्यालय व्यवस्थापन समिती र शिक्षक अभिभावक सङ्घ गठनगर्नेर विद्यालयलाई विद्यालय सुधार योजना विकास र कार्यान्वयनमा सहजीकरण गर्ने,
- विद्यालय सुधार योजना (SIP) निर्माण तथा अध्यावधिक गर्ने,

- विद्यालय व्यवस्थापन सशक्तिकृत र सुदृढ गरी निर्धारित कार्यक्रम कार्यान्वयनका लागी प्राध्यानाध्यापकलाई जिम्मेवारी प्रदान गरी उत्तरदायी बनाउने ।
  - वित्तीय व्यवस्थापन, खरिद प्रक्रिया, शिक्षक व्यवस्थापन तथा शिक्षकको कक्षा कोठामा समय तथा कार्यको सुनिश्चितता सम्बन्धी सम्बन्धी आवश्यक मापदण्ड तयार गरी लागु गर्ने,
  - अभिभावक तथा सरोकारवालाहरूसँग अन्तरक्रिया तथा सहकार्य गर्न अभिभावक भेला तथा बैठकहरू आयोजना गर्ने र सामाजिक परिक्षणलाई प्रभावकारी बनाउने ।
  - समुदायिक सिकाइ केन्द्र मार्फत सबैउमेर समूहका सिकारुहरूका लागी साक्षरता, साक्षरोत्तर, निरन्तर शिक्षा, बैकल्पिक शिक्षा तथा आय आर्जन र सिप विकासका कार्यक्रमरू सञ्चालन गर्दै आजीवन सिकाइ केन्द्रका रूपमा समेत कार्य गर्न
- ६.२.४ प्रमुख उपलब्धि तथा नतिजा
- उपलब्धि
- शिक्षा योजनाको प्रभावकारी कार्यान्वयनको सुनिश्चित भएको हुने छ ।
- नतिजा तथा परिमाणात्मक लक्ष्य

| क्र. स. | प्रमुख नतिजा  | आधार वर्ष २०८१ | २०८२ | २०८३ | २०८४ | २०८५ |
|---------|---|----------------|------|------|------|------|
| १       | प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षा, आधारभूत शिक्षा, अभिभावक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, खुला तथा बैकल्पिक निरन्तर सिकाइ, सामुदायिक सिकाइ र विशेष शिक्षा सम्बन्धी नीति कानुन, मापदण्ड, योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन, अनुगमन, मूल्याङ्कन र नियमन, | १              | १    | १    | १    | १    |
| १२      | आधारभूत शिक्षामा सबैको पहुँच स्थापित गर्न विभिन्न प्रोत्साहनमूलक कार्यक्रमहरू जस्तो: दिवा खाजा, छात्रवृत्तिजस्ता कार्यक्रमहरू सञ्चालन   | १              | १    | १    | १    | १    |
| ३       | दुर्गम, हिमाली तथा अति पीछडिएका क्षेत्र, वर्ग एवम् अपाङ्गता भएका बालबालिका समेतका लागि आवासीय विद्यालयहरू सञ्चालन   | ०              | ०    | १    | ०    | ०    |

|    |  |   |   |   |   |   |
|----|--|---|---|---|---|---|
| ४  | निःशुल्क पाठ्यपुस्तक समयमै उपलब्ध गराउने   | १ | १ | १ | १ | १ |
| ५  | बालबालिकामा न्यूनतम सिकाइ सुनिश्चित गर्न समग्र विद्यालय शिक्षाको पहुँच, गुणस्तर तथा सान्दर्भिकता अभिवृद्धीको लागी आवश्यक सहजीकरण गर्ने, ।  | १ | १ | १ | १ | १ |
| ६  | बार्षिक कार्यक्रमतर्जुमा तथा कार्यान्वयनमा प्रभावकारीता अभिवृद्धी गर्न सम्बन्धी सम्बन्धित तह /निकायको भूमिका स्पष्ट गर्ने  | १ | १ | १ | १ | १ |
| ७  | गुणस्तरीय शिक्षाको विकासका लागि शिक्षक तालिम,न्यूनतम सिकाइ वातावरण निर्माण, विद्यालयको भौतिक पूर्वाधार निर्माण, शिक्षक दरबन्दी मिलान, मातृभाषामा शिक्षा, बालमैत्री सिकाइ, प्रविधिको प्रयोग, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन पद्धतिमा सुधार गर्ने | १ | १ | १ | १ | १ |
| ८  | माध्यमिक शिक्षा अन्तर्गत निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण, विभिन्न छात्रवृत्तिहरु वितरण, आवासीय विद्यालय तथा घुम्ती विद्यालय सञ्चालन   | १ | १ | १ | १ | १ |
| ९  | नमूना विद्यालयको विकास, प्रधानाध्यापकको छुट्टै दरबन्दी व्यवस्था, शिक्षक तालिम, विज्ञान प्रयोगशाला, पुस्तकालय, दूर शिक्षा कार्यक्रम, स्वयंसेवक परिचालन जस्ता कार्यक्रमहरु सञ्चालन   | १ | १ | १ | १ | १ |
| १० | अनौपचारिक शिक्षा अन्तर्गत सामुदायिक अध्ययन केन्द्रमार्फत साक्षरता कार्यक्रम सञ्चालन गरी गाउँपालिकालाई साक्षर घोषणा गर्ने कार्यक्रम सञ्चालन   | १ | १ | १ | १ | १ |
| ११ | सामुदायिक विद्यालयलाई दिने अनुदान तथा सोको बजेट व्वस्थापन तथा विद्यालयको आय व्ययको वित्तीय अनुशासन कायम राख्नका लागि निरन्तर   | १ | १ | १ | १ | १ |

|  |   |  |  |  |  |  |
|--|---|--|--|--|--|--|
|  | अनुगमन, सुपरीवेक्षण एवम् नियमन निरन्तर रूपमा<br>गर्नु |  |  |  |  |  |
|--|---|--|--|--|--|--|

६.२.५ प्रमुख क्रियाकलाप र परिमाणत्मक लक्ष्य

| क्र स | क्रियाकलाप तथा प्रमुख कार्यक्रम  | ढङ्ग     | लक्ष्य | परिमाणात्मक लक्ष्य ५ वर्षमा |      |      |      |      | ज म्मा | भौतिक लक्ष्य १० वर्ष |
|-------|--|----------|--------|-----------------------------|------|------|------|------|--------|----------------------|
|       |  |          |        | २०८१                        | २०८२ | २०८३ | २०८४ | २०८५ |        |                      |
| १     | शिक्षा सम्बन्धी नीति कानून, निर्देशिका, कार्यविधि, मापदण्ड, निर्देशिका तथा कार्यविधि, योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन, अनुगमन, मूल्याङ्कन र नियमन,                        | पटक      | ५      | १                           | १    | १    | १    | १    | ५      | निरन्तर              |
| २     | निर्दिष्ट सूचकहरु तयार गरी आफ्नो क्षेत्रभित्रका उत्कृष्ट प्रअ, शिक्षक, विद्यालय व्यवस्थापन समिति र विद्यालयसमेतलाई पुरस्कृत गर्ने                                    | पटक      | ५      | १                           | १    | १    | १    | १    | ५      | निरन्तर              |
| ३     | पुराना शिक्षकलाई नयाँ पाठ्यक्रम अनुरूप समायोजन गराउन तालिम र क्षमता विकासका कार्यक्रमहरु निरन्तर रूपमा सञ्चालन   | पटक      | १५     | ३                           | ३    | ३    | ३    | ३    | १५     | निरन्तर              |
| ४     | सबै विद्यालयमा विद्यालय व्यवस्थापन समिति र शिक्षक अभिभावक सँगको सहाकार्यबाट विद्यालय सुधार योजना (SIP) निर्माण तथा अध्यावधिक भई र कार्यान्वयनमा सहजीकरण भएको हुनेछ । | विद्यालय | २५     | २५                          | २५   | २५   | २५   | २५   | २५     | निरन्तर              |

|    |  |          |    |    |    |    |    |    |    |         |
|----|--|----------|----|----|----|----|----|----|----|---------|
| ५  | सामुदायिक र निजी विद्यालयमा देखिएको लैङ्गिक असमानता कम गर्न स्थानीय सरकारले जनचेतनामूलक कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने ,  | पटक      | २५ | १  | १  | १  | १  | १  | २५ | निरन्तर |
| ६  | उपलब्ध शिक्षा क्षेत्रगत कानून निर्देशिका मापदण्डको छर्पाई तथा प्रबोधिकरण   | पटक      | ५  | १  | १  | १  | १  | १  | ५  | निरन्तर |
| ७  | लगानीको लागी स्थानीय गैससहरूसँग साझेदारी तथा समन्वय  | पटक      | ५  | १  | १  | १  | १  | १  | ५  | निरन्तर |
| ८  | एकिकृत शैक्षिक सूचना प्रणाली सुदृढिकरण   | विद्यालय | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | निरन्तर |
| ९  | सम्बद्ध सबैसंस्थाहरूको लागी सामाजिक परिक्षण  | पटक      | ५  | १  | १  | १  | १  | १  | ५  | निरन्तर |
| १० | अभिभावक तथा सरोकारवालाहरूसँग अन्तरक्रिया तथा सहकार्य गर्न अभिभावक भेला तथा बैठकहरू आयोजना  | पटक      | ५  | १  | १  | १  | १  | १  | ५  | निरन्तर |
| ११ | समुदायिक सिकाइ केन्द्र मार्फत सबै उमेर समूहका सिकारूहरूका लागी साक्षरता, साक्षरोत्तर, निरन्तर शिक्षा, बैकल्पिक शिक्षा तथा आय आर्जन र सिप विकासका कार्यक्रम हरू सञ्चालन गर्ने | पटक      | १० | २  | २  | २  | २  | २  | १० | निरन्तर |

|    |   |          |    |    |    |    |    |    |    |         |
|----|---|----------|----|----|----|----|----|----|----|---------|
| १२ | शिक्षाका सबै निकाय तथा विद्यालयमा सुशासन प्रबर्द्धनलागि भई सिकाइ प्रति उत्तरदायी प्रणालीको विकास गर्ने ,  | विद्यालय | २५ | १० | ५  | ५  | ५  | १० | २५ | निरन्तर |
| १३ | घोक्ने भन्दा सोच्ने, शिक्षण भन्दा सिकाइ, पाठ्यपुस्तक भन्दा सन्दर्भ सामग्री, एकल भन्दा सामुहिक, कक्षाकोठा भन्दा कक्षा बाहिर, विचारलाई स्विकार गर्ने भन्दा आलोचना गर्ने, लेक्चर भन्दा छलफल जस्ता अभ्यासहरुमा विद्यालयका कृयाकलापहरु केन्द्रित गर्ने | विद्यालय | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | निरन्तर |
| १४ | विद्यालयको पारदर्शिता र सूचना प्रणालीलाई प्रभावकारी बनाउन परमपरागत अभ्यासलाई कार्यान्वयन गर्ने जस्तै ; कटुवाल प्रथा, चोहो प्रणालि (तामाङ्ग), रोधि आदी   | विद्यालय | २५ | १० | ५  | ५  | ५  | २५ | २५ | निरन्तर |
| १५ | कार्यक्रम, शैक्षणिक क्रियाकलाप, आर्थिक गतिविधिजस्ता आम समुदायका सरोकारका विषयहरुलाई यस्ता रैथाने कार्यक्रमहरु मार्फत सार्वजनिक गरी सरोकारवालाहरुलाई सूचना प्रदान गर्ने र पारदर्शिता कायम गर्ने प्रणालीको विकास गर्ने                              | विद्यालय | २५ | १० | ५  | ५  | ५  | २५ | २५ | निरन्तर |

## परिच्छेद ७

### लगानी र स्रोत व्यवस्थापन

#### ७.१ परिचय

बालबालिकालाई भविष्यको कर्णधार भन्ने गरिन्छ । अहिलेका बालबालिकामा गरिएको लगानीले हाम्रो भावी समाजको विकासको परिकल्पना गर्न सकिन्छ । समुन्नत राष्ट्र उन्नत समाज निर्माणका लागि हरेक देशका सरकारहरू समुदाय अभिभावकहरूले बालबालिकाको शिक्षाको क्षेत्रमा लगानी गर्ने गरेका हुन्छन् । गुणस्तरीय मानव संसाधनको विकास गर्न शिक्षाको क्षेत्रमा प्राथमिकताका साथ लगानी गर्न आवश्यक हुन्छ । बालबालिकाको शिक्षामा गरिने लगानीले व्यक्ति समाज र राष्ट्रको दीर्घकालीन विकासका साथै दीर्घकालीन सोचलाई पूरा गर्न मद्दत गर्दछ । नेपालको संविधान २०७२ ले मौलिक हकको रूपमा स्थापित गरेको छ । उक्त मौलिक हकको कार्यान्वयनका सन्दर्भमा नेपाल सरकारले अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा ऐन २०७५ जारी गरेको र उक्त ऐनको कार्यान्वयनका लागि अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा सम्बन्धी सम्बन्धी नियमावली २०७७ स्वीकृत गरेको अवस्थामा विद्यालय शिक्षामा समतामूलक पहुँच सहितको गुणस्तरीय शिक्षा प्रदान गर्नु हरेक सरकारको दायित्व रहन्छ । यसका लागि आवश्यक स्रोतहरूको खोजी, क्रियाकलापहरूको प्राथमिकीकरण , उपलब्ध स्रोतहरूको उचित विनियोजन तथा प्रभावकारी कार्यान्वयन , अनुगमन र मूल्याङ्कन जस्ता कुराहरूको व्यवस्थापन गर्नु पर्दछ ।

विद्यालय शिक्षा सञ्चालनका लागि संविधानमा भएको व्यवस्था बमोजिम हरेक स्थानीय तहहरूले शिक्षाका साझा सूचीमा भएका विषयहरूको कार्यान्वयनका सन्दर्भमा हरेक स्थानीय तहहरूको मुख्य जिम्मेवारी रहेको भएता पनि शिक्षाका लागि वित्तीय व्यवस्थापन सङ्घ, प्रदेश र स्थानीय तहका साथै समुदाय र निजी क्षेत्रका साझेदार निकायहरू संयुक्त लगानी आवश्यक हुन्छ । सबै नागरिकहरूलाई आधारभूत तह निःशुल्क र अनिवार्य तथा माध्यमिक तह निःशुल्क उपलब्ध गराउने संवैधानिक प्रावधान रहेसँग सङ्घीय सरकार तथा प्रदेश सरकारले सर्सत अनुदान, समपुरक अनुदान तथा वित्तीय समानीकरण अनुदानका रूपमा स्थानीय तहमा वित्त हस्तान्तरण गर्दै आएका छन् । त्यसरी हस्तान्तरण भई आएका अनुदानहरूलाई स्थानीय तहले शिक्षक कर्मचारी व्यवस्थापन, भौतिक पूर्वाधार निर्माण, निःशुल्क छात्रवृत्ति, निःशुल्क पाठ्यपुस्तक, विद्यालय व्यवस्थापन तथा सञ्चालन तथा शैक्षिक गुणस्तर सुधारका क्षेत्रमा खर्च गर्ने गरेका छन् । आधारभूत तथा माध्यमिक शिक्षा, प्रारम्भिक बालविकास शिक्षा, खुला शिक्षा, दुर शिक्षा, विशेष शिक्षा, सामुदायिक सिकाइ केन्द्रहरूका अतिरिक्त औपचारिक संरचना बाहिरका टिउसन कोचिड सेन्टरहरूको नीति, योजना र समग्र व्यवस्थापनको जिम्मेवारी स्थानीय सरकारको रहने गरी स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ ले २३ वटा अधिकारहरूको विस्तृतीकरण गरेको पाइन्छ । कार्यक्षेत्रभित्रका शैक्षिक संस्थाहरूलाई अनुदान उपलब्ध गराउने, लेखापरीक्षण र वित्तीय सुशासन कायम गर्ने दायित्व पालिकाको कार्यक्षेत्रमा रहेकोले सीमित स्रोत साधनलाई मितव्येही, नियमित, प्रभावकारी र पारदर्शी ढङ्गले व्यवस्थापन गर्नुपर्नेछ । वित्तीय व्यवस्थापन अन्तर्गत दुईवटा पक्षहरूलाई समेटिएको छ । एकातर्फ योजना कार्यान्वयनको लागि आवश्यक पर्ने वित्तीय स्रोतको आँकलन, प्राप्ति र उपयोगलाई समेटिएको छ भने प्रदेश तथा सङ्घीय सरकारबाट प्राप्त विभिन्न प्रकारका अनुदानहरूलाई विद्यालयहरूमा पुर्याई तोकिएबमोजिम खर्च, पारदर्शिता बढाउदै समग्र पक्षमा वित्तीय अनुशासन कायम गर्नुपर्नेछ

## ७.२.वर्तमान अवस्था

शिक्षालाई विकासका पूर्वाधारहरूको पनि पूर्वाधारका रूपमा लिइन्छ । शिक्षाको समयसापेक्ष जुन गतिमा विकास हुनुपर्ने हो त्यसो हुन सकेको छैन । विभिन्न प्रतिवेदनहरूले कूल बजेटको २० प्रतिशत बजेट शिक्षामा विनियोजन गरिएता पनि सो अनुपातमा पुग्न सकेको छैन । यथार्थताको नजिक रहेर योजना बनाएर सोबमोजिम बजेट विनियोजन गर्ने नभई हचुवाको भरमा बजेट विनियोजन गर्ने कार्यले प्रश्रय पाएको छ । समुदायको विद्यालयमा लगानी गर्नुपर्छ भन्ने सोचमा गिरावट आएको छ । संविधानमा शिक्षालाई लगानीमैत्री बनाउने र लगानी बढाउदै लजाने नीति उल्लेख गरिएको छ । विश्वव्यापी रूपमा दिगो विकासका लक्ष्यहरू हासिल गर्न कूल बजेटको कम्तिमा २० प्रतिशत रकम शिक्षा क्षेत्रमा विनियोजन गर्ने विश्वव्यापी प्रतिवद्धता रहेता पनि शिक्षा क्षेत्रको बजेट क्रमश घट्टदै गइरहेको पाइन्छ । सशर्त अनुदानको रूपमा प्राप्त हुने केन्द्रिय अनुदानको ९५ प्रतिशत भन्दा बढि रकम शिक्षक तलव भत्ता, छात्रवृत्ति, भौतिक पूर्वाधार, दिवाखाजा र पाठ्यपुस्तक जस्ता शिर्षकहरूमा खर्च हुने गरेको छ । गुणस्तर अभिवृद्धि र क्षमता विकासका लागि स्थानीय सरकारका कार्यक्रमहरू केन्द्रित रहेका छन् । विद्यार्थी सङ्ख्याका आधारमा एकाई लागत विश्लेषण गर्दा अभिभावकको प्रत्यक्ष लागनीका अतिरिक्त पालिका क्षेत्रमा अध्ययनरत विद्यार्थीको प्रतिविद्यार्थी लागत ३३६८४ हजार रहेको छ ।

गाउँ शिक्षा योजना कार्यान्वयनको वित्तीय व्यवस्थापनका मुख्य स्रोत सङ्घीय, प्रदेश र स्थानीय सरकार रहनेछन् भने अभिभावक र समुदायको भूमिका परिपूरकको रूपमा रहनेछ । यस योजनाको कार्यान्वयनका लागि स्रोतको आँकलन तपसिल बमोजिम गरिएको छ ।

| क्र.स. | वित्तीय श्रोतको व्यवस्थापन | कूल बजेट     | जम्मा हिस्साको प्रतिशत | कैफियत               |
|--------|----------------------------|--------------|------------------------|----------------------|
| १      | सङ्घीय सरकार               | १४,७६,६३,००० | ९४.२०%                 | मुख्य बजेट हिस्सा    |
| २      | प्रदेश सरकार               | ५१,००,०००    | ३.२५%                  | भौतिक पूर्वाधार तर्फ |
| ३      | स्थानीय सरकार              | ४०,००,०००    | २.५५%                  | गाउँपालिका स्रोत     |

|   |                                     |              |         |                            |
|---|-------------------------------------|--------------|---------|----------------------------|
| ४ | अभिभावक तथा समुदाय                  | ०.००         | ०.००    | जनश्रमदान                  |
| ५ | सङ्घ संस्था तथा दातृनिकाय           | ०.००         | ०.००    | गैर-सरकारी संस्था          |
| ६ | स्थानीय दाता तथा अन्य श्रोत परिचालन | ०.००         | ०.००    | अन्य                       |
| ७ | अपुग रकम                            | ०.००         | ०.००    | सन्तुलित बजेटसन्तुलित बजेट |
|   | जम्मा                               | १५,६७,६३,००० | १००.००% |                            |

नोट : शिक्षा क्षेत्रको कुल बजेटमा ९४.२०% हिस्सा सङ्घीय सरकारको सशर्त अनुदानबाट प्राप्त भएको छ, जसमा ठूलो रकम शिक्षक तथा विद्यालय कर्मचारीहरूको पारिश्रमिक र दिवा खाजामा खर्च हुन्छ।

उपलब्धि:

- शिक्षामा स्रोतको दिगो व्यवस्थापन भई शैक्षिक पहुँच, समता, गुणस्तर र क्षमता विकासमा उल्लेख्य प्रगति भएको हुने,
- वित्तीय व्यवस्थापन क्षमतामा सुधार भई वित्तीय कार्यकुशलता, पारदर्शिता, जिम्मेवारी र उत्तरदायित्व सुदृढ हुने ।

प्रमुख नतिजा:

- विद्यालय शिक्षाका कार्यक्रमहरूको कार्यान्वयनका लागि उपलब्ध हुने स्रोतको अनुमान र विश्लेषण हुने
- विभिन्न स्रोत र निकायबाट प्राप्त बजेटको प्राथमिकताक्रम निर्धारण गरिएका क्षेत्रमा लगानी हुने
- लगानी भएको बजेटका आधारमा विद्यालय शिक्षाको गुणस्तर सुधार भएको हुने
- शिक्षा क्षेत्रमा कूल बजेटको २०% रकम विनियोजन भएको हुने

- वित्तीय कार्यकुशलता, पारदर्शिता, जिम्मेवारी र उत्तरदायित्व सुदृढ हुने
- विभिन्न साझेदार निकायहरूसँग साझेदारी गरिएको हुने

प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य:

- सङ्घीय सरकारबाट शिक्षा क्षेत्र योजना अन्तर्गतका क्रियाकलापमा प्राप्त हुने अनुमानित बजेटको खाका,
- प्रदेश सरकारबाट शिक्षा क्षेत्र योजना अन्तर्गतका क्रियाकलापमा प्राप्त हुने अनुमानित बजेटको खाका,
- स्थानीय तहबाट शिक्षा क्षेत्र योजना अन्तर्गतका क्रियाकलापमा प्राप्त हुने अनुमानित बजेटको खाका ।

### ७.३ उद्देश्य

- क) वार्षिक बजेट तथा कार्यक्रम तयारी र कार्यान्वयन गर्नु,
- ख) एकीकृत शैक्षिक सूचना व्यवस्थापन प्रणाली मार्फत नियमित रूपमा कार्यक्रम कार्यान्वयनका नतिजाहरूको विवरण तयार, समीक्षा र सुधार गर्नु,
- ग) नतिजामा आधारित अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणाली अवलम्बन गर्नु ।

### ७.४ रणनीतिहरू

- क) एकीकृत शैक्षिक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन मार्गदर्शन निर्माण र उपयोग गर्ने,
- ख) अनुगमन, मूल्याङ्कन र प्रतिवेदन कार्यलाई छिटो, छरितो, व्यवस्थित र प्रभावकारी बनाउन प्रविधिको प्रयोग गर्ने,
- ग) शैक्षिक सूचना व्यवस्थापन प्रणालीलाई थप सुदृढीकरण गर्ने,
- घ) राष्ट्रिय सूचकको अतिरिक्त आवश्यकता अनुसार स्थानीय सूचकहरूलाई समेत सूचना प्रणालीमा आवद्ध गर्ने,

- ड) योजनाका आगत (Input), प्रक्रिया (Process), परिणाम (Output), उपलब्धि (Outcome) र प्रभाव (Impact) समेतको अनुगमन तथा मूल्याङ्कनका लागि संरचना र जनशक्तिको प्रबन्ध गर्ने,
- च) प्रमाणमा आधारित अनुगमन, मूल्याङ्कन तथा प्रतिवेदन प्रणालीको विकास गर्ने,
- छ) अनुगमन तथा मूल्याङ्कनबाट प्राप्त पृष्ठपोषणलाई उपयोग गर्ने,
- ज) कुल बजेटको निश्चित हिस्सा अनुगमन तथा मूल्याङ्कनमा छुट्याई नतिजा मूलक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीको अवलम्बन गर्ने,
- झ) सहभागिता मूलक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीको कार्यान्वयन गर्ने,
- ञ) कक्षाकोठाको सिकाइको अनुगमन, सुपरिवेक्षण तथा मूल्याङ्कनलाई प्रभावपूर्ण बनाउन कार्यस्थलमा आधारित अनुगमन, मूल्याङ्कन, सुपरिवेक्षण एव प्रतिवेदन प्रणालीको प्रबन्ध गर्ने,

### ७.५ विद्यालय शिक्षा क्षेत्रगत उपक्षेत्र र अन्तरसम्बन्धित विषय क्षेत्र अन्तर्गतका क्रियाकलापहरूको बजेट विवरण

| स | शिक्षाका उप-क्षेत्रहरू       | भौतिक लक्ष्य (५ वर्ष) प्रति इकाइ लागत (रु. हजारमा) |         |         |         |         | जम्मा | श्रोत आँकलन |        |            |
|---|------------------------------|--|---------|---------|---------|---------|-------|-------------|--------|------------|
|   |                              | २०२३/२४  | २०२४/२५ | २०२५/२६ | २०२६/२७ | २०२७/२८ |       | संघ         | प्रदेश | स्थानीय तह |
| १ | प्रारम्भिक बालविकास र शिक्षा | ३४९०   | ३५९०    | ३६९०    | ३७९०    | ३८९०    | १४९६० |             |        | १८४५०      |
| २ | आधारभूत शिक्षा               | ७५००   | ७६००    | ७७००    | ७८००    | ७९००    | ३८५०० |             |        | ३८५००      |

|    |  |      |      |      |      |      |       |  |  |       |
|----|--|------|------|------|------|------|-------|--|--|-------|
| ३  | माध्यमिक शिक्षा                        | ४६४० | ४७४० | ४८४० | ४९४० | ५०४० | १९५६० |  |  | २४२०० |
| ४  | अनौपचारिक शिक्षा तथा आजीवन सिकाइ       | ५००  | ५००  | ५००  | ५००  | ५००  | २०००  |  |  | २५००  |
| ५  | पाठ्यक्रम तथा मूल्याङ्कन               | ६००  | ६००  | ६००  | ६००  | ६००  | २४००  |  |  | ३०००  |
| ६  | शिक्षक व्यवस्थापन र विकास              | ५५०  | ५५०  | ५५०  | ५५०  | ५५०  | २२००  |  |  | २७५०  |
| ७  | समता र समावेशीकरण                      | २००  | ३००  | ४००  | ५००  | ६००  | १८००  |  |  | ४७५०  |
| ८  | अन्तरसम्बन्धित विषय क्षेत्र            | १००  | १००  | १००  | १००  | १००  | ४००   |  |  | ५००   |
| ९  | शिक्षामा सूचना तथा सञ्चार प्रविधि      | १५०० | १५०० | १५०० | १५०० | १५०० | ६०००  |  |  | ७५००  |
| १० | विद्यालय भौतिक पूर्वाधार विकास         | २५०० | २५०० | २५०० | २५०० | २५०० | १०००० |  |  | १०००० |
| ११ | आपतकालीन तथा संकटपुर्ण अवस्थामा शिक्षा | २००  | २००  | २००  | २००  | २००  | ८००   |  |  | १०००  |
| १२ | विद्यालय सुरक्षा                       | २००  | २००  | २००  | २००  | २००  | ८००   |  |  | १०००  |
| १३ | संस्थात क्षमता विकास                   | १५०  | १५०  | १५०  | १५०  | १५०  | ६००   |  |  | ७५०   |
| १३ | शिक्षा योजना कार्यान्वयनको प्रबन्ध     | १५०  | १५०  | १५०  | १५०  | १५०  | ७५०   |  |  | ७५०   |

|              |   |       |       |       |       |       |     |        |        |
|--------------|---|-------|-------|-------|-------|-------|-----|--------|--------|
| १४           | योजना कार्यान्वयन अनुगमन तथा मूल्यङ्कन समन्वय र सहजीकरण | १५०   | १५०   | १५०   | १५०   | १५०   | ६०० |        | ७५०    |
| <b>जम्मा</b> |   | २२४३० | २२८३० | २३२३० | २३६३० | २४०३० |     | ११६१५० | ११६१५० |

#### ७.६ योजनाको बार्षिक बजेट तर्जुमा प्रक्रिया

पचालझरना गाउँपालिकाले बार्षिक रूपमा योजना तर्जुमा गर्ने प्रकृया बमोजिम नै शिक्षा क्षेत्रको बार्षिक कार्यक्रम तथा बजेट तयार गर्ने प्रकृया अबलम्बन गर्नेछ । यसका लागि सङ्घ तथा प्रदेश र स्थानीय तहको बजेट अनुमान र सिलिङ्गका आधारमा कार्यक्रमहरू तय गरी अन्य सरोकारवालाहरू सँग पनि स्रोत खोजी गरी कार्यक्रम तय गर्ने र सेही बजोमिम बार्षिक योजनामा रहेका क्रियाकलापहरूलाई समावेश गर्दै कार्यान्वयन गिरनेछ ।

#### ७.७ योजना कार्यान्वयनको लागि बार्षिक रणनीति कार्यान्वयन योजना निर्माण तथा कार्यान्वयन

बजेट तथा कार्यक्रम कार्यान्वयनको लागि बार्षिक रणनीति कार्यान्वयन योजना निर्माण गरिनेछ । यसका लागि बार्षिक रूपमा प्राप्त बजेट तथा कार्यक्रमलाई प्राथमिकता अनुसार स्रोत सुनिश्चित भए सोही बर्ष र नभए प्राथमिकताका आधारमा बजेट कार्यान्वयन रणनीति तय गरी कार्यान्वयन गर्ने र बजेटको प्रभावकारी कार्यान्वयन गरिनेछ ।

## परिच्छेद ८ :

### ८.१ अनुगमन तथा मूल्याङ्कन

#### ८.१.१ परिचय

नेपालमा योजनाबद्ध विकास प्रयासको सुरु अवस्था सँग विकास आयोजनाको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गर्ने परिपाटी बसेको पाइन्छ । आ.व. २०३२/०३३ देखि विकास आयोजनाहरूको कार्यान्वयनको मूल्याङ्कन गर्ने व्यवस्थाको सुरुवात भयो । आठौँ योजना २०४९/०५४ देखि अनुगमन तथा मूल्याङ्कन को एउटा पद्धतिको रूपमा मजबुत गर्ने कार्य गरियो । यस योजनामा विगतका अनुगमन तथा मूल्याङ्कन सम्बन्धी व्यवस्थामा देखिएका कमीकमजोरीहरूमा सुधार गरी संस्थागत व्यवस्था, उच्च राजनैतिक तहको प्रतिबद्धता र उपलब्धि मूल्याङ्कनको व्यवस्थासहितको बलियो अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणाली लागु गरियो । अनुगमन भन्नाले कुनैपनि कार्यक्रम कार्यान्वयनका लागि विशेषतः शैक्षिक योजना तथा कार्यक्रमहरू के कति रूपमा भए त्यसको लक्षित प्रतिफल योजना अनुरूप ठीक सँग भइरहेका छन् वा छैनन् भनी कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्ने प्रत्येक तहको व्यवस्थापनद्वारा निरन्तर र अद्यावधिक गरी निगरानी राख्ने कार्य हो । मूल्याङ्कन भन्नाले कुनै शैक्षिक कार्यक्रमको निर्धारित उद्देश्यको सन्दर्भमा त्यसका कार्यहरू कति सान्दर्भिक, सक्षम, लाभदायक र प्रभावकारी देखिएका छन् भन्नेबारे व्यवस्थित रूपबाट मापन गरी लेखाजेखा गर्ने कार्य हो । यहाँ भन्न खोजिएको तथ्य अनुगमन तथा मूल्याङ्कन को मुख्य उद्देश्य गाँउशिक्षा योजना र विद्यालय क्षेत्र विकास कार्यक्रमले किटान गरेका प्रत्येक सेवा प्रवाह का तहका लक्ष्य तथा उद्देश्य अनुरूपका उपलब्धिहरू पत्ता लगाई ती सूचकका आधारमा निर्णय प्रक्रियालाई सहयोग गरी प्रवाह सुधार गर्नु हो । विद्यालयमा पठनपाठनको अवस्था, नियमित मूल्याङ्कन, अनुगमन, आवश्यकता अनुसारको अध्ययन अध्यापनमा ध्यान दिने हो भने सामुदायिक विद्यालय सुधार हुन धेरै समय लाग्दैन । निश्चित समयभन्दा पनि समयसिमाभिन्न आ आफ्ना जिम्मेवारीहरू इमान्दार र उत्कृष्ट ढङ्गले पुरा गर्न सक्यौं भने धेरै सुधार हुन्छ । पढाउने शिक्षकले पढाईदिदा, विद्यालय प्रशासन सम्हाल्नेले प्रशासनलाई चुस्त दुरुस्त राख्ने, नयाँ योजना र कार्यक्रमलाई प्रभावकारी बनाएर अगाडी बढाउने, सामुहिकतामा विश्वास गरेर व्यक्तिगत प्रदर्शनलाई ध्यान दिनु अहिलेको मुख्य आवश्यकता हो ।

## ८.१.२ वर्तमान अवस्था

विद्यार्थी मूल्याङ्कन निर्माणात्मक र निर्णयात्मक मूल्याङ्कन दुईओटा प्रयोजनका लागि गरिन्छ । पहिलो थप सिकाइकालागि सिकारुको स्थिति पहिचान गरी उपचारात्मक सेवा प्रदान गर्न र दोस्रो सिकारुले सिकेका कुराहरुको आधारमा स्तरीकरण गरी उसको बारेमा निर्णय गर्न एवम् प्रमाणपत्र प्रदान गर्न निरन्तर मूल्याङ्कन पनि निर्माणात्मक मूल्याङ्कन कै एक रूप हो । यो सिकाइका लागि मूल्याङ्कन हो । विद्यार्थीहरु सिकाइ एकै बेला के कति सिके भनेर लेखाजोखा गरी आगामी दिनमा के कस्तो उपायहरु अवलम्बन गरी थप सिकाइका लागि सहजीकरण गर्ने भन्ने कुरामा निरन्तर मूल्याङ्कन प्रणाली केन्द्रित हुने हुनाले उपचारात्मक शिक्षणका लागि सिकारुको अवस्था पहिचान गर्न तथा सिकेको कुराको तत्काल लेखाजोखा गर्न नै निरन्तर मूल्याङ्कन प्रणाली अवलम्बन गरिएको हो । निरन्तर मूल्याङ्कनलाई उदार कक्षोन्नतिसँग गाँसेर ल्याइनु, जटिल प्रकृतिका साधनहरुको प्रयोग गर्नुपर्ने हुनु, सरोकार वालाबाट अवरोध खडा हुनु, शिक्षण सिकाइ क्रियाकलापको सुधारको कुरै नगरी मूल्याङ्कन प्रणालीमा मात्र एकांकी ढङ्गले सुधार गर्न खोजिनु, पाठ्यक्रम कार्यान्वयनमा फित्तलोपना रहनु, अनुगमन तथा सुपरिवेक्षण प्रणाली कमजोर हुनु जस्ता कारणहरुले निरन्तर मूल्याङ्कन प्रणालीको कार्यान्वयनमा अपेक्षित सफलता प्राप्त हुन नसकेको देखिन्छ । निरन्तर मूल्याङ्कन प्रणालीको कार्यान्वयनका लागि समष्टिगत दृष्टिकोणबाट निर्देशित भई अघि बढ्नुपर्छ । पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक र शिक्षक निर्देशिकामा सुधार गरी निरन्तर मूल्याङ्कनका मापदण्डमैत्री बनाइनुपर्छ । शिक्षण सिकाइ क्रियाकलापमा परिवर्तनपछि मात्र मापदण्ड अनुसार निरन्तर मूल्याङ्कन गर्न सकिन्छ भन्ने कुरा सबैले बुझ्नुपर्छ । नत्र भने विद्यार्थीलाई परियोजना कार्य नगराउने तर परियोजना कार्यकै मूल्याङ्कन गर्ने कित्ते मूल्याङ्कनलाई विस्थापन गर्न सकिने सम्भावना देखिदैन । सरोकारवालाहरुमा भएको भ्रम निवारण गरी परीक्षा लिनै नपाइने होइन बरु बराबर परीक्षा एवम् अवलोकनबाट वास्तविक सिकाइको लेखाजोखा गरी थप उपचारात्मक कार्यशैलीका माध्यमबाट विद्यार्थीको सिक्न पाउने अधिकार सुनिश्चित गर्ने कुरामा स्पष्ट पार्नुपर्छ । शिक्षकहरु सकारात्मक सोच लिई यसको कार्यान्वयनबाट आफै लाई सजिलो हुने विश्वासका साथ दृढ संकल्पित भई लाग्नुपर्छ ।

यस पचालझरना गाउँपालिकामा शिक्षा क्षेत्र प्रभावकारी, गुणस्तर कायम र समुदायिक विद्यालय अकर्षण बढाउनका लागि शिक्षा ऐन, नियम अनुसार कार्य भए नभएको लेखाजोख गर्ने, लक्ष्य तथा उद्देश्यका आधारमा प्रगति मापन गर्ने र क्षेत्रगत उद्देश्य तथा लक्ष्यमा भएको रणनीति तथा नीतिगत प्रवाहको मूल्याङ्कन गर्ने कार्यहरू नियमित रूपमा भैरहेका छन् । सबै तहको सेवा व्यवस्थापन तथा सेवा प्रवाहका लागि वित्तीय व्यवस्थापकीय र प्राविधिक पक्षको अनुगमन लेखाजोखा तथा मूल्याङ्कन गरिने छ । पालिका शिक्षा योजनाको प्रचार प्रसार गर्न सरोकारवालाहरूलाई भेला गराई, सुचना तथा प्रविधिको अन्य माध्यमबाट जानकारी गराउने गरेको छ । योजनाको कार्यान्वयनको क्रममा आवश्यक सहयोग तथा सहकार्यको लागि पालिका तथा सम्बन्धित वडाहरूले यस योजनासँग सम्बन्धित तह तथा निकायहरूसँग आवश्यक प्रत्यक्ष भेटघाट वा पत्राचार गर्ने गरेको छ । योजनाको कार्यान्वयनको क्रममा पालिका वडाहरू, सम्बन्धित समिति तथा उपसमितिहरूको बैठक कार्यतालिका वा आवश्यकता अनुसार बस्नेछ । शिक्षा क्षेत्रका योजना, कार्यक्रम र विभिन्न क्रियाकलाप थप प्रभावकारी बनाउन अनुगमन तथा मूल्याङ्कन समिति रहेको छ । यस पालिकाको शिक्षा योजना सरोकारवालाहरूलाई जानकारी गराइ सो कार्यान्वयन भएनभएको सम्बन्धित निकायबाट अनुगमन गरिनेछ । अनुगमन प्रकृया तपशिल बमोजिम हुनेछ ।

| क्र.स. | अनुगमन गर्ने निकाय  | अनुगमन प्रकृया                                      | जिम्मेवारी                                     | अनुगमन समय | अनुगमन सूचक                    |
|--------|---------------------|---|--|------------|--------------------------------|
| १      | वडा शिक्षा समिति    | अलवोकन ,<br>निरक्षण ,<br>सुपरिवेक्षण ,<br>प्रतिवेदन | संयोजक तथा सदस्य                               | मासिक      | आगन्तुक पुस्तिका ,             |
| २      | पालिका शिक्षा समिति |   | संयोजक तथा सदस्य                               | मासिक      | विद्यालय अनुगमन                |
| ३      | वडा कार्यालय        |   | अध्यक्ष तथा पदाधिकारी                          | मासिक      | फाराम ,<br>कक्षाकोठा           |
| ४      | पालिका              |   | अध्यक्ष ,<br>पदाधिकारी र<br>तोकिएका<br>अधिकारी | त्रैमासिक  | अनुगमन<br>फाराम ,<br>प्रतिवेदन |

|    |                                       |                                     |         |
|----|---------------------------------------|-------------------------------------|---------|
| ५  | शिक्षा विकास तथा समन्वय ढङ्ग          | ईकाइ प्रमुख                         |         |
| ६  | जिल्ला समन्वय समिति                   | प्रमुख तथा पदाधिकारी                | वार्षिक |
| ७  | शिक्षा अधिकृत वा तोकिएको अधिकारी      | शिक्षा ,युवा तथा खेलकूद शाखा प्रमुख | मासिक   |
| ८  | गाउँपालिका शिक्षा शाखा                | शिक्षा ,युवा तथा खेलकूद शाखा प्रमुख | मासिक   |
| ९  | शिक्षा तथा मानव श्रोत विकास केन्द्र   | तोकिएको अधिकारी                     | वार्षिक |
| १० | प्रदेश शिक्षा विकास निर्देशनालय       |                                     | वार्षिक |
| ११ | गाउँपालिकाका विज्ञ समूह               | शाखा प्रमुख                         | मासिक   |
| १२ | वि व्य स र शिक्षक अभिभावक सङ्घ        | पदाधिकारी                           | निरन्तर |
| १३ | नागरिक समाज तथा गैर सरकारी सङ्घसंस्था |                                     | मासिक   |

गाउँ शिक्षा योजनाको प्रचार प्रसार गर्न सरोकारवालाहरूलाई भेला गराइ, सूचना तथा प्रविधिको अन्य माध्यमबाट जानकारी गराइनेछ । योजनाको कार्यान्वयनको क्रममा आवश्यक सहयोग तथा सहकार्यको लागि गाउँपालिका तथा सम्बन्धित वडाहरूले यस योजनासँग सम्बन्धित तह तथा निकायहरूसँग आवश्यक प्रत्यक्ष भेटघाट वा पत्राचार गर्नेछ । योजनाको कार्यान्वयनको क्रममा गाउँपालिका वडाहरू, सम्बन्धित समिति तथा उपसमितिहरूको बैठक कार्यतालिका वा आवश्यकता अनुसार बस्नेछ ।

## ८.२ उद्देश्य

- वार्षिक शिक्षा बजेट तथा कार्यक्रम आवश्यकता र योजनाबद्ध तरिकाले तयारी र कार्यान्वयन गर्नु,
- आवश्यकता अनुसार कानून, मापदण्ड र निर्देशिका विकास तथा स्थानीय तहका शिक्षा शाखा तथा महाशाखाहरूको क्षमता विकास गर्नु,

- एकीकृत शैक्षिक सूचना व्यवस्थापन प्रणाली मार्फत नियमित रूपमा कार्यक्रम कार्यान्वयनका नतिजाहरूको विवरण तयार, समीक्षा, सुधार गर्नु,
- शिक्षण सिकाइमा आवश्यक सहयोग तथा अनुभव आदान प्रदानका लागि आवश्यक व्यावस्था मिलाउनु,
- विद्यालय तथा सामुदायिक अध्ययन केन्द्रहरूले योजना बनाई शैक्षिक कार्यक्रमहरू सञ्चालन तथा प्रभावकारी तथा कुशल अनुगमन प्रणाली विकास गर्नु
- नतिजामा आधारित अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणाली बनाउनु
- योजना कार्यान्वयनका चरणमा आएका समस्या तथा चुनौतीहरूलाई समयमै सम्बोधन गरी अपेक्षित उपलब्धि हासिल गर्नु
- योजनाको लगानीदेखि प्रभाव तहसम्मको मूल्याङ्कन गरी आवश्यकतामा आधारित योजना निर्माणमा सहयोग गर्नु

### ८.३ रणनीतिहरू

- व्यावस्थित बजेट विनियोजनका लागि अनुगमन, मूल्याङ्कन र अनुसन्धान बाट प्राप्त नतिजाका आधारमा बितरण र कूल बजेटको निश्चित हिस्सा अनुगमन तथा मूल्याङ्कनमा छुट्याई नतिजामूलक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीको अवलम्बन गरिने,
- एकीकृत शैक्षिक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन मार्गदर्शन निर्माण र उपयोग र अनुगमन, मूल्याङ्कन र प्रतिवेदन कार्यलाई छिटो, छरितो, व्यवस्थित र प्रभावकारी बनाउन प्रविधिको प्रयोग गरिने छ
- शिक्षण सिकाइमा आवश्यक सहयोग तथा अनुभव आदान प्रदानका लागि स्थानीय स्तरमा शिक्षक तथा विज्ञ समूह सम्मिलित शिक्षक सहायता प्रणाली विकास तथा सञ्चालन गर्ने,
- राष्ट्रिय सूचकको अतिरिक्त आवश्यकताअनुसार स्थानीय सूचकहरूलाई समेत सूचना प्रणालीमा आवद्ध गरिने,
- योजनाका निर्माण देखि सञ्चालन प्रक्रिया, परिणाम, उपलब्धि र प्रभावको अनुगमन तथा मूल्याङ्कनका लागि संरचना र जनशक्तिको प्रबन्ध गरिने,
- व्यवस्थित र प्रमाणमा आधारित अनुगमन, मूल्याङ्कन तथा प्रतिवेदन प्रणालीको विकास गरिने,
- अनुगमन तथा मूल्याङ्कनबाट प्राप्त पृष्ठपोषण, सिकाइका र असल अभ्यास लाई अन्य विद्यालय वा कार्यक्षेत्रमा कार्यान्वयन गरिने,

- सहभागितामूलक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीको कार्यान्वयन गरिने,
- कक्षाकोठाको सिकाइको अनुगमन, सुपरिवेक्षण तथा मूल्याङ्कनलाई प्रभावपूर्ण बनाउन कार्यस्थलमा आधारित अनुगमन, मूल्याङ्कन, सुपरिवेक्षण एवम् प्रतिवेदन प्रणालीको प्रबन्ध गरिने,
- अनुगमन का क्रममा उत्कृष्ट विद्यालय ,शिक्षक र कर्मचारी लाई प्रोत्सानका लागपि पुरस्कार र दण्ड प्रणालीको विकास गरिने,

८.४ उपलब्धि, नतिजा, प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य

उपलब्धि तथा नतिजा

- प्रभावकारी अनुगमनको माध्यमबाट योजना कार्यान्वयनका चरणमा आएका समस्या तथा चुनौतीहरूलाई समयमै सम्बोधन भई अपेक्षित उपलब्धि हासिल हुने र योजनाको मूल्याङ्कनमा आधारित भई आवश्यकतामा आधारित योजना निर्माणका लागि पृष्ठपोषण प्राप्त हुनेछ ।
- अनुगमन, मूल्याङ्कन, समन्वय र सहजीकरणका माध्यमले योजनाका चुनौतिहरू समाधान भई अपेक्षित उपलब्धी हासिल हुने छ ।
- अनुगमन र मूल्याङ्कनमा संस्थागत विकास र अनुगमन, मूल्याङ्कन, समन्वय र सहजीकरणका माध्यमले नतिजामा सुधार हुने,
- विद्यार्थीहरूको शैक्षिक उपलब्धी सुधार तथा समन्वय र सहजीकरणले कार्यले शिक्षकको क्षमतामा कुशलता ल्याउने,

८.५ प्रमुख क्रियाकलाप र लक्ष्य:

| क्र. स. | प्रमुख क्रियाकलाप   | इकाई | लक्ष्य | परिमाणात्मक लक्ष्य ५ वर्ष |      |      |      |      |       | भौतिक लक्ष्य १० वर्ष |
|---------|---|------|--------|---------------------------|------|------|------|------|-------|----------------------|
|         |   |      |        | २०८१                      | २०८२ | २०८३ | २०८४ | २०८५ | जम्मा |                      |
| १       | नतिजामा आधारित अनुगमन प्रणालीका लागि सूचकहरू तयार तथा अद्यावधिक गर्ने   | पटक  | ५      | १                         | १    | १    | १    | १    | ५     |                      |
| २       | आफुले कार्यान्वयन गरेका कार्यक्रमहरूको नियमित अनुगमन गर्ने  | पटक  | १५     | २                         | ३    | ३    | ३    | ३    | १४    |                      |
| ३       | कार्यक्रम कार्यान्वयनको चौमासिक तथा वार्षिक समीक्षा तथा प्रतिवेदन   | पटक  | ५      | १                         | १    | १    | १    | १    | ५     |                      |
| ४       | स्थिति प्रतिवेदन तयार गर्ने   | पटक  | ५      | १                         | १    | १    | १    | १    | ५     |                      |
| ५       | विद्यार्थीको सिकाइ उपलब्धी परिक्षण गर्ने  | पटक  | १०     | ०                         | २    | २    | २    | २    | ८     |                      |
| ६       | कक्षा १ देखि ३ सम्मका बालबालिकाको पठन सिप परीक्षणका लागि कक्षाकोठामा आधारित पठन सिप परीक्षण (CB-EGRA) सञ्चालन गर्ने | पटक  | ५      | १                         | १    | १    | १    | १    | ५     |                      |
| ७       | विद्यालयको कार्यसम्पादन मूल्याङ्कन गर्ने,   | पटक  | ५      | १                         | १    | १    | १    | १    | ५     |                      |
| ८       | विद्यालयहरूको सामाजिक परिक्षण   | पटक  | ५      | १                         | १    | १    | १    | १    | ५     |                      |
| ९       | विद्यालयहरूको लेखा परिक्षण  | पटक  | ५      | १                         | १    | १    | १    | १    | ५     |                      |
| १०      | रोष्टर विशेषज्ञहरूको व्यस्थापन र परिचालन  | जना  | ४०     | ०                         | १०   | १०   | १०   | १०   | ४०    |                      |
| ११      | विज्ञ समूह ,विद्यालय निरक्षक तथा शिक्षक सिकाइ समूह,शिक्षा शाखा मार्फत   | पटक  | १५     | ०                         | ३    | ३    | ३    | ३    | १२    |                      |

|        |  |     |    |   |   |   |   |   |    |  |
|--------|--|-----|----|---|---|---|---|---|----|--|
|        | विद्यालय अनुगमन तथा कक्षा सुपरिवेक्षण  |     |    |   |   |   |   |   |    |  |
| १<br>२ | प्रधानाध्यापक तथा आधारभूत तह संयोजकबाट विद्यालय तथा कक्षाकोठा अनुगमन तथा सुपरिवेक्षण र प्रतिवेदन | पटक | ५  | १ | १ | १ | १ | १ | ५  |  |
| १<br>३ | सिकाइमा आधारित मुल्याङ्कन  | पटक | १५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १५ |  |
| १<br>४ | प्रमाणमा आधारित मुल्याङ्कनका लागि अभिलेखिकरण   | पटक | ५  | १ | १ | १ | १ | १ | ५  |  |
| १<br>५ | स्थानीय तहद्वारा विद्यालय तथा कक्षा अनुगमन   | पटक | १  | २ | २ | २ | २ | २ | १० |  |

# अनुसूचीहरू

राज्य मिति २०८२ साल जैष्ठ २० गतेका दिन यस  
प्रशासनिकता गाउँपालिका माथि भएका स्थानीयका पदाधिकारी  
को नियुक्ति रक्तपत्रको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार  
गरी नियुक्ति गरियो।

| क्र.सं. | शिक्षा स्थापतिको नाम  | पद         | सो.नं.     | संस्थापक   |
|---------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १       | देवराज शाही           | अध्यक्ष    | १८४८११६३३३ | विश्वकर्मा |
| २       | बालेन्द्र बस्नेत शाही | सदस्य      |            | विश्वकर्मा |
| ३       | प्रमोद कर्ण           | "          |            | विश्वकर्मा |
| ४       | सुरेश्वर शर्मा        | "          | ५८६८२०५२४  | विश्वकर्मा |
| ५       | विरिन्द्र खत्री       | "          |            | विश्वकर्मा |
| ६       | प्रियंका वि.क.        | "          | ५६६६०६९२२६ | विश्वकर्मा |
| ७       | रतन शर्मा             | "          | ९६६६६७७५५  | विश्वकर्मा |
| ८       | शंकर प्रसाद खत्री     | "          | ९९६६६६६०३  | विश्वकर्मा |
| ९       | निर्मला कर्ण          | "          |            | विश्वकर्मा |
| १०      | सुरेश खत्री           | "          | ९६६६६६६६६  | विश्वकर्मा |
| ११      | शुक्लाल खत्री         | सदस्य-सचिव | ६६६६६६६६६  | विश्वकर्मा |

प्रस्ताव रत्न निर्वाचकः।  
१. सचिवको पदाधिकारीमाथि दस्तावेजको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार गरी नियुक्ति गरियो।

Narayani

Scanned with CamScanner

१. सचिवको पदाधिकारीमाथि दस्तावेजको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार गरी नियुक्ति गरियो।

२. सचिवको पदाधिकारीमाथि दस्तावेजको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार गरी नियुक्ति गरियो।

३. सचिवको पदाधिकारीमाथि दस्तावेजको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार गरी नियुक्ति गरियो।

४. सचिवको पदाधिकारीमाथि दस्तावेजको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार गरी नियुक्ति गरियो।

५. सचिवको पदाधिकारीमाथि दस्तावेजको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार गरी नियुक्ति गरियो।

६. सचिवको पदाधिकारीमाथि दस्तावेजको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार गरी नियुक्ति गरियो।

७. सचिवको पदाधिकारीमाथि दस्तावेजको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार गरी नियुक्ति गरियो।

८. सचिवको पदाधिकारीमाथि दस्तावेजको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार गरी नियुक्ति गरियो।

९. सचिवको पदाधिकारीमाथि दस्तावेजको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार गरी नियुक्ति गरियो।

१०. सचिवको पदाधिकारीमाथि दस्तावेजको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार गरी नियुक्ति गरियो।

११. सचिवको पदाधिकारीमाथि दस्तावेजको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार गरी नियुक्ति गरियो।

१२. सचिवको पदाधिकारीमाथि दस्तावेजको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार गरी नियुक्ति गरियो।

१३. सचिवको पदाधिकारीमाथि दस्तावेजको प्रमाणतामा वैकल्पिक पदाधिकारी तयार गरी नियुक्ति गरियो।

Narayani





## सन्दर्भ सामग्रीहरू

१. नेपालको संविधान, २०७२
२. स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४
३. सोह्रौँ आवधिक योजना, (२०८०/२०८३-२०८५/२०८६)
४. दिगो विकास लक्ष्य, २०१६-२०३०
५. अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा ऐन, २०७५
६. शिक्षा ऐन, २०७६
७. राष्ट्रिय शिक्षा पद्धतिको योजना, २०२८
८. राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप, २०७५
९. सोह्रौँ आवधिक योजना
१०. विद्यालय क्षेत्र विकास योजना २०७३).०७४/२०७७(०७८-
११. शिक्षा क्षेत्रको योजना, २०२१ - २०३०
१२. नेपाल जीवनस्तर मापन सर्वेक्षण, २०८०
१३. आर्थिक सर्वेक्षण २०८०, शिक्षा, विज्ञान तथा सञ्चार मन्त्रालय
१५. शिक्षा तथा मानव स्रोत विकास केन्द्र, फ्ल्यास प्रतिवेदन, २०२४
१६. गाउँपालिकाको इ.एम.आइ.एस.